राजवल्लभनिघण्टुः ।

भाषाटीकायुतः ।

॥ श्रीः ॥

राजवल्लभनिघण्टु ।

पटियाला राज्यान्तर्गत टकसालग्रामनिवासी आयु-
र्वेदोद्धारक वैद्यपञ्चानन पण्डित रामप्रसाद
वैद्योपाध्याय विरचित भाषादी-
पिकानामकी-

भाषाटीकासहित ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रित कर प्रसिद्ध किया ।

चैत्र संवत् १९६८, शके १८३३.



आयुर्वेदोद्धारक, वैद्यपञ्चानन, पं० **रामप्रसाद** वैद्योपाध्याय.

भूमिका।

आयुर्वेद क्या था, आयुर्वेदका कितना मान था, आयुर्वेदके ज्ञाताओंकी क्या व्यवस्था थी, प्राणिमात्रके लिये आयुर्वेद किसप्रकार रक्षाकारक था, आयुर्वेदोक्त वनस्पति कैसा असर दिखाती थी, गरीबसे अमीरतकको आयुर्वेदसे कितना लाभ पहुंचता था, आयुर्वेदोक्त पदार्थोंके जाननेके लिये विद्यार्थी किस प्रेमसे यत्न करतेथे इत्यादि विषय भूमिकामें देने लगें तो भूमिका ग्रंथसेभी बहुत बडी बनजाय और इसको इतिहासोंमें जगह देनीपडे । दूसरे इन बातोंके स्मरण करने मात्रसे चित्तमें खेद उत्पन्न होनेके सिवाय लाभ भी क्या होसकताहै यदि कुछ लाभ होसकताहै तो प्रयास और अभ्यासके विना तो असंभवही है । इसलिये इतना कहदेना आवश्यक प्रतीत होताहै यदि आयुर्वेदके प्रेमी इस शीर्ण जीर्ण आयुर्वेदकी रक्षा करना चाहतेहैं और इसको जीवित रखना चाहतेहैं तो अभ्यास करें, जाननेके लिये कुछ प्रयास करें, फिर आगेको आयुर्वेदके जीवित रहनेकी आशा करें । और याद रक्खें जननीका दूध पुत्रके लिये जितना गुण-कर्ता हो सक्ताहै, भेड बकरी उसकी तुलना कभी नहीं कर सक्ती । कुछ जागो निद्रा त्यागो आपका आयुर्वेद अभी भारतमें है, आयुर्वेदोक्त जडी बूटियोंकी चिकित्सा जननीका प्रेमभरा दूध है, बूटियोंको जाननेसे आपको जननीका दूध मिल सक्ताहै यदि आप इनको पहिचानलेवें तो पैसे लेकर मेडिकल हालमें जानेकी जरूरत नहीं, झूठे सच्चे विज्ञापनोंको देखकर पारसल मंगानेकी जरूरत नहीं, किसीसे ठगाई खानेकी भी जरूरत नहीं, तुम्हारे लिये ऋषियोंके बनाये हुए ग्रंथ, आचार्योंके बनायेहुए ग्रंथ औषधिपरिज्ञान करारहेहैं । यदि आपको संस्कृतमें कठिनाई प्रतीत होतीहै तो भाषासेभी बहुत कुछ लाभ हो सकताहै । यह जो राजवल्लभनिघण्टु श्रीयुक्त वैश्यवंशाऽवतंस सेठ खेमराजजीसे हमें प्राप्त हुआहै यह पुस्तक छोटा होनेपर भी किसी अंशमें गुणसे खाली नहीं, इसको पढने-सेभी औषधिविषयक अच्छा परिज्ञान हो सक्ताहै ।

"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" के अनुसार देहके नीरोग और प्रसन्न रहनेसे ही वर्ण और आश्रमके अनुसार धर्मका निर्वाह होसकताहै । देहका आरोग्य रहना जल वायु अन्न आदिके नियमपूर्वक व्यवहार करने पर निर्भर है । सभी लोग प्रत्येक पदार्थोंके गुण दोषोंको जानते नहीं इसलिये पदार्थतत्त्वज्ञ वैद्यशिरोमणि श्रीराजवल्लभने अपने नामसे इस **राजवल्लभनिघण्टु**को बनायाहै । इस

निघण्टुमें प्रभात, प्राह्ण, मध्याह्न, अपराह्ण, रात्रि और औषध इन नामोंके ६ परिच्छेद दिन और रात्रिके समयका विभाग करके रखेगयेहैं । उनमें पहले परिच्छेदमें प्रातः कालमें उठकर मलमूत्रका त्याग, देहकी शुद्धि, दन्तधावन इत्यादिका विधान है । दूसरे परिच्छेदमें व्यायामके गुण दोष, तेलोंके गुण दोष उनका सेवन, कूआ बावडी नदी आदिके जलोंके गुण दोष, ऋतुओंके कारण जलोंमें परिवर्तन, स्नान पान आदिमें जलसेवन, गन्धादिके धारण करनेके गुण वर्णन कियेगयेहैं । तीसरे परिच्छेदमें भोजनके योग्य अन्न, शाक, फल, फूल, दूध, दही, छाँछ, मक्खन, घी, ऊख, जीरा, सौंफ, इलायची आदि सब प्रकारके मसाले, भोजनके योग्य जिन जिन वस्तुओंकी आवश्यकता पडतीहै उन सबके गुण दोष, भोजनके नियम, पान सुपारी आदि भोजनके पीछे सेवनीय पदार्थ कहेगयेहैं । चतुर्थ परिच्छेदमें भोजन कियेहुए पदार्थोंके भलीभाँति परिपाक होनेके उपाय बतायेगयेहैं । पञ्चम परिच्छेदमें रात्रिचर्या है । कैसी शय्यामें सोना, उत्तम सन्तान होनेके लिये शास्त्रीय सहवास, शयन आदिका विधान है । छठवें परिच्छेदमें नाना प्रकारकी वनस्पतियोंके गुण, वसन्तादि छः ऋतुओंका आहार विहार आदि कहागयाहै । इसप्रकार छः परिच्छेदोंमें यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ है। वैद्यराज राजवल्लभके इस निघण्टुके अनुसार चलनेसे मनुष्य बीमारियोंसे बचकर आयुष्यके लाभको उठा सकतेहैं । मनुष्य प्रायः आहार विहार के नियमोंके उल्लंघन करनेसे ही रोगग्रस्त होतेहैं, यदि पहलेसे ही इसका विचार करके यत्नपूर्वक चलाजाय तो किसी प्रकारका क्लेश नहीं हो सकता ।

इसका अनुवाद करते समय अपनी समझमें हमने सरल और प्रसिद्ध भाषा लिखीहै जिसको पढनेसे सहजमें ही औषध परिज्ञान हो सकताहै यदि मानुषी बुद्धिके कारण या छापेके कारण कुछ त्रुटि रहगई हो तो उसे बुद्धिमान् सुधारनेकी कृपा करें और इस त्रुटिपर ही रंजीदा न होकर असली लक्ष्यकी ओर ध्यान देवें ।

इस राजवल्लभनिघण्टुकी सुगम भाषाटीका बनाकर विद्यारसिक धर्मिरत्नादि अनेक उपाधियुक्त श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीको पुनर्मुद्रण रजिस्टरी आदि सर्वाधिकारोंके साथ मैं अर्पणकरताहूँ ।

भवदीय विनीत सेवक-**रामप्रसाद** वैद्योपाध्याय,

टकसाल.

इलाका-**पटियाला.**

अथ

राजवल्लभनिघण्टुविषयानुक्रमणिका ।

इति राजवल्लभनिघण्टुविषयानुक्रमणिका ।

ज्ञातव्य ।

भाषामें लिखेहुए कठिन शब्दोंका स्पष्ट अर्थ ।

यद्यपि हमने भाषा लिखते समय अपनी समझमें ऐसेही शब्द लिखेहैं जो सर्वसाधारणकी समझमें आ सकें, तथापि कुछ शब्द वैद्यकके ग्रन्थोंकी टीकामें ऐसे लिखे जाते हैं जिनका हरएककी समझमें आना कठिन है । जैसे-बृंहण, व्यवायी, वृष्य, भेदी, स्रंसन, आदि आदि । सो ऐसा विचार कर कठिन २ शब्दोंका स्पष्ट अर्थ (जो सबकी समझमें आसके) लिखतेहैं ।

१ दीपन–जो द्रव्य आमको न पचावै केवल अग्निकोही चैतन्य करे उसे दीपन कहते हैं ।

२ पाचन–जो द्रव्य आमको पचावे किन्तु अग्निको न बढावे उसे पाचन कहतेहैं।

३ दीपनपाचन–जो आमको पचावे तथा अग्निको भी चैतन्य करे उसे दीपनपाचन कहते हैं ।

४ शमन–जो औषधि–वातादि दोषोंकी साम्यावस्था बिगाडै नहीं, और न शोधन करे, किन्तु बढेहुए दोषोंको साम्यावस्थामें करे उसे शमन कहतेहैं।

५ गुरु–जो पदार्थ गरिष्ठ होनेके कारण देरमें पचे उसको गुरु तथा भारी कहतेहैं ।

६ अनुलोमन–जो औषधि वातादि दोषोंको पाक करके बद्ध हुए मलोंको भेदन करके नीचेके मार्गों (गुदा, लिंग) द्वारा निकाले उसे अनुलोमन कहते हैं ।

७ स्रंसन–जो द्रव्य पक्व अथवा अपक्व कोष्ठाश्रित मलको नीचेके भागमें लाकर गुदा द्वारा निकाले उसे स्रंसन कहते हैं ।

८ भेदन–जो औषधि वातादि दोषों करके अबद्ध (न बँधा) अथवा बँधाहुआ या गांठके समान सूखे हुए मलको भेदन करके गुदाद्वारा नीचे गिरावे उसे भेदन कहतेहैं ।

९ रेचन–जो औषध पक्व अथवा अपक्व मलको अथवा वातपित्तादि दोषोंको द्रव (पतला) करके गुदा द्वारा नीचे गिरावे उसे रेचन और विरेचक कहते हैं ।

१० वामक–जो औषध विना पके पित्त, कफ को जबरदस्ती मुख द्वारा निकाले अर्थात् छर्दी करावे उसे वामक कहतेहैं ।

११ संशोधन–जो औषध अपने स्थानमें स्थित वातादि दोषोंके संचित मलोंको ऊर्ध्वभाग (मुखनासिका आदि), अधोभाग (गुदालिंग) द्वारा निकाले उसे संशोधन कहते हैं ।

१२ छेदन–जो औषधि एकमें मिले हुए कफ आदि दोषोंको जबरन् फाड देवे उसे छेदन कहते हैं।

१३ लेखन–जो औषधि रस आदि धातुओंके मलको अथवा दोषोंके मलको सुखाकर और उसको उखाडकर निकाल डाले उसको लेखन कहतेहैं।

१४ ग्राही–जो द्रव्य अग्निको चैतन्य करे तथा आमको पाचन करे और उष्ण वीर्य्य होनेसे द्रवरूप (पतले) दोष तथा मलको शोषण करे उसको ग्राही कहते हैं।

१५ विष्टंभी कब्ज करनेवाले द्रव्यको विष्टंभी कहतेहैं।

१६ स्तम्भन–जो द्रव्य रूखा, शीतल, कषेला, पचनेमें हलका होनेसे वायुको उत्पन्न करे, वीर्य्य तथा मलके वेगको रोकदेवे उसको स्तम्भन कहतेहैं।

१७ रसायन–जो द्रव्य बुढापेको और रोगोंको नष्ट करके आयुको बढावे उसको रसायन और आयुवर्द्धक कहतेहैं।

१८ बृंहण–जो द्रव्य मांसको पुष्ट करे उसको बृंहण कहते हैं।

१९ बल्य–जो द्रव्य जीवन, शरीर तथा इन्द्रियोंको बल (ताकत) देनेवाला हो उसको बल्य तथा बलवर्द्धक कहते हैं।

२० जीवन–जो द्रव्य जीवनको बढावे चिरकाल जीता रक्खै उसको जीवन या जीवनी कहते हैं।

२१ प्रीणन–जो द्रव्य प्राणोंको बढानेवाला हो उसको प्रीणन कहतेहैं।

२२ तर्पण जो द्रव्य पतले पदार्थ रूक्ष तथा निर्बल शरीरको अथवा अत्यंत क्षुधातुरको तृप्त करे उसको तर्पण कहतेहैं।

२३ वृष्य-जो द्रव्य वीर्य्यको पैदाकरे उसको वृष्य या वीर्य्यप्रद तथा शुक्रद कहतेहैं।

२४ धातुवर्द्धक–जो द्रव्य वीर्य्यको अथवा रसादि धातुओंको बढानेवाला हो उसको धातुवर्द्धक कहते हैं।

२५ धातुचेतन–जो द्रव्य-वीर्य्य अथवा धातुओंको चेतन तथा उत्पन्न करे उसको धातुचेतन कहतेहैं।

२६ वाजीकरण–जो द्रव्य वीर्य्यको बढावे तथा स्त्रीगमनकी शक्तिको बलवान् करे उसको वाजीकरण कहतेहैं।

२७ व्यवायी–जो द्रव्य पचनेसे पहिलेही सम्पूर्ण शरीरमें व्यापक होजाय और पीछे पाकको प्राप्त हो उसको व्यवायी कहतेहैं।

२८ विकाशी—जो द्रव्य शरीरकी सन्धियोंके बन्धनोंको तथा धातुओंके बलको शिथिल करे वह विकाशी कहा जाताहै प्रायः विषोंमें यह गुण होतेहैं।

२९ मादक—जो द्रव्य तमोगुणी होनेसे बुद्धिको नष्ट करदे उसको मादक या मदकारक कहतेहैं ।

३० सूक्ष्म—जो द्रव्य—रोमकूपद्वारा शरीरमें प्रवेश करजाय उसको सूक्ष्म कहतेहैं।

३१ आग्नेय—अग्निसे प्रगटहुआ अग्नितत्त्ववाला आग्नेय कहा जाताहै ।

३२ प्राणहारक—जो द्रव्य—व्यवायी, विकाशी, सूक्ष्म, छेदन, मादक, आग्नेय इन सब गुणोंयुक्त होनेसे जीवनका नष्ट करनेवाला हो उसको प्राणहारक अथवा मारक तथा प्राणनाशक कहतेहैं ।

३३ योगवाही—जो अनेक द्रव्योंके योगसे अथवा पृथक् २ अनुपानोंसे सब रोगोंपर दियाजावे उसको योगवाही कहतेहैं ।

३४ प्रमाथी—जो द्रव्य अपने बलसे मुख, नासिकादि छिद्रोंसे कफ आदि दोषोंको दूर करनेवाला हो उसको प्रमाथी कहते हैं ।

३५ अभिष्यन्दी—जो द्रव्य गाढा और भारी होनेसे रसवाही नसोंको रोककर शरीरको जकड देवे उसको अभिष्यन्दी कहते हैं ।

३६ पिच्छिल—जो द्रव्य—गाढा हो उसको पिच्छिल कहते हैं।

३७ सान्द्र—जिसमें नसोंके आकारका मिलाहुआसा हो उसको सान्द्र कहतेहैं ।

३८ क्लेदी—जो द्रव्य गिलगिला या गीलापन करनेवाला हो उसको क्लेदी या क्लेदकारक कहतेहैं ।

३९ हृद्य—जो द्रव्य हृदयको बलवान् करता हो तथा प्रिय हो उसको हृद्य कहतेहैं।

४० विषद—जो द्रव्य स्पष्ट, स्वच्छ, निर्मल हो उसको विशद कहतेहैं ।

४१ सर—जो द्रव्य चलायमान होकर निकल जाय तथा दोषको निकाल डाले उसको सर, सारक, दस्तावर कहतेहैं ।

४२ वातल—जो द्रव्य—वायुको पैदा करे उसको वातल कहते हैं । इसी प्रकार मूत्रको पैदा करनेवालेको मूत्रल और शुक्रके उत्पन्न करनेवालेको शुक्रल समझना चाहिये ।

भवदीय विनीत सेवक—रामप्रसाद टकसाल

इलाका पटियाला.

॥ श्रीः ॥

अथ राजवल्लभः ।

भाषादीपिकासहितः ।

प्रथमपरिच्छेदः १.

परमानन्दसन्दोहकन्दभद्रकरं सताम् ।
इन्दिरारमणं वन्दे गोविन्दं नन्दनन्दनम् ॥ १ ॥

प्रणम्य जगदाधारं व्यालयज्ञोपवीतिनम् ।
राजवल्लभनाम्नोऽस्य टीका भाषादिदीपिकाम् ॥ १ ॥
नृवाणीमात्रदक्षाणां, शास्त्रकुंठितधीमताम् ।
वैद्यरामप्रसादेन क्रियते हितमिच्छता ॥ २ ॥

दोहा–जगदाधार महेश जो, व्यालविभूषित देह ।
होवहु रामप्रसादको, तिन्ह चरणनमें नेह ॥ १ ॥
नृपवल्लभ टीका करौ, भाषादीपक नाम ।
शास्त्ररहित जे दक्ष हैं, तिन्ह भिषगनके काम ॥ २ ॥
होइ सुभीतो सभन कहं, लखहु शास्त्रको सार ।
लभहिं जु पंडित कष्टसों, सोइ सुलभ इहिं द्वार ॥ ३ ॥
छरछरकर प्रापित भयो, अबहिं न पावहिं भेद ।
कह पुनि रामप्रसादको, किन्हपर हुई है खेद ॥ ४ ॥
जे नर पढिहैं प्रेमसों, भाषामात्र विचार ।
चतुर होहिं भेषज विषे, भल कहिहैं संसार ॥ ५ ॥

राजवल्लभवैद्येन निर्मितो राजवल्लभः ।
द्रव्याणां गुणख्यातित्वाद्भिषजांहि सुखावहः ॥ २ ॥

ग्रंथके आदिमें निर्विघ्न समाप्तिके लिये राजवल्लभ वैद्य एक श्लोकसे मंगलाचरण सत्पुरुषोंको और परम आनंदके समूहके कन्द अर्थात् मूलरूप करतेहैं कल्याणके करनेवाले लक्ष्मीजीके पति नन्दनन्दन, श्रीगोविन्दको प्रणाम करताहूं ॥ १॥

राजाओंके प्यारे राजवल्लभ वैद्यराजका निर्माण कियाहुवा यह राजवल्लभ निघंटु द्रव्योंके गुणोंको वर्णन करनेमें प्रसिद्ध होनेसे वैद्यलोगोंको परम सुखदायक है ॥ २ ॥

प्रभातप्राह्णमध्याह्नापराह्णरजनीभवः ।
इति पञ्च परिच्छेदाः षष्ठोप्यत्रौषधाश्रयः ॥ ३ ॥

१ प्राभातिक परिच्छेद (जिसमें प्रभातकालके कृत्योंका वर्णन है ।) २–पौर्वाह्ण (जिसमें पूर्वाह्णिक समयके कृत्योंका वर्णनहै) । ३–मध्याह्निक (जिसमें मध्याह्नके कृत्योंका वर्णन है) । ४–अपराह्णिक (जिसमें दुपहरसे सायंकालतकके कृत्योंका वर्णन है) । ५–निशाभव (जिसमें रात्रिमात्रके कृत्य वर्णन किये हैं) ऐसे यह पांच परिच्छेद हुए; छठेमें नाना औषधियोंका वर्णन किया है, इस प्रकार यह ग्रंथ छह परिच्छेदोंमें वर्णित है ॥ ३ ॥

प्रथमपरिच्छेदः ।

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठेत्स्वस्थो रक्षार्थमायुषः ।
शरीरचिन्तां निर्वर्त्य मैत्रं कर्म्म समाचरेत् ॥ ४ ॥

आरोग्य मनुष्यको अपनी आयुकी रक्षाके लिए सूर्य्योदयसे चार घडी पहले उठकर शारीरक चिन्ताओं (मलमूत्र त्याग आदि) से निवृत्त होकर हित कार्य्योंका आचरण करना चाहिये ॥ ४

स्वभावतः प्रवृत्तानां मलादीनां जिजीविषुः ।
न वेगान् धारयेद्धीरः कामादीनां तु धारयेत् ॥ ५ ॥

मनुष्योंको शुभ जीवनकी इच्छा करतेहुए चाहिए कि, आएहुए मल-मूत्रादिकोंके वेगको कभी न रोंके परन्तु काम क्रोधादिकके वेगोंको रोकनेका यत्न अवश्य करे ॥ ५ ॥

पाद–मलमार्गाणां शौचगुणाः ।

मेध्यं पवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
पादयोर्मलमार्गाणां शौचाधानमभीक्ष्णशः ॥ ६ ॥

सदैव मलके मार्गोंको और हाथ पावोंको धोकर स्वच्छ रखनेसे बुद्धिकी वृद्धि होतीहै, पवित्रता होतीहै, आयुकी वृद्धि होतीहै, और कान्ति बढती है, तथा दरिद्रताका नाश होताहै ॥ ६ ॥

उषःपानगुणाः ।

कासश्वासातिसारज्वरवमथुकटीकोष्ठकुष्ठप्रकारान्
मूत्राघातोदरार्शःश्वयथुगलशिरः कर्णनासाक्षिरोगान् ॥
ये चान्ये वातपित्तक्षयकफकृता व्याधयः सन्ति जन्तोः
तांस्तानभ्यासयोगादपनयति पयः पीतमन्ते निशायाः ७

नित्यप्रति सूर्य्योदयसे पहले प्रातःकाल बासी जल पीनेसे (कोई कहतेहैं प्रातःकाल नासिकाद्वारा जल पीनेसे) खांसी, श्वास, अतीसार, ज्वर, वमन, कमरके रोग, कोष्ठरोग और सबप्रकारके कोढ, मूत्राघात, उदररोग, बवासीर, वारंवार थूकका आना गलेकेरोग, शिरोरोग, कर्णरोग, नासिकारोग, नेत्ररोग और अन्य जो वात, पित्त, कफ और क्षयसे उत्पन्न होनेवाले रोग हैं वह सब दूर होतेहैं ॥ ७ ॥

दन्तधावनविधिः ।

प्रातर्भुक्त्वा च मृद्वग्रं कषायकटुतिक्तकम् ।
भक्षयेद्दन्तपवनं दन्तमांसान्यबाधयन् ॥ ८ ॥

प्रातःकाल कषैले और चरपरे तथा कडुवे वृक्षकी टहनीकी नरम और सुडौल दांतन लेकर उसकी कूंचीसे इसप्रकार दांतोंको घर्षण करे जिससे दांतोंकी जडोंका मांस न छिलजावे ॥ ८ ॥

मतान्तरम् ।

केप्यत्र करवीरार्ककरंजबकुलासनान् ।
दंतकाष्ठार्थमन्ये तु सर्वान् कण्टकिनो विदुः ॥ ९ ॥

कोई वैद्य कहतेहैं कनेर, आक, करंज, मौलसिरी, और शाल, इनकी दांतन करना चाहिए कोई कहतेहैं बबूल आदि कांटेदार सबवृक्षोंकी दांतन करना चाहिए (हमारे मतमें विना विचार किए हरेक वृक्षकी दांतन करना उचित नहीं क्योंकि उनसे दाँतोंके गिरजाने आदि उपद्रव होनेका भयहै) ॥ ९ ॥

निषिद्धं यथा ।

गुवाकतालहिन्तालखर्जूरैः केतकीमतैः ।
नारिकेलेन ताड्या च न कुर्य्याद्दन्तधावनम् ॥ १० ॥

सुपारी, ताड, हिन्ताल, खजूर, केतकी, नारियल और ताडीवृक्ष, इन वृक्षोंकी दांतुन करना उचित नहीं इसलिए उनकी दांतौन कभी न करे ॥ १० ॥

जिह्वालेखनगुणाः ।

जिह्वानिर्लेखनं रौप्यं सौवर्णं ताम्रमायसम् ।
तन्मलापहरं शस्तं मृदुश्लक्ष्णदशांगुलम् ॥ ११ ॥
निहन्ति वक्त्रवैरस्यं जिह्वादन्ताश्रितामयम् ।
आरोग्यं रुचिमाधत्ते सद्यो दन्तविशोधनम् ॥ १२ ॥

जीभकी मैल दूर करनेके लिए चांदी तथा सोना या तांबा अथवा लोहेकी नरम और स्वच्छ दश अंगुल प्रमाण सलाई बनाना चाहिए इससे जीभकी मैल दूर करनेसे मुखकी विरसता जीभ और दांतोंके आश्रित रोग दूर होतेहैं आरोग्यता और रुचि उत्पन्न होतीहै तथा दांत शुद्ध होजातेहैं (यदि चांदी आदिकी

सलाई न हो तो वृक्षकी सीधी सुडौल टहनीको चीरकर उससे जीभकी मैल दूर करे) ॥ ११ ॥ १२ ॥

दन्तधावने दिङ्निर्णयः ।

मृत्युः स्याद्दक्षिणास्येन पश्चिमास्येन चामयः ।
पूर्वास्येनोत्तरास्येन सम्पदो दन्तधावनात् ॥ १३ ॥

दक्षिण दिशाको मुख करके दांतन करे तो मृत्यु होतीहै पश्चिमको मुख करके दांतन करनेसे रोग पैदा होतेहैं पूर्व तथा उत्तर दिशाको मुख करके दांतन करनेसे अनेक सम्पत्तियोंकी वृद्धि होती है ॥ १३ ॥

दन्तकाष्ठव्यवहारनिषिद्धजनाः ।

अर्दितो कर्णशूली च दन्तरोगी नवज्वरी ।
शोषी कासी च मूर्छार्तो दन्तकाष्ठं विवर्जयेत् ॥ १४ ॥

अर्दित रोगवालेको, कर्णशूलीको, दंतरोगीको, नवीन ज्वरवालेको, शोष रोगीको, खासीवालेको तथा मूर्च्छारोगवालेको दांतन करना उचित नहीं है ॥ १४ ॥

चक्षुर्धावनविधिः ।

दंतमूर्द्धमधो घृष्ट्वा प्रातः सिंचेच्च लोचने ।
तोयपूर्णमुखस्तेन दृष्टिराशु प्रसीदति ॥ १५ ॥

प्रातःकाल दांतोंको नीचे और ऊपरसे खूब साफ करके फिर मुखमें पानी भरकर कुल्ले करै और पवित्र जलसे (अथवा त्रिफलेके जलसे) छींटदेकर नेत्रोंको धोनेसे नेत्र प्रसन्न रहतेहैं और दृष्टि दृढ होती है ॥ १५ ॥

अञ्जनधारणगुणमाह ।

नेत्रमञ्जनसंयोगाद्भवत्यमलतारकम् ॥
दृष्टिर्निराकुला भाति निर्मलश्चन्द्रमा यथा ॥ १६ ॥

नेत्रोंमें अञ्जन डालनेसे नेत्र निर्मल रहतेहैं और चन्द्रमाके समान निर्मल प्रकाशान् होजातेहैं और दृष्टि दृढ होती है ॥ १६ ॥

कंकतीगुणाः ।

कङ्कती कांतिजननी कण्डूघ्नी मूर्द्धरोगजित् ।
केशप्रसादनी केश्या रजोजन्तुमलापहा ॥ १७ ॥

कंघीसे केशोंको साफ करना कान्तिजनक है और खाज़ सिरके रोग, दूर होते हैं बाल निर्मल होतेहैं तथा बढते हैं गरदा, जुंवाँ, आदि बालोंके मलको निकाल देतीहै ॥ १७ ॥

उष्णीष (पगडी) धारणगुणाः ।

उष्णीषं शिरसा धार्य्यं प्रभाते लघु नित्यशः ।
केश्यं चक्षुष्यमायुष्यं रजःशीतोष्णवारणम् ॥ १८ ॥

नित्यप्रति शुद्ध हलके वस्त्रकी पगडी धारण करना केशोंको हितकारी है तथा नेत्रोंका हितकारी है आयुको बढाताहै तथा गरदा, शीत, धूप इनको दूर करता है ॥ १८ ॥

श्मश्रुनखादिच्छेदनगुणाः ।

पौष्टिकं कल्पमायुष्यं शौचरूपविराजनम् ॥
केशश्मश्रुनखादीनां कृन्तनं सम्प्रसादनम् ॥ १९ ॥

सिरके बाल दाढी, मूछ, और नाखून, इनके बनवानेसे अर्थात् क्षौर करवानेसे शरीरकी कान्ति पुष्टि बल तथा आयु बढते हैं और मनुष्य पवित्र और स्वरूपवान होताहै चित्त प्रसन्न होताहै ॥ १९ ॥

प्रभातद्रष्टव्यः ।

वैद्यः पुरोहितो मन्त्री दैवज्ञोऽत्र चतुर्थकः ।
प्रभातकाले द्रष्टव्यो नित्यं स्वश्रियमिच्छता ॥ २० ॥

अपने ऐश्वर्य्यकी कामनावाले मनुष्यको नित्यप्रति प्रातःकालमें वैद्य, पुरोहित, मंत्री और ज्योतिषी इनका दर्शन करना उचित है ॥ २० ॥

अग्निसेवनगुणाः ।

अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः ।
आमाभिष्यन्दशमनो रक्तपित्तप्रकोपनः ॥ २१ ॥

अग्निके सेंकनेसे वायुकी और कफकी स्तंभता दूर होती है तथा शीत, कांपना, आम और शरीरका गीलापन नष्ट होताहै तथा रक्तपित्तका कोप होता है ॥ २१ ॥

धूम–हिम–गुणाः ।

धूमः पित्तानिलौ कुर्य्यादवश्यायः कफानिलौ॥२२॥

धूम (धुवाँ) लगनेसे पित्त और वायुकी वृद्धि होतीहै शीतका सेवन करनेसे कफ तथा बातकी वृद्धि होती है ॥ २२ ॥

शिशिरगुणाः ।

शिशिरं शीतलं रूक्षं वृष्यं वातप्रकोपनम् ॥ २३ ॥

बरफका सेवन करना शीतलहै रूखाहै वीर्यवर्द्धक है और वायुको कुपित करताहै (बनावटी बरफ प्रायः कुहरे (पाला) की तासीरवाली होतीहै ॥ २३ ॥

कुज्झटिगुणाः ।

रूक्षो तमोगुणप्रायो कुज्झटिः कफपित्तलः ॥ २४ ॥

कुहरा अर्थात् पाला रूखाहै तमोगुण युक्तहै कफ और पित्तका बढानेवालाहै२४॥

अवस्थानगुणाः ।

आस्या मेदोद्युतिश्लेष्मसौकुमार्य्यकरी सुखा॥२५॥

नरम गद्दीके ऊपर बैठनेसे मेद, बढतीहै कान्ति और कोमलता तथा अत्यन्त सुख होताहै ॥ २५ ॥

इत्थं मैत्रक्रियादीनां संक्षेपेणातिगुंफितः ।
प्राभातिकः परिच्छेदः समाप्तो राजवल्लभे ॥ २६ ॥

इसप्रकार इस राजवल्लभ निघंटुमें शरीरके हित करनेवाली क्रियाओंसे युक्त यह प्राभातिक परिच्छेद संक्षेपसे समाप्त हुवा ॥ २६ ॥

दोहा-प्राभातिक परिच्छेद यह, भाषादीपक साथ ।
शुभ अवसर पूरण भयो, रामप्रसाद सुहाथ ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघंटौ पटियालाराज्यान्तर्गतटकसालग्रामवास्तव्याऽऽयुर्वेदोद्धारकवैद्यपञ्चाननपण्डितरामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषादीपकनामभाषाटीकायां प्राभातिको नाम प्रथमः परिच्छेदः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयपरिच्छेदः ।

अथ पौर्वाह्णिकं कृत्यं नानातन्त्रान्निरुच्यते ॥ १ ॥

अब हम इसके उपरान्त अनेक शास्त्रोंसे पौर्वाह्णिक क्रियाओंका वर्णन करतेहैं॥ १॥

छत्रादिपञ्चकम् ।

छत्रं वर्षातपरजोवातावश्यायनाशनम् ।
वर्ण्यं दृष्टिकरं बल्यं गुह्यावरणशंकरम् ॥ २ ॥

छतरी धारण करनेसे वर्षा, धूप, गरदा, वायु, शीत निवारण होतेहैं और इसके धारण करनेसे शरीरका वर्ण और दृष्टि तथा बल उत्तम होताहै आकाशचारी जीव और पिशाच आदिकोंसे मुखको ढक रखता है अर्थात् बचा रखताहै और कल्याण कारकहै ॥ २ ॥

वृष्टिगुणमाह ।

वृष्टिर्निष्पन्दिनी शीता निद्राश्लेष्मबलप्रदा ।
मलापहारिणी वायुदायिनी वह्निवारिणी ॥ ३ ॥

वर्षा—गीला करनेवाली, शीतल, निद्राजनक और श्लेष्मवर्द्धक होतीहै तथा मलको हरनेवाली है वायुकी बढानेवाली है और अग्निकी शमन करनेवाली होती है ॥ ३ ॥

आतपगुणमाह ।

आतपः कटुको रूक्षः स्वेदमूर्च्छातृषापहः ।
दाहवैवर्ण्यजननो नेत्ररोगप्रकोपनः ॥ ४ ॥

सूर्य्यका ताप अर्थात् धूप रूक्ष है और स्वेदजनक, मोहकारक, तृषा, और दाह ज़नक, विवर्णता, तथा नेत्ररोगको उत्पन्न करनेवाली हैं ॥ ४ ॥

छायागुणमाह ।

छाया दाहश्रमस्वेदहरा मधुरशीतला ॥ ५ ॥

छाया—दाहकी हरनेवालीहै थकावट तथा पसीनेको दूर करनेवाली है—मधुर और शीत गुण संयुक्त है ॥ ५ ॥

यष्टिधारणगुणमाह ।

स्खलतः संप्रतिष्ठानां शत्रूणां च विरोधनम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम् ॥ ६ ॥

हाथमें लाठी धारण करना गिरते हुएको संभालता है, शत्रुओंको भयकारक है, शरीरको धारण करताहै और आयुको बढाताहै तथा सब प्रकारके भयको दूर करताहै ॥ ६ ॥

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ।
सच शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमो मतः ॥ ७ ॥
सर्वेष्वृतुषु सर्वैर्हि मर्त्यैरात्महितार्थिभिः ।
शक्त्यर्द्धेन च कर्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा ८॥
कुक्षौ ललाटे ग्रीवायां यदा घर्म्मः प्रवर्तते ।
शक्त्यर्द्धं तं विजानीयाद् यावदुच्छ्वासमेव च ॥ ९॥

चिकने पदार्थ खानेवाले बलवान मनुष्योंको, कसरत करना सर्बदाही पथ्यहै अर्थात् हितकारक है शीत और वसंत ऋतुमें तो अत्यन्तही हितकारक है परन्तु अपनी आत्माका हित चाहनेवाले मनुष्योंको सब ऋतुओंमें आधी ताकतसे कसरत

करनी चाहिए इससे अन्यथा अर्थात् ताकतसे अधिक कसरत करनेसे मनुष्योंका शरीर नष्ट होताहै जबतक कोख तथा मस्तक और गर्दनमें पसीना न आवै और श्वास जल्दी २ न आने लगे तबतक ही कसरत करनी चाहिए इसीको अ ची ताकतसे कसरत करना कहतेहैं ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

लाघवं कर्म्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता ।
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते ॥ १० ॥
व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् ।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥ ११ ॥
नच व्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्षणम् ।
नच व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात् ॥१२॥

व्यायाम करनेसे शरीरमें हलकापन, हरएक काम करनेकी सामर्थ्य होती है शरीर स्थिर रहता है अनेक कष्ट आदि सहन करलेनेकी ताकत पैदा होती है ॥ व्यायाम करनेवाले मनुष्यके दोष नष्ट होकर अजीर्णकारक, और विदग्ध, तथा विरुद्ध भोजन भी सुन्दर रीतिसे परिपाकको प्राप्त होजाते हैं । अर्थात् यह जो कुछभी भोजन करे सो अच्छी तरहसे परिपाक होकर उत्तम रसको पैदा करताहै और स्थूलता अर्थात् मेदरोगके नाश करनेके लिए व्यायामके समान दूसरी कोईभी वस्तु नही है तथा इसका शरीर ऐसा दृढ और बलवान होताहै जिसको शत्रु अपने बलसे दुःख नहीं देसक्ते ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिगच्छति ।
व्यायामक्षुण्णगात्रस्य पद्भ्यामुद्वर्तितस्य च ॥१३॥
व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः ।
वयोबलं शरीरं च देशकालमथापि च ॥
समीक्ष्य कुर्य्याद्व्यायामं शक्त्या युक्त्या च
बुद्धिमान् ॥ १४ ॥

और इस मनुष्यको बुढापाभी जल्दी आकर नहीं घेरसक्ताहै जिस मनुष्यने पायोंसे लेकर सिर पर्यंत सम्पूर्ण शरीरको व्यायामसे दृढ कर लियाहै उसको व्याधियां आकर इस प्रकार नहीं घेरसक्तीं; जैसे गरुडको सांप नहीं घेर सक्ते बुद्धिमान् मनुष्यको चाहिये कि अपने बल और शरीर तथा देश और समयको विचार कर युक्तिपूर्वक शक्ति अनुसार कसरत किया करे ॥ १३ ॥ १४ ॥

व्यायामनिषेधः ।

रक्तपित्ती क्षयी शोषी कासी श्वासी क्षतातुरः ॥१५॥
भुक्तवान् स्त्रीषु च क्षीणो व्यायामं परिवर्जयेत् ।
वातपित्तामयी बालो वृद्धोऽजीर्णी च तं त्यजेत्॥१६॥

रक्तपित्तरोग वाला, क्षय रोगवाला, शोषी, कासरोगी, श्वास पीडित, और जखमी, भोजनकरनेके अनन्तर, स्त्रीसंग करके और क्षीण मनुष्य कसरत न करे ऐसेही वात, पित्तके रोगवाला, बालक, और बूढा तथा अजीर्ण रोगवाला इनको भी कसरत करना नहीं चाहिए ॥ १५ ॥ १६ ॥

अतिव्यायामदोषः ।

अतिव्यायामतः कासो रक्तपित्तप्रतानकः ।
श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णा ज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥१७॥

अतिव्यायामके करनेसे खांसी रक्त, पित्त, प्रतानवायु, थकावट, क्लम, (कायली या ग्लानी) प्यास, क्षय, ज्वर, वमन, यह रोग उत्पन्न होतेहै ॥१७॥

अंगमर्दनगुणः ।

संवाहनं श्रमहरं वृष्यं निद्रासुखप्रदम् ।
मांसासृक्त्वक्प्रसन्नत्वं कुर्य्याद्वातकफापहम् ॥१८॥

शरीरको दबाना अर्थात् चांपना श्रमको नाश करताहै, तथा वृष्यहै, निद्रा जनकहै, सुखप्रदहै, और मांस, रुधिर, त्वचा इनको प्रसन्न करताहै तथा वात और कफको हरताहै ॥ १८ ॥

शरीरघर्षणगुणमाह ।

उद्वर्षणं दृष्टिकरं कण्डूकोष्ठविनाशनम् ।
तेजनं त्वग्गतस्याग्नेः सिरामुखविरेचनम् ॥ १९ ॥

शरीरको रगडना अर्थात् मसलना दृष्टिकी शक्तिको बढाता है तथा खाज कोढ आदि त्वचाके रोगोंको नष्ट करता है और त्वचाकी अग्निको चैतन्य करताहै तथा शरीरके रोमोंके मुखोंको खोलताहै ॥ १९ ॥

पथभ्रमणगुणमाह ।

अध्वा मेदःकफस्थौल्यसौकुमार्य्यविनाशनः ॥ २० ॥

अधिक रास्तेका चलना मेद, कफ, स्थूलता और कोमलताको नष्ट करताहै२०

भ्रमणगुणाः ।

यत्तु चंक्रमणं नातिदेहपीडाकरं भवेत् ।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥ २१ ॥

सामान्यतासे नित्य इसप्रकार भ्रमण करना (सैरकरना) जिससे शरीरमें तकलीफ नहो । आयु, बल, मेधा और अग्निको बढाताहै तथा इन्द्रियोंको प्रफुल्लित करता है ॥ २१ ॥

पादत्राणधारणगुणाः ।

पादत्रधारणं वृष्यमोजस्यं चक्षुषोर्हितम् ।
सुखप्रचारमायुष्यं बल्यं पादरुजापहम् ॥ २२ ॥

पावोंमें जूता धारण करना वीर्य्य और ओजको बढ़ाता है नेत्रोंको हितकारक है चलनेमें सुखदायक है आयु तथा बलका बढानेवाला है पांवकी पीडाको दूर करताहै ॥ २२ ॥

पादुकाऽधारणदोषाः ।

पादाभ्यामनुपानद्भ्यां नृणां चंक्रमणं सदा ।
अनारोग्यमनायुष्यमिंद्रियघ्नमदृष्टिकृत् ॥ २३ ॥

जूता न पहरकर चलनेसे आरोग्यता और आयुको कम करता तथा दृष्टिकी शक्तिको नष्ट करता है ॥ २३ ॥

हस्त्यादिगमनगुणाः ।

हस्त्यश्वरथदोलाद्यैर्भ्रमणं वातकोपनम् ।
स्थिरीकरणमङ्गानां बल्यं वह्निविवर्द्धनम् ॥ २४ ॥

हाथी, घोडा, रथ, डोला, पालकी, पीनस, डंडी, झपान, आदिमें बैठकर यात्रा करनेसे बायु कुपित होती है तथा शरीरके अंग स्थिर होते हैं बल बढता है तथा जठराग्नि दीपन होती है ॥ २४ ॥

विश्रामगुणः ।

विश्रामो बलकृत्स्वेदश्रमनुत्स्वास्थ्यदः शुभः ॥२५॥

विश्राम करना बलका देनेवाला है थकावटको दूर करता है और स्वास्थ्य, तथा कल्याण कारक है ॥ २५ ॥

पादप्रक्षालनगुणाः ।

पादप्रक्षालनं पादमलरोगश्रमापहम् ।
दृष्टिप्रसादनं वृष्यं रूक्षघ्नं प्रीतिवर्द्धनम् ॥ २६ ॥

पांवोंको धोनेसे पांवोंका मैल और रोग तथा थकावट दूर होतीहै नेत्रोंमें प्रसन्नता आतीहै वीर्य्य बढताहै और शरीरका रुखापन दूर होताहै और प्रीति बढ़तीहै ॥ २६ ॥

प्राग्वातगुणमाह ।

प्राग्वातो मधुरः क्षारो वह्निमान्द्यकरो गुरुः ।
वैरस्यगौरवौष्ण्यानि करोत्यप्स्वोषधीषु च ॥२७॥
भग्नेऽपीष्टः क्षताद्येषु श्वावश्वयथुरोगकृत् ।
सन्निपातज्वरश्वासत्वग्दोषाशोंविषक्रिमीन् ॥ २८ ॥
कोपयेदामवातञ्च घनसंघातकारकः ॥ २९ ॥

पूरबकी वायु मधुरहै खारीहै अग्निको मंदकरती है भारी है । और जलमें तथा औषधियोंमें विरसता, गुरुता, उष्णता, उत्पन्न करतीहै । जख्मोंमें और क्षत आदि रोगोंमें हितकारक है और नासा स्राव सूजन इनकी करने वाली है तथा सन्निपात, ज्वर, श्वास, त्वचाके दोष, बवासीर, कृमि, विष, तथा आमवात आदि रोगोंकी वृद्धि करने वाली है और मेघोंको इकट्ठा करने वालीहै ॥२७॥२८॥२९॥

दक्षिणमारुतगुणाः ।

दक्षिणो मारुतो बल्यश्चाक्षुष्यः शस्यघातकः ।
मधुरश्च विदाही च कषायान्नरसो लघुः ॥ ३० ॥
रक्तपित्तप्रशमनो नच मारुतकोपनः ।
गण्डूपदादिकीटानां जनकः प्राणकारकः ॥ ३१ ॥

दक्षिणकी पवन बलदायकहै नेत्रोंको हितहै खेतीको नष्ट करती है मधुरहै दाहजनक है अन्नमें कषैला रस पैदा करतीहै और हलकी है तथा रक्तपित्तको शमन करती है और वायुको कुपित नहीं करती । केंचुए आदि कीटोंको उत्पन्न करती है तथा जीवोंको प्राणदायक है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

पश्चिमपवनगुणाः ।

पश्चिमोऽग्निवातवर्णाबलारोग्यविवर्द्धनः ।
कषायः शोषणः स्वर्य्यो रोचनो विशदो लघुः॥३२॥
अपां लघुत्ववैशद्यशैत्यवैमल्यकारकः ।
सर्वद्रव्येष्वभिव्यक्तप्रभावरसवीर्य्यकृत् ॥ ३३ ॥
व्रणसंरोपणस्त्वच्यो दाहशोथतृषापहः ॥ ३४ ॥

पश्चिमकी पवन वातको, अग्निको, वर्णको बढातीहै । बलको और आरोग्यता को नहीं बढाती कषैली है, शोषणहै, स्वर कारक है, रुचिकारक है, निर्मलहै, और हलकीहै, जलमें हलकापन, स्वच्छता, शीतलता, निर्मलता करनेवालीहै । तथा सब द्रव्योंमें रस और वीर्य्यको प्रगटप्रभाव करतीहै ॥ व्रणोंको रोपण करतीहै त्वचाको नरम करतीहै दाह सूजन तथा तृषा इनको हरतीहै ३२।३३।३४

उत्तरवायुगुणाः ।

औत्तरो मारुतः स्निग्धो मृदुर्मधुर एव च ।
कषायान्नरसः शीतः सर्वदोषप्रकोपनः ॥ ३५ ॥
क्षीणक्षतविषार्तानां हितो दाहतृषापहः ॥ ३६ ॥

उत्तरकी वायु चिकनी मृदुल और मधुर है तथा अन्नमें कषाय रस पैदा करने वालीहै तथा शीतलहै और सब दोषोंको कुपित करतीहै क्षीण मनुष्योंको क्षतरोगवालोंको तथा विषसे दुःखितोंको हितकारी है दाह और तृषाको दूर करतीहै ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

नीहारादिसंयुक्तवायुगुणाः ।

शीताधिकः सनीहारः सविद्युत्स्तनयित्नुमान् ॥ ३७ ॥

जो वायु बरफ, बिजली, और मेघसे संयुक्त होताहै वह अत्यन्त शीतलहै ॥ ३७ ॥

विश्वग्वायुगुणाः ।

विश्वग्वायुरनायुष्यः प्राणिनां नैकदोषकृत् ।
सर्वर्तुलिङ्गको हन्ता हद्युत्पातपुरःसरः ॥ ३८ ॥

चारों ओरको घूमता हुआ पवन मनुष्योंकी आयुको हरताहै । त्रिदोषका कोप करने वाला है सब ऋतुओंके चिह्नयुक्त है हानिकारकहै तथा हृदयमें उत्पातका करनेवाला है ॥ ३८ ॥

व्यजनानिलगुणाः ।

मूर्च्छास्वेदतृषादाहश्रमघ्नो व्यजनानिलः ॥ ३९ ॥

पंखेकी पवन—मूर्च्छा, पसीना, तृषा, दाह, श्रम, इनको दूर करती है ॥ ३९ ॥

तालवृन्तपवनगुणाः ।

तालवृन्तभवो वातस्त्रिदोषशमनो लघुः ॥ ४० ॥

तालवृक्षके पंखेकी पवन—त्रिदोषको शान्त करतीहै और हलकीहै ॥ ४० ॥

वंशव्यजनपवनगुणाः ।

वंशव्यजनजो वातो रूक्षोष्णवातपित्तदः ॥ ४१ ॥

बांसके पंखेकी पवन-रूक्षहै गरमहै और वातपित्तको उत्पन्न करतीहै ॥ ४१ ॥

वालव्यजनवायुगुणाः ।

वालव्यजनमौजस्यं मक्षिकादीन् व्यपोहति ॥४२॥

चमरकी पवन-ओजको बढातीहै और मक्खी आदिको दूर करती है ॥ ४२ ॥

मयूरपक्षादिनिर्मितव्यजनवायुगुणाः ।

मायूरा वस्त्रजा वैत्रा वालदोषत्रयापहाः ॥ ४३ ॥

मोरके पंखोंकी अथवा कपडेकी या बेंतके पंखेकी पवन-वालरोग और त्रिदोषको दूर करतीहै ॥ ४३ ॥

तैलगुणमाह ।

तैलं कषायमधुरं सूक्ष्ममुष्णं व्यवायि च ।
पित्तलं बद्धविण्मूत्रं नच श्लेष्मातिवर्द्धनम् ॥ ४४ ॥
वातघ्नमुत्तमं त्वच्यं मेधाग्निबलवर्द्धनम् ।
नास्ति तैलात्परं किञ्चिदौषधं मारुतापहम् ॥४५॥
तैलसंयोगसंस्कारात् सर्वरोगापहं स्मृतम् ॥ ४६ ॥

तेल-कषैला मीठा, सूक्ष्म, गरम, व्यवाई, (स्त्रीसङ्गमें शक्ति बढानेवाला) पित्तजनक, मल, मूत्रको बांधनेवाला है, और कफको अत्यंत नहीं बढाता, वातनाशक, त्वचामें हित, मेधा, और अग्नि, तथा बलको, बढानेवालाहै । वायुको नष्ट करनेके लिए तेलकी बराबर और कोई औषधि नहीं है । और औषधियोंके संयोगसे सिद्ध किया हुवा तेल संपूर्ण रोगोंको दूरकरताहै ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

तिलतैलगुणाः ।

तिलतैलं वयःस्थैर्य्यकरं वातघ्नमुत्तमम् ।
हितं बस्त्यभ्यङ्गपाने नस्ये कर्णाक्षिपूरणे ॥ ४७ ॥

तिलोंका तेल—आयुका स्थापन करने वालाहै, वायुके नष्ट करनेमें उत्तमहै, वस्तिकर्म्ममें और मालिश करनेमें तथा नस्यमें और कान तथा नेत्रोंमें पूर्ण करनेमें बहुत हित है ॥ ४७ ॥

सर्षपतैलगुणाः ।

कटूष्णं सार्षपं तैलं रक्तपित्तप्रदूषणम् ।
कफशुक्रानिलहरं कण्डूकृमिविनाशनम् ॥ ४८ ॥

सरसोंका तेल—कडुवाहै, गरमहै, रक्तपित्तको दूषित करने वालाहै, कफ, वीर्य्य, वायु, इनको हरने वालाहै तथा खाज और कृमियोंको दूर करता है ॥ ४८ ॥

एरण्डतैलगुणाः ।

ऐरण्डतैलं मधुरं शुक्रश्लेष्माभिवर्द्धनम् ।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम् ॥ ४९ ॥

एरंडतैल--मीठाहै, भारीहै, वीर्य्य और कफको बढाने वालाहै, वात रक्त, गुल्म, हृद्रोग, जीर्णज्वर, इनके नाश करनेमें परम उत्तम है ॥ ४९ ॥

हृद्बस्तिपार्श्वजानूरुत्रिकपृष्ठास्थिशूलिनाम् ।
आनाहाष्ठीलवातासृक्प्लीहोदावर्तशूलिनाम् ॥५०॥
हितं वातामयश्वासग्रंथिब्रध्नविकारिणाम् ॥ ५१ ॥

हृदयके रोगोंमें बस्तिकर्ममें, पसवाडेके रोगमें, जानु, उरु, त्रिक, पीठ और हड्डियोंके दर्दमें परम हितकारकहै तथा अफरा, अष्ठीला, वातरक्त, प्लीहा, उदा-वर्त, शूल, वातरोग, श्वास, ग्रंथि और बद (वध) के रोगवाले मनुष्योंको हितकारकहै ॥ ५० ॥ ५१ ॥

असतीतैलगुणाः ।

स्वाद्वम्लमतसीतैलं वीर्योष्णं कटुपाकि च ॥५२॥

अलसीका तेल—मीठाहै, खट्टाहै, उष्णवीर्य्यहै, पाकमें चर्पराहै ॥ ५२ ॥

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कुसुम्भतैलं कटुकं गुर्व्हूष्णञ्च त्रिदोषदम् ॥९३॥

कुसुम्भेके बीजोंका तेल—चर्पराहै, गरमहै, त्रिदोषको उत्पन्न करताहै ॥ ९३ ॥

करंजतैलगुणाः ।

करञ्जतैलं किटिभकुष्ठकण्डूनिवारणम् ।
तिक्तं कृमिहरं तीक्ष्णं रक्तपित्तप्रदूषणम् ॥ ९४ ॥

करञ्जका तेल—किटिभ, नामक कुष्ठको तथा अन्य दद्रु, आदि कुष्ठोंको और खाजको, निवारण, करताहै, और कडुवाहै, कृमिनाशकहै तीक्ष्णहै रक्तपित्तको प्रदूषित करने वालाहै ॥ ९४ ॥

निम्बतैलगुणाः ।

निम्बतैलन्तु कुष्ठघ्नं तिक्तं कृमिहरं परम् ॥ ९५ ॥

नीमका तेल--कुष्ठको दूर करताहै कडुवाहै और कृमियोंको विशेषतासे नष्ट करता है ॥ ९५ ॥

अनुक्तफलोद्भवतैलगुणाः ।

फलोद्भवानि तैलानि यान्यनुक्तानि कानि च ।
गुणान् कर्म्म च विज्ञाय फलानि च विनिर्दिशेत्९६॥

इस जगह जिन फलविशेषोंके तेलोंका वर्णन नहीं कियागयाहै उन २ फल विशेषोंके गुण और कर्मोंको समझकर उनके तेलोंके गुणभी कथन करना चाहिए॥९६

तिलतैलस्य प्रधानत्वमाह ।

सर्वेभ्यस्त्विह तैलेभ्यस्तिलतैलं प्रशस्यते ॥ ९७ ॥

सब प्रकारके स्थावर तैलोंमें तिलोंका तेल प्रशंसनीय है ॥ ९७ ॥

स्थावरस्नेहस्य तैलत्वमाह ।

निष्पत्तेस्तद्गुणत्वाच्च तैलत्वमितरेष्वपि ॥ ९८ ॥

जिसप्रकार तिलोंका तेल—कोल्हूआदिमें निकाला जाकर जलाने और मालिस आदिके काममें लिया जाताहै उसीप्रकार अन्य सरसौं आदिक द्रव्योंका भी

स्नेह, निकाला और काममें लाया जाताहै इसलिए उन स्नेहोंको भी तेलही कहना चाहिए ॥ ५८ ॥

अभ्यङ्गगुणाः ।

अभ्यङ्गो मार्दवकरः कफवातविनाशनः ।
धातूनां पुष्टिजननो बलवर्णप्रसादनः ॥ ५९ ॥

शरीरमें तैलकी मालिस करनेसे शरीर नरम होताहै तथा कफ और वायुका नाश होताहै धातुओंकी पुष्टि होतीहै बल तथा वर्ण प्रकाशमान होताहै ॥ ५९ ॥

पादाभ्यंगगुणाः ।

पादाभ्यङ्गोऽथ निद्राकृच्चक्षुष्यः पादरोगहा ।
चक्षुषि प्रतिरन्ध्रं द्वे शिरे पादगते नृणाम् ॥ ६० ॥
अतश्चक्षुःप्रसादार्थी पादाभ्यंगं समाचरेत् ॥ ६१ ॥

पावोंमें तेल-मलना निद्राकारक, नेत्रोंको हित, पांवोंके रोगोंको हरने वालाहै नेत्रोंके छिद्रोंमें जो दो नसें हैं वह पांवोंमें पहुंची हुईहैं इसलिए पावोंमें तेल मलनेसे नेत्र प्रसन्न रहतेहैं बुद्धिमानको चाहिए कि नेत्रोंकी प्रसन्नताके लिए पांवोंमें तेल मलाकरे ॥ ६० ॥ ६१ ॥

स्नेहोऽवगाहने युक्तः शरीरे बलमाहरेत् ॥ ६२ ॥

तेल-मलकर स्नान करनेसे शरीरमें बल आताहै ॥ ६२ ॥

शिरसि तैलमर्दनगुणाः ।

नित्यं स्नेहार्द्रशिरसः शिरःशूलो न जायते ।
न खालित्यं न पालित्यं न केशाः प्रपतंति च॥६३॥
दृढमूलाश्च कृष्णाश्च भवन्ति च घनायताः ।
इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग् भवति लोचनम्॥६४॥

नित्यप्रति सिरको चिकना रखनेसे सिरमें पीडा नहीं होती । तथा खालित्य-रोग दूर होताहै तथा केश शीघ्र श्वेत नहीं होतेहैं और उखडकर गिरतेभी नहीं ।

और उनकी जडें दृढ होजातीहैं, रङ्गमें काले रहतेहैं, घने तथा लंबे होते हैं इन्द्रियें प्रसन्न रहतीहैं, नेत्रोंकी दृष्टि सुन्दर होतीहै ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

कर्णतैलपूरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणं नित्यं न मन्या न हनुग्रहाः ॥
नोच्चैः श्रुतिर्न बाधिर्य्यं न कर्णे वातजा रुजः ॥६५॥

नित्यप्रति कानमें तेल डालनेसे--मन्यास्तंभ, हनुग्रह, दूर होतेहैं तथा ऊंची आवाजसे सुनना, बधिरता और कानमें होनेवाले वायु संबन्धीरोग दूर होतेहैं, अर्थात् कानोंमें तैल डालनेसे यह रोग होतेही नहीं ॥ ६५ ॥

तैलद्रोणीअवस्थितिगुणाः ।

तैलद्रोणी प्रशस्ता विविधगदमये वातरोगार्दितेषु
व्याकुल्ये पंगुभूते सविषमबधिरे मिन्मिने गद्गदे च ॥
धन्वङ्गे स्तब्धपृष्ठे प्रचलितपवने गात्रकम्पे च कट्यां
ग्रीवाभङ्गेऽपतंत्रे क्षयरुधिरभवे मूत्रकृच्छ्रे च बस्तौ॥६६॥

एक शुद्ध पवित्र खुला बर्तन तेलका भरकर उसमें बैठनेसे अनेक प्रकारके रोग वायुके विकार अर्दितरोग व्याकुलता पंगुपना दोषोंकी विषमता भिनभिन शब्द, गद्गदशब्द, धनुस्तम्भ, स्तब्धपृष्ठ, शरीरमें इधरउधर विचरनेवाली वायु, गात्रकंप कटिशूल गर्दनका टेढा होना अपतंत्रकवायु, रक्तक्षय, मूत्रकृच्छ्र इनको दूर करता है । तथा बस्तिकर्ममें प्रशंसा योग्यहै ॥ ६६ ॥

उद्वर्तनगुणाः ।

उद्वर्तनं वातहरं कफमेदोनिलापहम् ।
स्थिरीकरणमंगानां त्वक्प्रसादकरं परम् ॥ ६७ ॥

उबटन लगाना–वायुको नष्ट करता है तथा कफ, मेद, और वायु इनका नाश करताहै । अङ्गोंकी स्थिरता करता है, त्वचाको नरम और स्वच्छ बनाताहै ॥ ६७ ॥

उद्वर्तनं हरिद्राद्यैः कण्डूवैवर्ण्यरौक्ष्यजित् ।
तिलेनोद्वर्त्तनं कण्डूरौक्ष्यत्वग्दोषनाशनम् ॥ ६८ ॥

हरिद्रा आदिसे बनाया हुवा उबटन (बटना) लगाना—खाज, विवर्णता, और रूखापन इनको नष्ट करताहै । तिलोंसे बनायाहुवा उबटन खाज, रूक्षता, और त्वचाके दोष इनको नाश करताहै ॥ ६८ ॥

जलगुणमाह ।

ईषत्कषायमधुरं पानीयं क्लेदि शीतलम् ।
तृष्णाघ्नमव्यक्तरसं शरीरेन्द्रियतर्प्पणम् ॥ ६९ ॥

पानी—किञ्चित् कषैला, मीठा, गीलापनकारक, शीतल, प्यासको दूर करनेवाला, अव्यक्तरस, तथा शरीर और इन्द्रियोंको तृप्त करनेवालाहै ॥ ६९ ॥

सुगन्धमस्पष्टरसं सुशीतं तर्षनाशनम् ।
स्वच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते ॥ ७० ॥

सुगन्धित, अव्यक्तरस, (छिपेहुए रसवाला) सुशीतल, तृषा नाशक स्वच्छ हलका, हृदयको प्रिय लगनेवाला, ऐसा जल महान् गुणोंको करनेवाला और उत्तम कहाहै ॥ ७० ॥

पिच्छिलं कृमिलं क्लिन्नं पर्णशैवालकर्दमैः ।
वैवर्णं विरसं सान्द्रं दुर्गंधि न हितं जलम् ॥ ७१ ॥

जो जल—पत्ते शिवार, कीचड, आदिसे क्लिन्न, कृमियुक्त, गँदला, गाढा, बुरेवर्णका विरस काई आदियुक्त और दुर्गन्धित हो ऐसा जल—अहितकारक और निन्दनीय है ॥ ७१ ॥

साधारणमेघजलगुणाः ।

गगनाम्बु त्रिदोषघ्नं गृहीतं यत्सुभाजने ।
बल्यं रसायनं मेध्यं पात्रापेक्षि च तत्परम् ॥ ७२ ॥

आकाशसे वर्षाहुवाजल जो सुन्दर, उत्तम, पात्रमें ग्रहण कियाहो और पृथ्वीके ऊपर न गिरनेदियाहो वह जल त्रिदोषको नाश करताहै, बलदायकहै, रसायन है, मेधाजनकहै, इसके सिवाय जैसे पात्रमें ग्रहण करके रक्खागयाहो, वैसा गुण होसक्ताहै, ॥ ७२ ॥

सूर्यचन्द्रकिरणसंयुक्तजलगुणाः ।

दिवार्ककिरणैः स्पृष्टं स्पृष्टमिन्दुकरैर्निशि ।
अरूक्षमनभिष्यन्दि तत्तुल्यं गगनाम्बुना ॥ ७३ ॥

जिस जलमें-दिनमें सूर्य्यकी किरणें पडतीहों, और रात्रिमें चन्द्रमाकी किरणें पडतीहों, ऐसा जल रूक्षतारहित और क्लेदहीन होताहै । यह जलभी आकाशसे ग्रहण किएहुए जलके समान गुणों वालाहै ॥ ७३ ॥

अनार्तवमेघजलगुणाः ।

अनार्तवं प्रयुंजंति वारि वारिधरास्तु यत् ।
तत्त्रिदोषाय सर्वेषां देहिनां परिषिक्तिनाम् ॥ ७४ ॥

विना ऋतुसे वर्षाहुवा जल-और विना ऋतुसे आएहुए बादल जिन मनुष्योंको परिषिक्त करतेहैं अर्थात् जिन मनुष्योंपर विना ऋतुके मेघ वरषते हैं अथवा जो मनुष्य विना ऋतुके बरसे हुए जलको पीतेहैं उनके त्रिदोषका कोप होताहै ॥ ७४ ॥

वर्षाकालिकमेघजलपाननिषिद्धता ।

वर्षासु चरन्ति घनैर्महोरगा वियति कीटलूताश्च ।
तद्विषदुष्टमपेयं स्वजलमगस्त्योदयात्पूर्वम् ॥ ७५ ॥

वरषातमें मेघाच्छन्न आकाश और पृथ्वीमें बहुतसे सांप, कीडे, मकडी, आदि विषधारी जीव भ्रमण करतेहैं उनके विषसे दूषित हुवा जल जबतक अगस्त्यका उदय न हुवा हो तबतक नहीं पीना चाहिए (उदेतियाम्यां हरिसंक्रमाद्रवेरेकाधिके विंशतिमे ह्यगस्त्यः अर्थ सिंहकी संक्रान्तिके २१ अंश गत होनेपर दक्षिण दिशामें अगस्त्य ऋषिका उदय होता है,) इसके उपरान्त बरषातके जलमें दोष नहीं रहता ॥ ७५ ॥

मेघजलपानकालनिर्णयः ।

शुक्लागस्त्यत्रयोदश्यां भाद्रस्यान्ते शरद्यपि ।
अर्घ्यं दत्त्वा त्वगस्त्याय गृह्णीयाद्गगनोदकम् ॥ ७६ ॥
हेमन्ते वापि गृह्णीयात् खजलं मृन्मये घटे ।
हेमन्ते तत्प्रयोक्तव्यं नहि शङ्केदनार्तवम् ॥ ७७ ॥
कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम् ।
हंसोदकमिति ख्यातं शारदं विमलं जलम् ॥ ७८ ॥

भाद्रपदशुक्ल त्रयोदशीको अगस्त्य महाराजको अर्घ्य देकर आकाशका जल ग्रहण करना चाहिये और शरद् ऋतुमेंभी आकाशका जल ग्रहण करना योग्यहै । तथा हेमन्त ऋतुमेंभी आकाशके वर्षे जलको मट्टीके घडेमें ग्रहण करना चाहिये हेमन्तमें वर्षे जलको विना ऋतुका जल होनेकी शंका न करे क्योंकि अगस्त्यके उदयसे जल निर्विष होजाताहै वह जल समयसे परिपक्व होनेसे निर्दोष होताहै, तब वह शरद ऋतुका निर्मल जल हंसोदक, कहा जाताहै ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

अनूपदेशजातजलगुणाः ।

अनूपदेशे यद्वारि तत्सान्द्रगुरु पिच्छिलम् ।
मधुरं श्लेष्मजननं स्निग्धं पावकनाशनम् ॥ ७९ ॥
प्रमेहश्लीपदच्छर्दिगलगण्डादिरोगकृत् ॥ ८० ॥

अनूप देशमें होनेवाला जल–प्रायः गाढा भारी पिच्छिल होताहै । और मीठा होताहै, कफको पैदा करताहै, चिकनाहै, जठराग्निको नष्ट करताहै । तथा प्रमेह, श्लीपद, छर्दि, और गलगंडादि रोगोंको उत्पन्न करताहै ॥ ७९ ॥ ८० ॥

जांगलजलगुणाः ।

जांगलं त्वन्यथानूपात् पानीयं परिकीर्तितम् ॥ ८१ ॥

जांगल देशमें होनेवाला जल–अनूप देशके जलसे विपरीत गुणोंवाला कहाहै ॥ ८१ ॥

साधारणदेशजलगुणाः ।

वारि साधारणं वृष्यं दीपनं मधुरं लघु ॥ ८२ ॥

साधारण देशका जल वीर्य्यवर्द्धकहै, दीपनहै मधुर है, और हलकाहै ॥ ८२ ॥

वार्षिकजलगुणमाह ।

गुर्वभिष्यन्दि पानीयं वार्षिकं मधुरं सरम् ॥ ८३ ॥

वर्षा ऋतुका जल—भारी है क्लेदकारकहै मधुर है और दस्तावर है ॥ ८३ ॥

शारदीयजलगुणमाह ।

शारदं चानभिष्यन्दि लघु तत्परिकीर्तितम् ॥ ८४ ॥

शरद ऋतुका जल—क्लेदरहितहै, तथा हलकाहै ॥ ८४ ॥

हैमन्तिकजलगुणमाह ।

हैमन्तिकं जलं स्निग्धं वृष्यं बल्यं हितं गुरु ॥८५॥

हेमन्त ऋतुका जल—चिकनाहै, वीर्य्यवर्द्धकहै, बलदायक है, हितकारकहै, और भारीहै ॥ ८५ ॥

शैशिरजलगुणमाह ।

शैशिरं कफवातघ्नं किञ्चिद्धैमन्तिकाल्लघु ॥ ८६ ॥

शिशिर ऋतुका जल—कफ और वायुको नष्ट करताहै तथा हेमन्त ऋतुसे किंचित् हलकाहै ॥ ८६ ॥

वासन्तिकजलगुणमाह ।

कषायं मधुरं रूक्षं विद्याद्वासन्तिकं जलम् ॥ ८७ ॥

बसन्त ऋतुका जल—कषैलाहै मीठाहै और रूखाहै ॥ ८७ ॥

ग्रैष्मिकजलगुणमाह ।

ग्रैष्मिकञ्चानभिष्यन्दि जलमित्येष निश्चयः ॥८८॥

ग्रीष्म ऋतुका जल—क्लेद नहीं करता यह निश्चयहै ॥ ८८ ॥

तडागजलगुणमाह ।

ताडागं वातलं स्वादु कषायं कटुपाकि च ॥ ८९ ॥

तालावका जल–वायुको बढाताहै, स्वादहै, कषैलाहै, और पाकमें कडुवाहै॥८९॥

वापीजलगुणमाह ।

वाप्यं गुरु कटु क्षारं पित्तलं कफवातजित् ॥ ९० ॥

बावलीका जल–भारीहै, कडुवाहै, खाराहै पित्तजनकहै, तथा कफ और वायुको जीतताहै ॥ ९० ॥

कूपजलगुणमाह ।

कौपं वातकफौ हन्ति दीपनं लघु पित्तलम् ॥९१॥

कूपका जल–वायुको और कफको नष्ट करताहै, दीपनहै, हलकाहै और पित्तवर्द्धकहै ॥ ९१ ॥

कुण्डजलगुणमाह ।

कौण्डयमग्निकरं रूक्षं मधुरं कफकृद् गुरु ॥ ९२ ॥

कुंडका जल–अग्निको बढाताहै, रूखाहै, मीठाहै, कफको करताहै, और भारी है ॥ ९२ ॥

निर्झरजलगुणमाह ।

नझरं लघु पथ्यञ्च दीपनं कफनाशनम् ॥ ९३ ॥

निर्झरका जल–हलकाहै, पथ्यहै, दीपनहै और कफको नाश करताहै ॥ ९३ ॥

सरोवरजलगुणमाह ।

सारसं लघु तृष्णाघ्नं बल्यं स्वादु कषायवत् ॥९४॥

सरोवरका जल–हलकाहै, प्यासको दूर करताहै, बलदायकहै, मीठाहै और कषैलेकी समानहै ॥ ९४ ॥

केदारजलगुणमाह ।

कैदारं मधुरं प्रोक्तं विपाके गुरु दोषणम् ॥ ९५ ॥

क्यारियोंमें खडाहुवा जल–मीठाहै, और दोषोंको कुपित करताहै, पचनेमें भारीहै ॥ ९५ ॥

पल्वलजलगुणमाह ।

पल्वलं गुर्वभिष्यन्दि विष्टम्भि दोषणं परम् ॥ ९६ ॥

तलाईका जल—भारीहै और अभिष्यंदीहै, विष्टंभीहै, दोषोंको उत्पन्न करनेवालाहै ॥ ९६ ॥

समुद्रजलगुणमाह ।

सामुद्रमुदकं क्षारं सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ ९७ ॥

समुद्रका जल—खाराहै, और सब दोषोंको कुपित करताहै, ॥ ९७ ॥

नदीजलगुणमाह ।

नादेयं वातलं रूक्षं सान्द्रं गुरु कफापहम् ॥ ९८ ॥

नदीका जल—वायुको उत्पन्न करताहै, रूखाहै, घनहै, भारीहै, और कफको नष्ट करताहै ॥ ९८ ॥

शीघ्रवहानदीजलगुणमाह ।

नद्यः शीघ्रवहाः प्रायो लघ्व्यो याश्चामलोदकाः ९९॥

जल्दी २ चलनेवाली नदियोंका पानी प्रायः हलका और निर्मल होता है ॥९९॥

मृदुवहा-पूर्वसमुद्रगानदीजलगुणमाह ।

प्रायो मृदुवहा गुर्व्यो याश्चपूर्वसमुद्रगाः ॥ १०० ॥

धीरे २ चलनेवाली तथा पूर्वके समुद्रमें गिरनेवाली नदियोंका जल—प्रायः भारी होताहै ॥ १०० ॥

पाषाणवालुकायुक्तनदीजलगुणमाह ।

नद्यः पाषाणसिकतावाहिन्यो विमलोदकाः॥१०१॥

जिन नदियोंमें पत्थर और सिकता बहुत होताहै उनका जल—प्रायः निर्मल ही होताहै ॥ १०१ ॥

गंगादिनदीजलगुणाः ।

हिमवत्प्रभवा याश्च जलं तास्वमृतोपमम् ॥ १०२ ॥

जो नदियां हिमालयसे प्रगट होती हैं उनका जल—अमृतकी समान होताहै॥१०२

पारिभद्रादिपर्वतजानदीजलगुणाः ।

पारिभद्रभवा याश्च विन्ध्यसिन्धुभवाश्च याः ।
शिरोहृद्रोगकुष्ठानां ता हेतुः श्लीपदस्य च ॥ १०३॥

जो नदियां पारिभद्र पर्वतसे तथा विन्ध्याचलसे अथवा सिन्धुपर्वतसे उत्पन्न होतीहैं उनका जल–शिरोरोग, हृद्रोग कुष्ठ, श्लीपद, इनको पैदा करनेवाला है ॥ १०३ ॥

चन्द्रकिरणादियुक्त–पर्वतवारिगुणाः ।

चन्द्रार्ककरसंसृष्टं वायुना स्फालितं मुहुः ।
पर्वतोपरि यद्वारि समं पौरन्दरेण तत् ॥ १०४ ॥

जो जल–ऊंचे पर्वतोंके ऊपर होताहै और उसके ऊपर सूर्य्य और चन्द्रमाकी किरणें पडतीहों तथा पवनके वेगसे इधरउधर स्फालन किया जाताहो वह जल स्वर्गके जलके समानहै ॥ १०४ ॥

चन्द्रकान्तमणिसंसृष्टजलगुणमाह ।

चन्द्रकान्तोद्भवं रूक्षं शीतं दाहविनाशनम् ॥ १०५॥

जिसजगह चन्द्रकान्त मणि होती है उस जगहसे उत्पन्न हुवा जल शीतल है रूखाहै तथा दाहको नष्ट करताहै ॥ १०५ ॥

औद्भिदजलगुणमाह ।

औद्भिदं मधुरं पित्तशमनं न विदाहि च ॥ १०६ ॥

वृक्ष आदिकोंके स्थानसे उत्पन्न हुआ जल मधुरहै पित्तको शान्त करताहै और दाह नहीं करता ॥ १०६ ॥

तालफलोद्भवजलगुणमाह ।

तालाम्बु पित्तजित् शुक्रस्तन्यवृद्धिकरं गुरु ॥ १०७॥

ताडका जल–पित्तको शान्त करताहै, वीर्य्यवर्द्धकहै स्तनोंके दूधको बढाताहै और भारीहै ॥ १०७ ॥

नारिकेलजलगुणमाह ।

नारिकेलाम्बु तरुणं तृष्णाघ्नं पित्तनाशनम् ।
बालस्य नारिकेलस्य जलं प्रायो विरेचनम्॥ १०८॥
शीतं वमथुमूर्च्छाघ्नं पित्तज्वरविनाशनम् ।
नारिकेलोदकं जीर्णं विष्टम्भि गुरु शीतलम् ॥ १०९॥

तरुण नारियलका जल प्यासको हरता है पित्तको दूर करताहै और बाल नारियलका जल प्रायः दस्तावर है शीतल है तथा वमनको मूर्च्छाको पित्तज्वरको नष्ट करताहै पके नारियलका जल बिष्टम्भी है भारीहै और शीतल है॥ १०८॥ १०९॥

शीतलजलगुणमाह ।

शीताम्बु मदमूर्च्छाघ्नं छर्दिपित्तज्वरापहम् ।
श्रमक्लमतृषादाहमदात्ययविषापहम् ॥ ११० ॥

शीतलजल मदको, मूर्च्छाको, वमनको, पित्तज्वरको, दूर करताहै तथा श्रम, कायली, तृषा, दाह, और मदात्यय तथा विष इनको शमन करताहै ॥ ११० ॥

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम् ।
आयुराहारकाले च भुक्त्वा नोपरि नो निशि १११॥

जल अजीर्णमें औषधीके समान गुण कर्त्ता है । और जीर्णमें बलको बढाता है भोजन करते समय जल पीना आयुकी वृद्धि करताहै । परन्तु भोजनके उपरान्त और रात्रिमें जल पीना उचित नहीं ॥ १११ ॥

धारापातजलगुणमाह ।

धारापातेन विष्टम्भि दुर्जरं पवनाहतम् ॥ ११२ ॥

गिरती हुई धाराका जल विष्टंभी होताहै और बायुसे आहत हुवा जल दुर्जर होता है ॥ ११२ ॥

शृतशीतजलगुणमाह ।

शृतशीतं त्रिदोषघ्नं यदन्तर्बाष्पशीतलम् ॥११३॥

जो जल पकाकर भाफ सहित शीतल किया हुआ है वह जल त्रिदोषको नष्ट करता है॥ ११३ ॥

उष्णोदकसाधारणगुणमाह ।

उष्णोदकं सदा पथ्यं कासश्वासविबन्धनुत् ।
कफवातामदोषघ्नं दीपनं बस्तिशोधनम् ॥ ११४ ॥

गरम जलका पीना सदाही पथ्य है और खाँसी स्वास विबंध इनको नष्ट करता है तथा कफ वायु आम दोष इनको दूर करता है दीपन है तथा बस्तिको शोधन करनेवाला है ॥ ११४ ॥

उष्णजललक्षणं विशेषगुणश्चाह ।

क्वाथमानन्तु यत्तोयं निष्फेनं निर्मलीकृतम् ।
भवत्यर्द्धावशिष्टन्तु तदुष्णोदकमुच्यते ॥ ११५ ॥

क्वाथके समान पकाया हुवा फेनरहित और निर्मल जो पकते पकते आधा रहगयाहो उसको उष्णोदक कहते हैं ॥ ११५ ॥

तत्पादहीनं वातघ्नं अर्द्धहीनन्तु पित्तजित् ।
कफघ्नं पादशेषन्तु पानीयं लघु दीपनम् ॥११६॥

जिस जलका एक हिस्सा जलकर तीन भाग अवशिष्ट रहे वह जल—वायुको शान्त करता है । और जो आधा जलकर आधा बाकी रहाहो वह जल—पित्तको जीतता है । जिसके तीन हिस्से जलकर एक हिस्सा बाकीरहे वह जल—कफको नष्ट करता है और हलका तथा दीपन है ॥ ११६ ॥

ऋतुभेदे उष्णजलभेदाः ।

हेमन्ते शिशिरे पादहीनं पादस्थितं मधौ ।
स्यात्पानीयं शरत्काले ग्रीष्मे चार्द्धावशेषितम् ॥११७॥
इच्छन्ति बहुदोषत्वात् प्रावृष्यष्टावशेषितम् ॥ ११८ ॥

हेमन्त ऋतुमें एक भाग जलकर तीन भाग रहनेपर सेवन करना चाहिये। और वसंत ऋतुमें तीन भाग जलकर चौथा भाग शेष रहनेपर सेवन करे तथा शरद ऋतुमें और ग्रीष्ममें अर्द्धावशेष जलका पान करे । और वरषातमें तो अनेक दोषोंसे दूषित होनेसे सात हिस्से जलकर एक हिस्सा रहनेपर जल–सेवन करना योग्य है ॥ ११७ ॥ ११८ ॥

पर्युषितजलगुणमाह ।

दिवा शृतञ्च यत्तोयं रात्रौ तद्गुरुतां व्रजेत् ।
रात्रौ शृतं दिवा चापि गुरुत्वमधिगच्छति ॥११९॥

जो जल–दिनमें गर्मकरके रखदिया जाय उसमें रातको भारीपन आजाता है। तथा जो रात्रीको गर्म करके रखदिया जाय उसमें दिनमें भारीपन होजाता है ॥ ११९ ॥

सुवासितजलगुणमाह ।

सुवासितं जलं पुष्पैः पूतं शुक्लेन वाससा ।
नवमृद्भाजने न्यस्तं मांगल्यं रुचिकृत्परम् ॥१२०॥

जो जल पुष्प आदिकोंसे सुबासित किया हुवा हो और शुद्ध स्वच्छ श्वेत वस्त्रसे छानकर नवीन मिट्टीके वर्त्तनमें रखाहुवा हो वह जल मंगलको देनेवाला और परम रुचिकारक है ॥ १२० ॥

जलस्य प्राधान्यमाह ।

पानीयं प्राणिनां प्राणास्तदायत्तं हि जीवनम् ।
तस्मात्सर्वास्ववस्थासु कैश्चिद्वारि न वार्य्यते १२१॥

जल–जीवोंका प्राणरूपहै इसलिये जीवन जलके आश्रय है सो किसी अवस्थामें भी जलको वारण नहीं करना चाहिये ॥ १२१ ॥

अन्नेनापि विना जन्तुः प्राणान् धारयते चिरम् ।
तोयाभावे पिपासार्त्तः क्षणात्प्राणैर्विमुच्यते ॥१२२॥

जीव अन्नके विना बहुत कालतक प्राणोंको रख सक्ता है परन्तु जलके विना प्यासे मनुष्यके प्राण क्षणमात्रमें निकल जातेहैं ॥ १२२ ॥

तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान् विमुंचति ।
तस्मात्प्राणस्य रक्षार्थं वारि देयं पिपासवे ॥१२३॥

पिपासातुर मनुष्यको मोह उत्पन्न होजाता है और मोह उत्पन्न होनेसे प्राण नष्ट होजाते हैं इसलिये प्राणोंके रक्षार्थ प्यासेको अवश्य जलदेना चाहिये॥१२३॥

शरदि वसन्ते च जलपानविधिः ।

पानीयं पानीयं शरदि वसन्ते च पानीयम् ।
नादेयं नादेयं शरदि वसन्ते च नादेयम् ॥ १२४ ॥

शरद ऋतुमें प्रायः जल पीना योग्य है क्योंकि पैत्तिक ऋतुमें जल पीना पित्तको शान्त करता है । और वसंत ऋतुमें प्रायः जलपानकी रक्षा करना योग्यहै । अर्थात् अधिक जल पीना उचित नहीं क्योंकि उस ऋतुमें कफकी वृद्धि होती है । और अधिक जल पीना कफको कुपित करता है । और शरद ऋतुमें नदीका जल (पित्तको शमनकारक होनेसे) वर्जित नहीं । और वसन्त ऋतुमें कफकोपकारक होनेसे नदीका जल ग्रहण करना योग्य नहीं है ॥ १२४ ॥

स्नानगुणमाह ।

स्नानं पवित्रमायुष्यं श्रमस्वेदमलापहम् ।
शरीरबलसन्धानं केश्यमोजस्करं परम् ॥ १२५ ॥

स्नान करना–शरीरको पवित्र करता है, आयुको बढाता है, थकावट, पसीना, मल, इनको दूर करता है, बलवर्द्धक है केशोंको बढ़ाताहै, ओजको करता है, ॥ १२५ ॥

उष्णाम्बुस्नानगुणमाह ।

उष्णाम्बुनाधःकायस्य परिषेकः सुखावहः ।
तेनैव तूत्तमाङ्गस्य बलघ्नं केशचक्षुषोः ॥ १२६ ॥

विनिहन्ति शिरः स्नानं तृष्णाताल्वास्य शोषणम् ।
मलोष्णपिडिकाकण्डूशिरोरोगांश्च पित्तजान् ॥१२७॥

गरम जलसे नीचे के शरीरका परिषेक करना सुखदायकहै । और इसी गरम जलसे शरीरके ऊपरका भाग परिषिक्त किया जाय तो बलकी हानि होती है । और गर्म जलसे शिरसे स्नान कियाजाय तो केशोंकी और नेत्रोंकी हानि होती है । तथा प्यास, तालु, और मुखका सूखना, मैल, उष्णता, पिडिका, खाज, शिरोरोग, और पित्तके रोग दूर होते हैं ॥ १२६ ॥ १२७ ॥

द्रव्यविशेषस्नानगुणमाह ।

मधुकामलकैः स्नानं पित्तघ्नं तिमिरापहम् ।
स्नानं वचाघनैरिष्टं श्लेष्मघ्नं तिमिरापहम् ।
स्नानं कृष्णतिलैश्चापि चक्षुष्यमनिलापहम् ॥१२८॥

मुलहटी तथा आंवलोंके जलसे स्नान करनेसे पित्त तथा तिमिर रोगका नाश होता है वच तथा मोथाके जलसे स्नान करनेसे श्लेष्मा तथा तिमिररोग नाश-होते हैं काले तिलोंको देहमें मलकर पश्चात् स्नान करनेसे आखोंकी ज्योति बढती है और वायुके विकारोंका नाश होता है ॥ १२८ ॥

स्नानस्य विशेषगुणमाह ।

अस्नातस्य शरीरस्य ऊष्मा सर्वाङ्गगोचरः ।
स्नानेनैकत्वमायाति तेन दीव्यति पावकः ॥१२९॥

स्नान न करनेसे देहकी गरमी सब अङ्गोंमें रहती है स्नान करनेसे एकत्रित होजाती है इसलिये उससे अग्नि प्रदीप्त होती है ॥ १२९ ॥

स्नानस्य निषिद्धता ।

स्नानमर्दितनेत्रास्य कर्णरोगातिसारिषु ।
आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ॥१३०॥

अर्दितरोगवाले, नेत्ररोगवाले, मुखरोगवाले, कर्णरोगवाले, अतीसाररोगवाले, आध्मानरोगवाले, प्रतिश्यायरोगवाले, अजीर्णरोगवाले, मनुष्योंको तथा भोजनके पश्चात् स्नान करना हानिकारक होताहै ॥ १३० ॥

शरीरमार्जनगुणाः ।

दौर्गन्ध्यं गौरवं कण्डूं कच्छूमलमरोचकम् ।
स्वेदबीभत्सतां हन्ति शरीरपरिमार्जनम् ॥ १३१ ॥

कपडे या इस्पैंजसे अच्छीतरह मलकर देहको पोंछनेसे दुर्गंध, गौरव, खुजली, कच्छू (पामाभेद) मैल, अरुचि, स्वेद, तथा घृणाका नाश होता है ॥१३१॥

वस्त्रादिधारणगुणमाह ।

निर्मलवस्त्रधारणगुणाः ।

काम्यं यशस्यमायुष्यमलक्ष्मीघ्नं प्रहर्षणम् ।
श्रीमत्पारिषदं शस्तं निर्मलाम्बरधारणम् ॥ १३२ ॥

निर्मल स्वच्छ वस्त्रोंका धारण करना प्रशंसनीय, तथा धनाढयोंकी सभामें सभ्यताको देनेवाला, कामनाको देनेवाला, आयु, तथा हर्षकी वृद्धि करनेवाला और अलक्ष्मीको दूर करने वाला है ॥ १३२ ॥

रत्नाभरणधारणगुणाः ।

धन्यं मङ्गलमायुष्यं श्रीमद्व्यसनसूदनम् ।
हर्षणं काम्यमौजस्यं रत्नाभरणधारणम् ॥ १३३ ॥

रत्नोंका और आभूषणोंका धारण करना द्रव्य, कल्याण, आयु, तथा लक्ष्मी, बढानेवाला है व्यसन नाशक, तथा आनन्द, काम, ओज, बढानेवालाहै ॥१३३॥

सूर्यादेरर्चनगुणाः ।

स्वर्ग्यं यशस्यमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
धन्यं धान्यकरं नित्यं गुरुदेवद्विजार्चनम् ॥ १३४ ॥

गुरु, देव, तथा ब्राह्मणादिकोंका पूजन स्वर्ग, कीर्ति, तथा आयुको देनेवाला दरिद्रताका नाश करने वाला, धनधान्यकी वृद्धी करनेवालाहै ॥ १३४ ॥

दर्पणगुणाः ।

दर्पणं श्रीमदायुष्यं पापोपशमनं परम् ॥ १३५ ॥

दर्पण (शीशा, या आयना,) देखनेसे सम्पत्ति तथा आयु बढती है और पापशमन होते हैं ॥ १३५ ॥

अनुलेपनगुणमाह

अनुलेपनसामान्यगुणाः

प्रीत्योजोवर्द्धनं वृष्यं स्वेददौर्गन्ध्यनाशनम् ।
तन्द्रातापोपशमनं श्रमघ्नमनुलेपनम् ॥ १३६ ॥

अनुलेपन (सुगन्धित द्रव्योंका प्रलेप) प्रीति, ओज बढाने वाला है तथा वीर्य्यको बढाने वाला है, पसीना, दुर्गंधको नाश करनेवाला तन्द्रा, तापको, शमन करनेवाला तथा थकावटको नाश करने वाला है ॥ १३६ ॥

चन्दनगुणाः ।

चन्दनं शीतलं तिक्तं तृष्णादाहास्रपित्तजित्॥१३७॥

चन्दन-ठण्ढा, तथा तीखा है प्यास, दाह, तथा रक्तपित्तको नाश करने वालाहै ॥ १३७ ॥

अगुरुगुणाः ।

अगुरु व्रणजित्तिक्तं कटूष्णं कफवातजित् ॥ १३८ ॥

अगर-व्रणोंको दूर करनेवालाहै कडुवा, तथा गरम, है कफ तथा वायुको दूर करने वालाहै ॥ १३८ ॥

कुंकुमगुणाः ।

कुंकुमं भेदि वैवर्ण्यकण्डूवातकफापहम् ॥ १३९ ॥

केशर-भेदकहै, विवर्णता, खुजली, वायु, तथा कफको नाश करती है॥ १३९॥

कस्तूरीगुणाः ।

कस्तूरी छर्दिदौर्गन्ध्यरक्तपित्तज्वरापहा ॥ १४० ॥

कस्तूरी–वमन, दुर्गंध, रक्तपित्त, ज्वरको नाश करनेवालीहै (गर्म है, वीर्य वर्द्धक है, बलकारक है) ॥ १४० ॥

लताकस्तूरीगुणाः ।

लताकस्तूरिका हृद्या शीता तिक्तास्यरोगनुत् १४१॥

लताकस्तूरी–हृदयको प्रियहै शीतलहै तीखीहै तथा मुखके रोगोंको नाश करतीहै ॥ १४१ ॥

तेजपत्रगुणाः ।

पत्रकं कफवातार्शोहृल्लासारोचकापहम् ॥ १४२ ॥

तेजपत्र–कफ, वात, बवासीर, हृल्लास, (जी मचलाना) और अरुचिको नाश करताहै ॥ १४२ ॥

कक्कोलगुणाः ।

कक्कोलः कटुको हृद्यः सुगंधिकफवातजित् ॥१४३॥

कंकोल–कटुहै हृदयको प्रियहै सुगन्धितहै कफ, तथा वायुको नाश करताहै ॥ १४३ ॥

शटीगुणाः ।

शटी वातकफश्वासकासज्वरविनाशिनी ॥१४४॥

कचूर–वायु, कफ, श्वास, कास, तथा ज्वरका नाश करताहै ॥ १४४ ॥

उशीरगुणाः ।

उशीरं स्वेददौर्गन्ध्यदाहपित्तास्ररोगजित् ॥१४५॥

उशीर–(खस) पसीनेको दुर्गन्धको, दाहको, रक्तपित्तको, नाश करताहै १४५॥

रक्तचन्दनगुणाः ।

रक्तपित्तहरं बल्यं चाक्षुष्यं रक्तचंदनम् ॥ १४६ ॥

लालचन्दन–रक्तपित्तको नष्ट करताहै बलकारक है और नेत्रोंको हितकारकहै ॥ १४६ ॥

श्रीवासादिगुणाः ।

श्रीवासः सरलं पूतिः कुन्दुरुग्रन्थिपर्णकम् ।
सिह्लकः परमामांसी देवदारुमुरानखम् ॥ १४७ ॥
सर्वैमी परमालक्ष्मीरक्षोघ्ना ज्वरनाशनाः ॥ १४८ ॥

श्रीवास, धूपसरल, गन्धमार्जारवीर्य्य, कुन्दुरू, गठिवन, सिल्हक, वालछड, देवदारु, मुरा, और नख यह सब द्रव्य—अलक्ष्मीको राक्षस बाधाको और ज्वरको नाश करतेहैं ॥ १४७ ॥ १४८ ॥

छत्रादिपञ्चकं पूर्वं ततो व्यायाममारुतौ ।
तैलमुद्वर्त्तनं तोयं स्नानं वस्त्रादिधारणम् ॥ १४९ ॥
अनुलेपनमित्येतैर्नातिसंक्षेपविस्तरः ।
पौर्वाह्णिकः परिच्छेदः समाप्तो राजवल्लभे ॥१५०॥

इसप्रकार छतरी धारण करना, हाथमें यष्टी लेना, पगडी बांधना, जूता पहनना, भ्रमण करना, अंजन डालना, व्यायाम करना, और पवन, तेल, उवटना, जल, स्नान, वस्त्रधारण तथा अनुलेपन आदिके वर्णनमें इस राजवल्लभ ग्रंथका पौर्वाह्णिक परिच्छेद साधारण रीतिसे समात हुवा ॥ १४९ ॥ १५० ॥

दोहा—नृपवल्लभ इह ग्रन्थमें, पौर्वाह्णिक परिछेद ॥
भाषादीपक युत कियो, जानसकैं सब भेद ॥ १ ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघण्टौ पटियालाराज्यान्तर्गतटकसालग्रामवास्तव्यायुर्वेदोद्धारकवैद्यपंचाननपंडितरामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषादीपकनामभाषाटीकायां पौर्वाह्णिकोनाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥ २ ॥

अथ तृतीयपरिच्छेदः ।

अथ माध्याह्निकं कृत्यं नानातन्त्रान्निरुच्यते ॥ १ ॥

अब हम अनेक शास्त्रोंसे मध्याह्नमें होनेवाले कृत्योंका वर्णन करतेहैं ॥ १ ॥

धान्यभेदाः।

अथ धान्यं त्रिधा शालिषष्टिकाव्रीहिभेदतः।
शालयो हैमनास्तत्र षष्टिका ग्रैष्मिका अपि ॥ २ ॥
व्रीहयस्त्वाशवख्याताः प्रावृट्कालसमुद्भवाः ॥ ३ ॥

प्रथम धान्योंके भेदको कथन करते हैं। धान, शालि, षष्टी, और व्रीहि इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं। हेमंत ऋतुमें शालिधान पकते हैं। और ग्रीष्म ऋतुमें षष्टिकधान होते हैं। तथा वर्षा ऋतुमें व्रीहिधान उत्पन्न होतेहैं कोई २ व्रीहि धानोंको आसव धानभी कहते हैं॥ २ ॥ ३ ॥

शालिधान्यगुणाः।

शालयो मधुराः शीता लघुपाका बलावहाः।
पित्तघ्नाल्पानिलकफाः स्निग्धा बद्धाल्पवर्चसः॥४॥

शालिचावल मीठे हैं, शीतल हैं, पचनेमें हलके हैं, बलवर्द्धकहैं, पित्तनाशकहैं, किञ्चित् वायु और कफको करनेवालेहैं चिकनेहैं और किञ्चित् मलको बद्ध करतेहैं॥४॥

रक्तशालिगुणाः।

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नश्चक्षुष्यः शुक्रमूत्रलः।
तृष्णाघ्नो बलकृत्स्वर्य्यो हृद्यस्तदनु चापरे ॥ ५ ॥
शालयो रक्तशालीनां किञ्चिद्धीनगुणा गुणैः ॥ ६ ॥

लालशालि चावल–त्रिदोषको नष्ट करते हैं, नेत्रोंको हितकारक हैं, वीर्य्य और मूत्रको बढाते हैं, तृषाको दूर करते हैं, बलकारक हैं, स्वरको अच्छा करते हैं हृद्य हैं॥ दूसरी किसमके शालि चावल गुणमें लाल शालिचावलोंसे न्यूनहैं॥५॥६॥

कलमधान्यगुणाः।

कलमोऽसृक्त्रिदोषघ्नश्चक्षुष्यः सकषायवान् ॥ ७ ॥

कलम संज्ञक धानोंके चावल रक्तविकारको और त्रिदोषको नष्ट करते हैं, नेत्रोंको हितकारक हैं, और किञ्चित् कषैले रस वाले हैं, ॥ ७ ॥

दग्धभूमिजातशालिधान्यगुणाः ।

दग्धायामवनौ जाताः शालयो लघुपाकिनः ।
कषायाबद्धविण्मूत्रा रूक्षाः श्लेष्मापकर्षिणः ॥ ८ ॥

दग्धपृथ्वीमें पैदा हुए शालिचावल पचनेमें हलके हैं कषाय हैं मल मूत्रको बांधते हैं और कफको दूर करते हैं ॥ ८ ॥

छिन्नरूढशालिधान्यगुणाः ।

शालयश्छिन्नरूढा ये रूक्षास्ते बद्धवर्चसः ॥ ९ ॥

जो शालिधान एक जगहसे उखाड कर दूसरी जगह लगाये जातेहैं उनके चावल रूखे हैं और मलको बाँधनेवालेहैं ॥ ९ ॥

ग्रैष्मिकषष्टिधान्यगुणाः ।

षष्टिका ग्रैष्मिका ये स्युः पित्तलास्ते स्थिरात्मकाः १०॥

जो ग्रीष्म ऋतुमें पैदा होनेवाले षष्टिक चावल हैं वह पित्तको पैदा करते हैं और बहुत समय तक स्थिर रहनेवाले हैं ॥ १० ॥

शालिविशेषगुणाः ।

हैमनास्तु हिमा वृष्या मधुरा बद्धवर्चसः ॥ ११ ॥

हेमन्त ऋतुमें होनेवाले चावल शीतल हैं, वीर्य्यवर्द्धक हैं, मीठे हैं और मलको बांधतेहैं ॥ ११ ॥

पाटलाव्रीहिधान्यगुणाः ।

अत्युष्णो बद्धनिष्यन्दी पाटलस्तु त्रिदोषकृत् ॥१२॥

पाटल नामक चावल अतिगरम हैं, मलको बाँधते हैं क्लेद जनकहैं, और त्रिदोष कारक हैं ॥ १२ ॥

शरद्ग्रीष्मोद्भवधान्यगुणाः ।

धान्यं शरद्ग्रीष्मभवं पाकेम्लं पित्तकृद्गुरु ॥१३॥

शरद और ग्रीष्म ऋतुमें पैदा होनेवाले चावल पाकमें अम्ल हैं पित्तको करते हैं और भारी हैं ॥ १३ ॥

ऋतुसन्धिभवधान्यगुणाः ।

ऋतुसन्धिभवाश्चोष्मा पित्तला कफनाशनाः ॥ १४ ॥

दो ऋतुओंकी सन्धिमें होनेवाले चावल गरमहैं, पित्तकारक हैं और कफको नाश करतेहैं ॥ १४ ॥

स्थलजधान्यगुणाः ।

स्थलजाः कफपित्तघ्नाः कषायाः कटुपाकिनः ।
किञ्चित्सतिक्तमधुराः पवनानलवर्द्धनाः ॥ १५ ॥

विना जलकी भूमिमें उत्पन्न होनेवाले चावल कफ और पित्तको नष्ट करतेहैं, कषैले हैं, कटुपाकी हैं, किञ्चित् तिक्तता लिये हैं मीठे हैं, वायुको और जठराग्निको बढाते हैं ॥ १५ ॥

बोरवव्रीहिधान्यगुणाः ।

बोरवस्तु बुधैः प्रोक्तस्त्रिदोषस्य प्रकोपनः ।
मधुरश्चाम्लपाकश्च व्रीहिः पित्तकरो गुरुः ॥ १६ ॥

बोरव नामक व्रीहिधानोंके चावल त्रिदोषको कुपित करतेहैं मीठे हैं, पचनेमें खट्टे हैं, पित्तकारक हैं और गुरु हैं ॥ १६ ॥

वापितावापितधान्यगुणाः ।

वापितं गुरु तद्धान्यं किञ्चिद्धीनमवापितम् ॥ १७ ॥

वापित (बोये हुए) धानोंके चावल भारी होते हैं । और अवापित अर्थात जो एक जगेसे उखाड कर दूसरी जगह लाये जावें वह हलके होतेहैं ॥ १७ ॥

रोप्यातिरोप्यधान्यगुणाः ।

रोप्यातिरोप्या लघवः शीघ्रपाका गुणोत्तराः ।
अदाहिनो दोषहरा बल्या मूत्रविवर्द्धनाः ॥ १८ ॥

जो धान एक खेतसे उखाड कर दूसरे खेतमें लगाए जांय उनको रोप्य कहते हैं । और जो धान उखाड कर पहले उनकी जडोंकी मट्टीको पानीसे धोकर

फिर दूसरे खेतमें लगाये जांय उनको अतिरोप्य कहते हैं, यह चावल हलके हैं, जल्दी पकनेवाले हैं, सब चावलोंसे विशेष गुणवाले हैं, दाह नहीं करते हैं, त्रिदोषको हरण करतेहैं, बलकारक हैं, तथा मूत्रको बढानेवाले हैं ॥ १८ ॥

यवगुणाः ।

यवः कषायो मधुरो वातरक्तहरो गुरुः ।
रूक्षः स्थैर्यकरः शीतो मूत्रमेदःकफापहः ॥ १९ ॥

जव–कषैले हैं, मीठे हैं, बातरक्तको नाश करते हैं, भारी हैं रूखे हैं, देहको स्थिर करनेवाले हैं शीतल हैं, मूत्ररोग, मेद, तथा कफको नाश करनेवाले हैं ॥ १९ ॥

गोधूमगुणाः ।

गोधूमो बृंहणो बल्यो जीवनो वातपित्तहा ।
वृष्यः स्निग्धो गुरुः शीतः सन्धाता स्थैर्यकृत्सरः२०

गेहूँ–देहको पुष्ट करनेवाले हैं, बलको बढाते हैं, जीवन हैं, बायु और पित्तको नाश करते हैं, वीर्य्यवर्द्धक हैं, चिकने हैं, भारी हैं, शीतल हैं, टूटे हुए अंगोंको जोडते हैं देहको स्थिर करते हैं दस्तावर हैं ॥ २० ॥

तृणधान्यानां गुणमाह ।

श्यामाकः शोषणो रूक्षो वातलः श्लेष्मपित्तहा२१॥

श्यामाक–(सौंक या सावाँ) शोषण करनेवाला, रूखा, वायुकारक कफ तथा पित्तको नाश करता है ॥ २१ ॥

ऊडिका कोद्रवश्चैव हस्तिश्यामाकचीनकौ ।
पीनसश्वासकासोरुस्तम्भकण्ठगदाञ्जयेत् ।
कंगुकांश्चापि जानीयादेताञ् श्यामाकवद्गुणैः ॥२२॥

उडिका, कोदौ, हस्तिस्यामाक, चीनक, यह चारों किस्मके तृण धान्य नजलेको श्वासको खांसीको ऊरुस्तम्भको और कण्ठके रोगोंको जीतते हैं । और

कंगुनीमें श्यामाकके समान गुण हैं और इनमें भी बाकी गुण श्यामाकके समान जानने ॥ २२ ॥

उडिका तत्र कथिता बलासस्य विवर्द्धनी ।
कोद्रवश्च परं ग्राही वातलः कफनाशनः ॥ २३ ॥

उडिका धान–कफ वर्द्धक है और कोदौ ग्राही है वातल है तथा कफ नाशक है ॥ २३ ॥

कंगुका बृंहणी गुर्वी भग्नसन्धानकृन्मता ॥ २४ ॥

कंगुनी–बृंहण, गुरू, कटे हुएको संधान कारक है ॥ २४ ॥

मुद्गानां भेदाः सामान्यगुणाश्च ।

कृष्णमुद्गा महामुद्गा गौरा हरितपीतकाः ।
श्वेता रक्तास्तु निर्दिष्टा लघवः पूर्वपूर्वतः ॥ २५ ॥
प्रधाना हरितास्तत्र वन्यमुद्गास्तु मुद्गवत् ॥ २६ ॥

मूँग–कालीमूँग, महामूँग, गौरमूँग, हरीमूँग, पीलीमूँग, श्वेतमूँग, और लालमूँग, इन भेदोंसे सात प्रकारकी है और पूर्व २ क्रमसे एकसे दूसरी हलकी है । इन सबमें हरी मूँग प्रधान है, वनमें होनेवाली मूँगमें भी हरीमूँगके समान ही गुण हैं ॥ २५ ॥ २६ ॥

मुद्गगुणाः ।

मुद्गः कषायमधुरः कफपित्तास्रजिल्लघुः ।
ग्राही शीतः कटुः पाके चक्षुष्यो नातिवातलः ॥२७॥

मूँग–कषैली, मीठी, कफ पित्त नाशक रक्तजित् और लघु है तथा ग्राही, शीतल, परिपाकमें कटु, नेत्रोंको हितकारक है और वायुको अत्यन्त नहीं बढाती ॥ २७ ॥

मकुष्ठगुणाः ।

मकुष्ठः शीतलो ग्राही कफपित्तक्षयापहः ॥ २८ ॥

मोठ–शीतल है, ग्राही है, कफ और पित्त तथा क्षयको नाश करताहै॥२८॥

माषगुणाः ।

माषो बहुमलो वृष्यः स्निग्धोष्णो मधुरो गुरुः ।
वातनुत् बृंहणो बल्यो मेदोमांसकफप्रदः ॥ २९ ॥

उडद मलको बहुत पैदा करता है, वृष्य है, चिकना है, गरम है, मीठा है, गुरु है, वायुको दूर करता है, बृंहण है, बलकारक है, तथा मेद, मांस और कफ इनको बढाता है ॥ २९ ॥

राजमाषगुणाः ।

राजमाषः सरो रुच्यः कफशुक्राम्लपित्तहा ।
तत्स्वादुर्वातलो रूक्षः कषायो विशदो गुरुः ॥३०॥

राजमाष अर्थात् लोबिया–सर है रुचिजनक है तथा कफ वीर्य्य और अम्लपित्तको हरनेवाला है और स्वादु है, बातल है, रूखा है, कषैला है, स्वच्छ है, और गुरु है ॥ ३० ॥

मसूरगुणाः ।

मसूरो मधुरः शीतः संग्राही कफपित्तहा ॥ ३१ ॥

मसूर–मीठी, शीतल, संग्राही और कफ पित्तके हरनेवाली है ॥ ३१ ॥

चणकगुणाः ।

चणको वातलः शीतः कफासृक्पित्तपुंस्त्वनुत्॥३२॥

चना–वातल है, शीतल है, कफनाशक है, तथा रक्त पित्त और पुरुषत्वको नष्ट करता है ॥ ३२ ॥

वर्तुलगुणाः ।

सतीला वातला रक्तपित्तघ्ना बद्धवर्चसः ॥ ३३ ॥

मटर–वातल है, रक्तपित्तको नाशती है, मलको बद्ध करती है ॥ ३३ ॥

अतसीगुणाः ।

अतस्युष्णा च तिक्ता च वातघ्नी श्लेष्मपित्तला ३४

अलसी–गर्म है, तिक्त है, वातनाशक है, कफ और पित्तको बढानेवालीहै ३४॥

कुलत्थगुणाः।

कुलत्थः कफवातघ्नो ग्राह्युष्णो बृंहणः कटुः।
गुल्मशुक्राश्मरीमेदःश्वासकासप्रमेहजित् ॥ ३५ ॥

कुलथी—कफ और वायुको नष्ट करती है, ग्राही है, गर्म है, बृंहण है, कटु है, तथा गुल्म, शुक्राश्मरी, मेदरोग, श्वास, खांसी और प्रमेहको नष्ट करती है॥३५

तुवरीगुणाः।

तुवरी कफपित्तघ्नी कषाया नातिवातला ॥ ३६ ॥

तोर (अरहर या अडहर) कफ और पित्तको नष्ट करती है, कषैली है, तथा किञ्चित् वायुको करती है ॥ ३६ ॥

तिलगुणाः।

तिलो विपाके मधुरो बलिष्ठः स्निग्धो व्रणालेपन एव पथ्यः। दंत्योग्निमेधाजननोल्पमूत्रस्त्वच्योथ केश्योऽनिलहा गुरुश्च ॥ ३७ ॥

तिल—विपाकमें मीठे हैं, बलदायक हैं, चिकनेहैं, व्रणके लेपमें पथ्य हैं, दांतोंको हितकारक हैं, जठराग्निवर्द्धक हैं मेधाजनक हैं और अल्पमूत्रताकारक हैं अर्थात् पेशाबको अधिक नहीं आने देते त्वचाको उत्तम बनानेवाले केशोंको बढानेवाले और वायुको हरनेवाले हैं, तथा भारी हैं ॥ ३७ ॥

श्रेष्ठः कृष्णतिलो मध्यः शुक्लो हीनतरोऽन्यथा ३८॥

सब प्रकारके तिलोंमें काले तिल श्रेष्ठ होते हैं और श्वेत तिल मध्यम होते हैं बाकी सब गुणमें न्यून हैं ॥ ३८ ॥

शिम्बीगुणाः।

शिम्बी तु विविधा रूक्षा वातला स्वादुशीतला।
विष्टंभिनी कषायाग्निविट्शुक्रकफनाशिनी ॥ ३९ ॥

सब तरहके शिम्बी रूखे हैं, वातल हैं, स्वादु हैं, शीतल हैं, विष्टंभकारक हैं, कषैले हैं तथा अग्नि, विष्ठा, शुक्र और कफ इनको नाश करते हैं ॥ ३९ ॥

नूतनपुरातनादिभेदेन शूकधान्यशमी-
धान्यानां गुणमाह ।

शूकधान्यं शमीधान्यं समातीतं प्रशस्यते ।
परतो वातकृद्रूक्षं प्रायेणाभिनवं गुरु ॥ ४० ॥
यवगोधूममाषाश्च तिलाश्चापि नवा हिताः ।
पुराणा विरसा रूक्षा न तथार्थकरा मताः ॥ ४१ ॥
अनार्त्तवं व्याधिहतमपर्य्यायगतं तथा ।
अभूमिजं नवं चापि न धान्यं गुणवत्स्मृतम् ॥४२॥

शूकधान्य और शमीधान्य एक वर्षसे पीछे उत्तम होते हैं, क्योंकि प्रायः नवीनधान्य भारी होते हैं, और बहुत पुराने धान्य वायुके करनेवाले और रूखे होते हैं । सब धान्योंमें जव, गेहूँ, माष, और तिल नवे अच्छे होते हैं क्योंकि यह बहुत पुराने होनेपर रसहीन और रूखे होजाते हैं तथा नवीनोंके समान गुणकारक नहीं रहते हैं बेऋतु उत्पन्नहुए तथा सूखे सडे कृमि लगेहुए अपनी अवस्थाको न पहुंचे हुए श्मशानादि निन्दित भूमिमें उत्पन्न हुए, ऐसे २ धान्य नवीन होनेपर भी गुणकारी नहीं होते अर्थात् ऐसे धान्योंका सेवन करना योग्य नहीं है ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

शाकवर्गः ।

शाकभेदमाह ।

पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा ।
शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ॥ ४३ ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघंटौ द्वितीयपरिच्छेदांतर्गतधान्यवर्गः ।

पत्र, पुष्प, फल, नाल, कन्द तथा सस्वेदज इन भेदोंसे शाक—छ प्रकारके होते हैं । इनको उत्तरोत्तर (पत्रसे पुष्प पुष्पसे फल और फलसे नाल इस क्रमसे) भारी समझना चाहिये ॥ ४३ ॥

शाकसाधारणगुणमाह ।

शाकानि प्रायशस्तावद्विष्टम्भीनि गुरूणि च ।
रूक्षाणि बहुवर्चांसि सृष्टविण्मारुतानि च ॥ ४४ ॥

प्रायः सब शाक—विष्टम्भ करनेवाले, भारी, रूखे, विष्टाको बढानेवाले, वायु तथा मलको निकालने वाले होते हैं ॥ ४४ ॥

वास्तूकशाकगुणाः ।

कटुर्विपाके कृमिहा मेधाग्निबलवर्द्धनः ।
संस्कारे सर्वदोषघ्नो वास्तूको रोचनः सरः॥४५॥

बथुवा—पचनेमें कडुवा है, क्रिमिनाशक है, मेधा अग्नि, तथा बलको बढानेवाला है, उत्तम रीतिसे घृत, तेल आदिकोंमें संस्कार किया हुआ त्रिदोषको नष्ट करता है रुचिको उत्पन्न करता है, और सर है ॥ ४५ ॥

नाडीशाकगुणाः ।

नाडीकशाकं द्विविधं तिक्तं मधुरमेव च ।
रक्तपित्तहरं तिक्तं कृमिकुष्टविनाशनम् ॥ ४६ ॥
मधुरं पिच्छिलं शीतं विष्टम्भि कफवातकृत् ।
तच्छुष्कं जलदोषघ्नं पित्तश्लेष्मामवातनुत् ॥४७॥

नाडीका शाक दो प्रकारका होताहै एक तिक्त और दूसरा मधुर । तिक्तशाक रक्तपित्तको नष्ट करता है कृमि और कुष्टको विनाश करता है ॥ मीठा शाक पिच्छिल है शीतल है विष्टम्भी है कफ और वायुको पैदा करनेवाला है यदि वही नाडीका शाक सूखा हो तो पानीके दोष, कफ और आमवातको नष्ट करता है नाडीका शाक प्रायः सजलस्थानमें होताहै इसको नाली भी कहते हैं और कहीं करेंबू कहते हैं इसका रस अफीम आदि विषोंके विषको दूर करनेके लिये भी उपयोग किया जाताहै ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

कञ्चटशाकगुणाः ।

कञ्चटं श्लेष्मलं ग्राहि हिमं पित्तास्रजिल्लघु ॥४८॥

कञ्चटका शाक श्लेष्मवर्द्धक ग्राही, ठंढा, रक्तपित्त नाशक, तथा हलका है उसको जलतण्डुलीय या जल चौलाई भी कहते हैं ॥ ४८ ॥

हिलमोचिकाशाकगुणाः ।

हिलमोची सरा तिक्ता कुष्ठघ्नी कफपित्तजित्॥४९॥

हिलमोचिकाका शाक–सर है, तिक्त है कुष्ठनाशक है और कफ, पिंत्तको जीतता है । हुलहुलका शाक इस नामसे प्रसिद्ध है यह भी सजलस्थानमें होतीहै एक दूसरी हुलहुल भी होती है वह हुडहुड, हरहुज्ज इन नामोंसे प्रसिद्ध है उसको इसकी जगह न लेवे उसको ब्रह्मसोचली, सुवर्चला भी कहते हैं ॥ ४९ ॥

कलम्बीशाकगुणाः ।

कलम्बी स्तन्यदा प्रोक्ता मधुरा शुक्रकारिणी ॥५०॥

कलम्बीका शाक स्तनोंमें दूधको बढाता हैं मीठा है और बीर्य्यको उत्पन्न करता है इसको कल[illegible]क भी कहते हैं ॥ ५० ॥

मारिषशाकगुणाः ।

मारिषो मधुरः शीतो विष्टम्भी पित्तजिद् गुरुः ।
रक्तनाड्यादयश्चान्ये तज्जातीयाश्च तद्गुणाः ॥५१॥

मारिषशाक–मीठा है शीतल है विष्टम्भी है पित्तको जीतताहै और भारी है । इसको मरषाशाक भी कहते हैं इससे सिवाय रक्त नाडी आदिक शाक और भी जो उसकी जातिके हैं सो मरषाके समान गुणवाले जानने ॥ ५१ ॥

शाकव्यवहारविधिः ।

स्विन्नं निष्पीडितरसं हितं स्नेहादिसंस्कृतम् ॥५२॥

अब शाकके बनानेकी विधि कहतेहैं प्रथम शाकको बारीक काटकर उबाल लेवे, फिर निचोड कर घृत आदिमें उस नमक मसाले युक्त शाकको बिधिवत् पकालेवे यह शाक भोजनादिमें हित है ॥ ५२ ॥

कालशाकगुणाः ।

कालशाकं तु कटुकं दीपनं गरशोथजित् ॥ ९३ ॥

कालशाक -कटु है, जठराग्निको प्रदीप्त करनेवाला है, विषसे उत्पन्न शोथको दूर करता है कालशाक मकोहका भेद है काले फलवाले मकोहको कालशाक कहते हैं लाल फल वाला मकोह कहा जाता है ॥ ९३ ॥

काकमाचीशाकगुणाः ।

त्रिदोषशमनी वृष्या काकमाची रसायनी ॥ ९४ ॥

मकोयका शाक—त्रिदोषको नाश करने वाला है । वृष्य है, तथा रसायन है मकोहको कालीभवोल काकमाची भी कहते हैं । इसमें छोटे छोटे फलोंके गुच्छे लगते हैं वह पकने पर काले या लाल होजाते हैं ॥ ९४ ॥

पूतिकाशाकगुणाः ।

उपोदिका सरा स्निग्धा बल्या श्लेष्मकरी हिमा ।
स्वादुपाका रसा वृष्या वातपित्तमदापहा ॥ ९५ ॥

पोईका शाक—सर है, चिकना है, बलकारक है, कफको पैदा करनेवाला है, शीतल है, पाकमें स्वादिष्ट है, रसयुक्त है बीर्य्यको बढानेवाला है, वात पित्त तथा मदको नाश करता है, पोईका शाक, इस नामसे प्रसिद्ध है ॥ ९५ ॥

सर्षपशाकगुणाः ।

सार्षपं कृमिलं स्वादु त्रिदोषरक्तपित्तकृत् ॥ ९६ ॥

सरसोंका शाक—कृमि उत्पन्न करता है । स्वादिष्ठ है, त्रिदोष तथा रक्तपित्तको पैदा करताहै ॥ ९६ ॥

सुनिषण्णकशाकगुणाः ।

अविदाही त्रिदोषघ्नः संग्राही सुनिषण्णकः ॥९७॥

सुनिषण्णकका शाक—दाहरहित है, त्रिदोषको नाश करता है, । तथा संग्राही है, इसको शिरिआरी, या सुसआर भी कहतेहैं ॥ ९७ ॥

शालिञ्चशाकगुणाः ।

शालिञ्चो दीपनस्तिक्तः प्लीहार्शःकफवातजित् ॥ ५८ ॥

शालिञ्चशाक–दीपन है, तीखा है, प्लीहा, बवासीर, कफ, तथा वायुको जीतनेवाला है, इसको शान्तिशाक भी कहते हैं ॥ ५८ ॥

ग्रीष्मसुन्दरशाकगुणाः ।

ग्रीष्मसुन्दरकस्तिक्तो रोचनः कफपित्तजित् ॥५९॥

ग्रीष्मसुन्दर शाक–तीखा है, रुचिकारक है, कफ तथा पित्तको जीतनेवाला है ॥ ५९ ॥

कासमर्दशाकगुणाः ।

कासमर्दोऽग्निदः स्वर्य्यः स्वादुस्तिक्तस्त्रिदोषजित् ६० ॥

कासमर्द शाक–अग्निदायक है, स्वरकारक है, स्वादिष्ट है, तीखा है, त्रिदोषको जीतनेवाला है, इसको कसोंदीका शाक भी कहते हैं ॥ ६० ॥

शतपुष्पशाकगुणाः ।

शतपुष्पा तु मधुरा वातपित्तहरा गुरुः ॥ ६१ ॥

शतपुष्पाका शाक–मधुर है, वात तथा पित्तको हरनेवाला है, भारी है, इसको सायेका शाक भी कहते हैं ॥ ६१ ॥

पुनर्नवाशाकगुणाः ।

पुनर्नवा तु वीर्य्योष्णा भेदिनी च रसायनी ।
कफानिलामदुर्नामब्रध्नशोथोदरापहा ॥ ६२ ॥

पुनर्नवाका शाक–उष्णवीर्य्य है, भेदी (दस्तलानेवाला) है, रसायन है, कफ, वायु आम, बवासीर, ब्रध्न, शोथ और उदर रोगोंको नाश करता है ॥६२॥

मूलकशाकगुणाः ।

बालमूलकपत्री तु रोचनी वह्निदीपनी ॥ ६३ ॥

कच्चीमूलीके पत्तोंका शाक–रोचक है, अग्निदीपन करताहै ॥ ६३ ॥

तण्डुलीयशाकगुणाः ।

तण्डुलीयमसृक्पित्तविषनुत् स्वादुपाकतः ॥ ६४ ॥

चौलाईका शाक–रक्तपित्त तथा विषको नाश करता है, पचनेमें स्वादुहै ॥६४॥

कलायशाकगुणाः ।

कलायशाकं मधुरं पित्तश्लेष्महरं परम् ।
कषायानुरसं रूक्षं विष्टम्भ्यनिलकोपनम् ॥ ६५ ॥

मटरका शाक–मधुर है, पित्त तथा कफको नाश करता है, । कषाय रस वाला है, रूखा है, विष्टम्भी है, वायुको कुपित करनेवाला है ॥ ६५ ॥

मण्डूकपर्णीशाकगुणाः ।

मण्डूकपर्णी कासघ्नी स्वादुपाकरसायनी ॥ ६६ ॥

मण्डूकपर्णीका शाक–खाँसीको नाश करता है, पचनेमें स्वादिष्ठ है रसायन है ॥ ६६ ॥

ब्राह्मीशाकगुणाः ।

ब्राह्मी तु भेदिनी गुर्वी मेध्या पित्तकफापहा ॥६७॥

ब्राह्मीका शाक–भेदक (दस्तकारक) है, भारी है, मेधाको उत्पन्न करनेवाला है, पित्त तथा कफको नाश करनेवाला है, ब्राह्मी तथा मण्डूकपर्णी जलके समीप पैदा होती है दोनोंके गुण तथा वर्ण प्रायः एकही समान होते हैं ॥ ६७ ॥

चाङ्गेरीशाकगुणाः ।

चांगेरी कफवातघ्नी वह्निकृद्ग्रहणी हिता ॥ ६८ ॥

चांगेरीका शाक–कफ तथा वायुको नाश करता है अग्निको बढानेवाला है अतीसार और संग्रहणी रोगमें हितकारक है ॥ ६८ ॥

पृक्काशाकगुणाः ।

पृक्का तु मधुरा पाके हिता पित्तकफापहा ॥ ६९ ॥

पृक्काका शाक–पाकमें मधुर है, हितकारक है, पित्त तथा कफको नाश करनेवाला है इसको असवरग भी कहते हैं ॥ ६९ ॥

लांगलीशाकगुणाः ।

लांगली कफपित्तघ्नी रूक्षा वातविबन्धनुत् ॥७०॥

लाङ्गलीका शाक—कफ तथा पित्तको नाश करता है, रूखा है, वायु तथा विबन्धको नाश करता है ॥ इस जगह लांगली जलपीपलके भेदका नाम है ॥ एक लांगलीकंद होता है उसको कलिहारी, नगरौडी भी कहते हैं वह विष है उसको इस जगह शाकमें न समझना चाहिये ॥ ७० ॥

चुक्रकशाकगुणाः ।

चुक्रकं दुर्जरं भेदि वातजित्पित्तलं गुरु ॥ ७१ ॥

चुक्रका शाक—दुर्जर है, भेदन है, बातको जीतनेवाला है पित्तको करता है इसको चूकाका शाक कहते हैं ॥ ७१ ॥

शुषणी-महाराष्ट्रीशाकगुणाः ।

शुषणी कफवातघ्नी महाराष्ट्री च तादृशी ॥ ७२ ॥

शुषणीका शाक—कफ और वातका नाश करता है, यही गुण जल पीपलके शाकमें है ॥ ७२ ॥

जयन्तीशाकगुणाः ।

जयन्ती गरदोषघ्नी चक्षुष्या मधुरा हि सा ॥७३॥

जयंतीका शाक—विषविकारको नाश करता है, नेत्रोंको हित है और भारी है ॥ ७३ ॥

कदलीमोचकगुणाः ।

कदलीमोचकं हृद्यं कफघ्नं कृमिनाशनम् ।
तृष्णाप्लीहज्वरं हन्ति दीपनं वस्तिशोधनम् ॥७४॥

केलेके गोभका शाक—हृदयको हित है कफ, कृमि प्यास प्लीहरोग इनको दूर करता है, दीपन है, तथा बस्तिको शुद्ध करता है ॥ ७४ ॥

गोक्षुरशाकगुणाः ।

तिक्तं गोक्षुरकं शाकं वृष्यं स्रोतोविशोधनम् ॥७५॥

गोखरूके पत्तोंका शाक–तीखा है, वीर्य्यको बढानेवाला है स्रोतोंको शोधन करनेवाला है इसको हस्तचिंघाड और भौखडे भी कहतेहैं ॥ ७५ ॥

शाकसाधारणगुणाः ।

सर्वं शाकमचक्षुष्यमजंघेयममैथुनम् ।
ऋते पटोलवास्तूककाकमाचीपुनर्नवाः ॥ ७६ ॥

पटोल, बथुवा, मकोय, और पुनर्नवाको छोड अन्य शाक नेत्रोंको हानिकारक जंघाओंके बलको हरनेवाले तथा मैथुनके सामर्थ्यको नाश करनेवाले होतेहैं ॥७६॥

पटोलशाकगुणाः ।

पटोलं कफपित्तास्रज्वरकुष्ठव्रणापहम् ॥ ७७ ॥

पटोल शाक–कफ, रक्तपित्त, ज्वर कुष्ठ तथा व्रणको नाश करनेवाला है ॥७७॥

शाकभक्षणदोषमाह ।

शाकं भिनत्ति वपुरस्थि निहन्ति नेत्रं
वर्णं विनाशयति शुक्रमथासृजं च ॥
प्रज्ञाक्षयञ्च कुरुते पलितं च नूनं
हन्ति स्मृतिं गतिमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ ७८ ॥

भक्षण कियेहुए शाक देहको भेदन करते हैं अस्थियोंको नाश करते हैं नेत्र, वर्ण, शुक्र और रुधिरको विनाश करते हैं, प्रज्ञाको क्षीण करते हैं, पलित, (अकालमें बालोंका श्वेत होना) रोगको करतेहैं । स्मरण शक्तिको नष्ट करते हैं, वैद्यकशास्त्रके जाननेवाले ऐसा कहते हैं ॥ ७८ ॥

शाकेषु सर्वे निवसन्ति रोगा रोगो हि देहस्य विनाश हेतुः । तस्माद् बुधैः शाकविवर्जनञ्च कार्य्यं तथाम्लेषु त एव दोषाः ॥ ७९ ॥

प्रायः सब शाकोंमें रोग निवास करते हैं और वह रोग ही देहके नष्ट करनेमें कारण हैं, इसलिये बुद्धिमानोंको शाकोंका खाना त्याग देना चाहिये ऐसे ही खटाईमें भी दोष हैं इस लिए खटाईका खाना भी उचित नहीं ॥ ७९ ॥

अथ पुष्पशाकगुणमाह ।

वरुणपुष्पगुणमाह ।

पुष्पं वरुणजं ग्राहि पित्तघ्नमामवातजित् ॥ ८० ॥

अब पुष्पशाकोंका वर्णन करते हैं वरुण (वरना) का पुष्प ग्राही है, पित्तको नष्ट करता है तथा आमवातको जीतता है ॥ ८० ॥

वासकस्य वङ्गसेनपुष्पस्य च गुणमाह ।

वासकस्य च पुष्पाणि वङ्गसेनस्य चैव हि ।
कटुपाकानि तिक्तानि कासक्षयहराणि च ॥ ८१ ॥

बांसे (अडूसा) के फूल तथा बंगसेन (अगस्त्य) के फूल पाकमें चरपरे हैं, तिक्त हैं, खांसी तथा क्षयको हरनेवाले हैं ॥ ८१ ॥

कोविदारादिपुष्पगुणाः ।

कोविदारकर्बुदारशणशाल्मलिपुष्पकम् ।
ग्राहि शाकं प्रशस्तं च रक्तपित्ते विशेषतः ॥ ८२ ॥

सफेद तथा लाल कचनारके फूल, और शरणके फूल, तथा सेमरके फूल, इनका शाक ग्राही है उत्तम है रक्तपित्तमें विशेष करके हित है अर्थात् रक्तपित्तको दूर करता है ॥ ८२ ॥

मधूकपुष्पगुणमाह ।

मधूकपुष्पं चाहृद्यं तर्पणं बृंहणं परम् ॥ ८३ ॥

महुवेके फूलोंका शाक-हृदयको हित है तृप्तिकारक है और परम पुष्टि जनक है ॥ ८३ ॥

करीरवंशपुष्पगुणाः ।

करीरो वंशजो रूक्षो वातपित्तकरः कटुः ।
सकषायो विदाही च श्लेष्मघ्नः पाकतः कटुः ॥८४॥

करीरके और बांसके फूलोंका शाक—वात, पित्तको करता है, कटु है, कषैले-रस युक्त है, दाहकारक है कफ नाशक है और पचनेमें चरपरा है ॥ ८४ ॥

गुवाकादिवृक्षमस्तकगुणाः ।

गुवागतालखर्जूरनारिकेलशिरांसि च ।
स्वादुतिक्तकषायाणि मूत्रातङ्कहराणि च ॥ ८५ ॥
बलप्राणकराण्याहुः शुक्रवृद्धिकराणि च ॥ ८६ ॥

सुपारी, ताल, खजूर, नारियल, इन वृक्षोंके शिर (जिनमें फल लगते हैं वह निकलते हुए कोमलगोभ) स्वादिष्ट हैं, कडुए हैं, कषैले हैं, पेशाबकी बीमारियोंको दूर करते हैं, तथा बल प्राण इनको बढानेवाले हैं और वीर्य्यके वृद्धि करने वाले हैं ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

तालप्रलम्बगुणाः ।

तथा तालप्रलम्बं च रूक्षक्षतरुजापहम् ॥ ८७ ॥

तालके प्रलम्बमें भी यही गुण है, तथा रुक्ष है और क्षतरोगको नष्ट करता है ॥ ८७ ॥

मुञ्जाकपुष्पगुणाः ।

मुञ्जातकं परं स्वादु वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥ ८८ ॥

मुंजातक पुष्प—स्वादिष्ट हैं, वृष्य हैं और वातपित्तको नष्ट करते हैं ॥ ८८ ॥

अथ फलशाकगुणमाह ।

वार्ताकुफलगुणाः ।

अग्निप्रदा मारुतनाशिनी च शुक्रप्रदा शोणितवर्द्धिनी च । हृल्लासकासारुचिनाशिनी च वार्त्ताकुरेषा गुणसप्तयुक्ता ॥ ८९ ॥

बैंगनका शाक—अग्निको चैतन्य करता है, वायुको नष्ट करता है, शुक्रको पैदा करता है, रक्तको बढाता है. हल्लास, खाँसी, अरुचि, इनको नाश करता है यह सात गुण बैंगनमें हैं ॥ ८९ ॥

कोमल-पक्क-वार्ताकुगुणाः ।

सा बाला कफपित्तघ्नी पक्का सक्षारपित्तला ॥९०॥

कोमल बैंगन—कफ और पित्तको नाश करता है, और पका हुवा बैंगन खारा है, और पित्तको बढाताहै ॥ ९० ॥

मध्यमवार्ताकुगुणाः ।

सदाफला त्रिदोषघ्नी रक्तपित्तप्रसादनी ।
कण्डूकच्छूहरी चैव वार्त्ताकी गुणवत्तरा ॥ ९१ ॥

बारह महीना फलनेवाला बैंगन रक्तपित्तको बढाता है तथा खाज और कच्छूरोगको नाश करता है, वार्त्ताकीके गुण इससे अधिक हैं ॥ ९१ ॥

कण्टकयुक्तवार्त्ताकुगुणाः ।

कण्टकी कटुतीक्ष्णोष्णा रक्तपित्तप्रकोपनी ।
कण्डूकच्छूहरी चैव वार्ताकी दोषला मता ॥ ९२ ॥

कांटेदार बैंगन कटु है, तीक्ष्ण है, गरम है, रक्तपित्तको कुपित करता है, तथा खाज और कच्छूको नाश करता है, इसी प्रकारकी वार्ताकी दोषको करतीहै९२

अंगारपक्कवार्त्ताकुगुणाः ।

अङ्गारपक्कवार्ताकुः किञ्चित् पित्तकरी मता ।
कफमेदोऽनिलहरा सरा लघुतरा परम् ॥ ९३ ॥
अतो गुरुतरा चैव सतैललवणान्विता ॥ ९४ ॥

अंगारोंपर पकाये हुए बैंगन (भरता) कुछेक पित्तको करता है, कफ मेद बायु इनको हरता है, दस्तावर है और हलका है यदि यह तेल और नमक युक्त बनाया जाय तो अत्यंत भारी है ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

बृहत्याः कण्टकार्य्याश्च फलगुणाः ।

बृहत्याः कण्टकार्य्याश्च फलं पित्तकफापहम् ।
कण्डूकुष्ठकृमिघ्नं च लघूष्णं कटुतिक्तकम् ॥ ९५ ॥

वडी कटेली और छोटी कटेलीके फल पित्तको कफको खाजको कुष्ठको और कृमियोंको नाश करते हैं और हलके हैं, गर्म हैं, कटु है और तिक्त हैं ॥ ९५ ॥

कूष्मांडगुणाः ।

कूष्माण्डकं पित्तहरं बालं मध्यं कफापहम् ।
पक्कं लघूष्णं सक्षारं दीपनं बस्तिशोधनम् ॥ ९६ ॥
सर्वदोषहरं हृद्यं पथ्यं चेतोविकारिणम् ॥ ९७ ॥

कोमल पेठेका फल पित्तको हरता है । मध्यम पेठेका फल कफको नष्ट करता है । और पक्का पेठा हलका है, गर्म है, क्षार रसयुक्त है, दीपन है, बस्तिको शुद्ध करता है, सब दोषोंको हरता है, हृदयको हित है, और हृदयके विकारोंको दूर करनेके लिये पथ्य है ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

अलाबुगुणाः ।

अलाबुर्भेदिनी गुर्वी पित्तघ्नी कफला हिमा ।
पाण्डुवर्णः कृमिश्लेष्मपित्तजित्तिक्तको लघुः॥९८॥

अलावु (कद्दू या तूंबा) भेदक है, भारी है, पित्तको नष्ट करता है, कफको बढाता है । और शीतल है, पीले रंगका कद्दू क्रिमि और कफ तथा पित्तको जीतनेवाला है, कडुवा और हलका है ॥ ९८ ॥

झिंगाकगुणाः ।

झिङ्गाकं तिक्तमधुरमामवाताग्निमान्द्यहृत् ॥ ९९ ॥

झिंगाक–तिक्त है, मीठा है, आमवात और मंदाग्निको नष्ट करताहै ॥ ९९ ॥

त्रपुषैर्वारुगुणाः ।

त्रपुषैर्वारुके स्वादुगुरुविष्टंभिशीतले ।
मुखप्रियं च रूक्षं च मूत्रदं त्रपुषन्त्विति ॥ १०० ॥
एर्वारुकं च संपक्वं दाहतृष्णाक्लमार्तिनुत् ॥ १०१॥

खीरा और फूट मीठे हैं, भारी हैं, विष्टम्भी हैं, ठंढे हैं, खानेमें प्रिय हैं, रूखे हैं, मूत्रको उत्पन्न करते हैं ॥ पकी हुई फूट दाह और प्यास तथा क्लमको दूर करती है ॥ १०० ॥ १०१ ॥

कर्कटीफलगुणाः ।

कर्कट्यास्तु फलं पक्वं छर्दितृष्णाक्लमार्तिनुत् ॥ १०२॥

पकी हुई ककडी छर्दिको प्यासको और कायलीको नष्ट करती है ॥ १०२ ॥

शीर्णवृन्तगुणाः ।

शीर्णवृन्तं कफकरं सक्षारं मधुरं लघु ॥ १०३ ॥

शीर्णवृन्त—कफको उत्पन्न करता है, क्षारयुक्त है, मीठा है, तथा हलका है, यह तरबूजका ही भेद है ॥ १०३ ॥

चेलानगुणाः ।

चेलानं गुरु विष्टम्भि मधुरं वातपित्तजित् ॥ १०४॥

तरबूज गुरु है, विष्टम्भी है, मीठा है, और वातपित्तको जीतता है ॥ १०४ ॥

कारवेल्लगुणाः ।

कारवेल्लमवृष्यं च रोचनं कफपित्तजित् ॥ १०५ ॥

करेला—बीर्य्यको नहीं बढाता, रुचिकारक है और कफ तथा पित्तको जीतता है ॥ १०५ ॥

कर्कोटकफलगुणाः ।

कर्कोटकफलं ज्ञेयं कारवेल्लकवद्गुणैः ॥ १०६ ॥

ककोडेमें भी करेलेके समान ही गुण जानना चाहिये ॥ १०६ ॥

दीर्घपटोलिकागुणाः ।

दीर्घपटोलिका स्निग्धा कटु विष्टम्भिवातला ।
भेदिनी मधुरा रुच्या शीतला श्लेष्मकोपना १०७॥

दीर्घ पटोलिका-(लंबी जातिके चचरींडे) चिकने हैं, कटु हैं, विष्टम्भको करते हैं, वायुको बढाते हैं भेदन कर्त्ता हैं, रुचिको उत्पन्न करते हैं, शीतल हैं और कफको कुपित करते हैं ॥ १०७ ॥

पटोलगुणाः ।

पटोलं कफपित्तास्रव्रणकुष्ठज्वरापहम् ।
विसर्पनयनव्याधित्रिदोषगरनाशनम् ॥ १०८ ॥

परवल-कफको, रक्तपित्तको, व्रणको, कुष्ठको, ज्वरको, नष्ट करता है तथा विसर्प, नेत्ररोग, त्रिदोष और विषको नष्ट करता है ॥ १०८ ॥

पटोलपत्रं पित्तघ्नं नाडी तस्य कफापहा ।
फलं तस्य त्रिदोषघ्नं मूलं तस्य विरेचनम् ॥१०९॥

पटोलके पत्ते-पित्तको नष्ट करते हैं इसकी नाडी कफको नाश करती है इसका फल त्रिदोषको हरता है तथा जड दस्तावर है ॥ १०९ ॥

नाडीशाकगुणमाह ।

कूष्मांडनाडीगुणाः ।

कूष्माण्डनाडिका गुर्वी शर्कराश्मरिनाशिनी ११०॥

पेठेकी नाडी-भारी है और शर्करा तथा पथरीको नष्ट करती है ॥ ११० ॥

अलावुनाडीगुणाः ।

अलावुनाडिका गुर्वी मधुरा मलभेदिनी ॥ १११ ॥

कद्दूकी नाडी-भारीहै, मधुर है, तथा मलको भेदन करती है ॥ १११ ॥

वेताग्रगुणाः ।

वेताग्रं दीपनं रुच्यं वातपित्तकफापहम् ॥ ११२ ॥

बेंतकी कोंपल-दीपन है, रुचिको उत्पन्न करती है, तथा वायु, पित्त और कफको नष्ट करती है ॥ ११२ ॥

मूलशाकगुणमाह ।

शूरणगुणाः ।

शूरणो दीपनो रुच्यः कफघ्नो विशदो लघुः ।
विशेषादर्शसां पथ्यो ग्राम्यः कन्दस्तु दोषलः ११३॥

जिमींकंद-अग्निको दीपन करताहै, रुचिको उत्पन्न करता है, कफको नष्ट करता है, विशद है, हलका है और विशेषतासे, बवासीरमें पथ्य है, अर्थात् बवासीरको हरता है । ग्राममें होनेवाला कंद दोषयुक्त होताहै इसको सूरण-कन्दभी कहते हैं ॥ ११३ ॥

माणकगुणाः ।

माणकं स्वादु शीतं च गुरु शोथहरं कटु ॥११४॥

मानकन्द-स्वादु है, शीतल है, भारी है, शोथको हरनेवाला हैं, तथा कटु है, इसको महापत्र, विस्तीर्ण पत्र, मानक, भी कहते हैं ॥ ११४ ॥

कचुगुणाः ।

कच्वी सरा कटुश्यामवातकृद्गुरुपिच्छला ॥११५॥

कचुकन्द-दस्तावर है, पाकमें कटु है, आमवातको उत्पन्न करता है, भारी है, तथा पिच्छिल है इसको अरुई भी कहते हैं ॥ ११५ ॥

कदलीमूलगुणाः ।

कदल्या बलकृन्मूलं वातपित्तहरं गुरु ॥११६॥

केलेका कन्द-बलको देताहै, वातपित्तको हरता है, तथा भारी है, केलेकी जडको केलाकन्द कहते हैं ॥ ११६ ॥

केबुकमूलगुणाः ।

केबुकं कफपित्तघ्नं रोचनं वह्निदीपनम् ॥ ११७ ॥

केबुककी जड-कफ, पित्तको, नष्ट करती है, रुचिको उत्पन्न करती है,

जठराग्निको दीपन करता है । इसको केमुक, केंबू, पेचू, केचुक, पोलिनी भी कहते हैं तथा केलूट भी कहते हैं ॥ ११७ ॥

मूलकगुणाः ।

मूलकं गुरु विष्टम्भि तीक्ष्णमामं त्रिदोषकृत् ।
तदेव स्नेहपक्वं चेत्कफकृद्वातपित्तजित् ॥ ११८ ॥

कच्चीमूली–भारी है, विष्टम्भी है, चर्परी है, तथा त्रिदोषको नाश करती है, वही मूली घृत आदिकमें पकाई हुई होनेसे कफको करती है और वात तथा पित्तको जीतती है ॥ ११८ ॥

शुष्कमूलकगुणाः ।

शुष्कं त्रिदोषशमनं शोथघ्नं गरजिल्लघु ॥ ११९ ॥

सूखी हुई मूली–त्रिदोषको शमन करती है, शोथको हरती है, विषको जीतनेवाली है और हलकी है ॥ ११९ ॥

मूलकपुष्पफलगुणाः ।

तत्पुष्पं कफपित्तघ्नं तत्फलं कफवातजित् ॥ १२० ॥

मूलीके फूल–कफ और पित्तको नष्ट करते हैं । और फल (मोगरे, सींगरे,) कफ और वायुको नष्ट करते हैं ॥ १२० ॥

खण्डकर्णगुणाः ।

खण्डकर्णो कफोच्छेदी कटुपाकश्च पित्तजित् ॥ १२१ ॥

खंडकरण–(आलू विशेष कन्द) कफको फाडता है, पाकमें चरपरा है और पित्तको जीतता है ॥ १२१ ॥

वाराहीकन्दगुणाः ।

वाराहीकन्दः श्लेष्मघ्नः पित्तकृद्बलवर्द्धनः ॥ १२२ ॥

बाराहीकन्द–कफको नष्ट करता है, पित्तको उत्पन्न करता है, बलको बढाताहै । बाराही कन्दकी बेलमें पानके समान पत्र निकलते हैं प्रायः सिमलेके पहाडमें अधिक होता है इस बेलके नीचेसे कन्द निकलता है कालकाके समीप

टकसाल गांवमें इसको भेवर कहते हैं । कोई कित्थेकी जडको ही बाराहीकन्द कहते हैं, परन्तु कित्था कोलकन्द है, बाराहीकन्द भेवरको ही कहते हैं बाराही कन्द कौशिल्या नदीके समीप अधिक होता है इसके न मिलने पर कित्थाही डालना चाहिये ॥ १२२ ॥

विदारीकन्दगुणाः ।

विदारी वातपित्तघ्नी वृष्या बल्या रसायनी ॥१२३॥

विदारीकंद–वायु और पित्तको नष्ट करता है, वीर्य्य तथा बलको बढाता है, और रसायन है । विदारीकन्दकी बेल होती है इसमें ढाकके समान तीन २ पत्ते लगते हैं परन्तु इसके पत्ते ढाकसे नरम कुछ लंबे और नोकदार होते हैं, शिमलेके पहाड़में इसको सरालीकी बेल कहते हैं यह बेल यदि वृक्षपर न चढकर जमीन पर फैले तो इसकी गांठोंमेंसे जड़ें निकल कर जमीनमें घुसजाती हैं और फूलकर लम्बे आकारके कन्दसे बनजाते हैं वह एक सालतक नरम होनेसे खानेमें सुस्वादु होते हैं यही सालभरके बाद पकजांय तो पहाडी लोग भलार कहते हैं । इसकी बेलें घोडोंको भी खिलाई जाती हैं । इस बेलके कन्दको विदारीकन्द कहते हैं ॥ १२३ ॥

वंशकरीरगुणाः ।

वंशकरीराः श्लेष्मघ्नाः सकषायविदाहिनः ॥१२४॥

वंशकरीर–कफको नाश करता है, कसैला है तथा दाहको उत्पन्न करता है १२४

हस्तिकन्दादिगुणाः ।

हस्तिमध्वालुकादीनि रक्तपित्तहराणि च ।
गुरूणि स्वादुशीतानि स्तन्यशुक्रकराणि च १२५॥

हस्तिकन्द तथा मध्वालू आदि रक्तपित्तको नाश करते हैं, भारी हैं, स्वादिष्ट हैं, शीतल हैं, दूध तथा शुक्रको उत्पन्न करनेवाले हैं । हस्तिकन्दको हाथीचक भी कहते हैं ॥ १२५ ॥

पिण्डालुकगुणाः ।

पिण्डालुकं कफकरं गुरु वातप्रकोपनम् ॥ १२६ ॥

पिण्डालु—कफको उत्पन्न करता है, भारी है, वायुको कुपित करता है १२६॥

तरुटादिगुणाः ।

तरुटबिसशालूकं क्रौंचादनकशेरुकम् ।
शृंगाटकांकलोडचञ्च गुरु विष्टंभि शीतलम् ॥ १२७॥

तरुट नीलकमलकी जड, बिस, (भिस, भँसीड, लालकमलकी जड़) शालूक (श्वेत कमलकी जड) क्रौंचादन, (कमलकंदविशेष) कसेरू, सिंघाड़ा, अंक आलोडय, भारी हैं, विष्टम्भी हैं, शीतल हैं ॥ १२७ ॥

स्वेदजशाकगुणाः ।

छत्रिकास्तु पलालेक्षुकरीषक्षितिरेणुजाः ॥ सर्वाः
संस्वेदजाः शीताः कषायाः स्वादुशीतलाः ॥१२८॥
गुरवश्छर्द्यतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥ १२९ ॥

छत्रिका—(वर्षाऋतुमें उत्पन्न होनेवाली छतरी) तथा पलाल, (भूसा) ईख, गोबर, बालू और वृक्षादिकोंसे उत्पन्न होनेवाले शाकोंको संस्वेदज कहते हैं संपूर्ण संस्वेदज शाक शीतल हैं कषाय हैं, स्वादिष्ठ हैं शीतवीर्य्यवाले हैं, भारी हैं, वमन, अतीसार, ज्वर और कफरोगोंको उत्पन्न करते हैं ॥ १२८ ॥ १२९ ॥

पलालजशाकगुणाः ।

स्वादुपाकरसा रूक्षा दोषलास्तु पलालजाः॥ १३०॥

पलाल (भूसा) से उत्पन्न होनेवाले सर्व संस्वेदज शाक रूक्ष हैं, तथा दोष-जनक हैं ॥ १३० ॥

शुचिस्थलादिजातशाकगुणाः ।

श्वेताः शुचिस्थलीकाष्ठवंशगोव्रजसम्भवाः ।
नातिदोषकरा ज्ञेयाः शेषास्त्वेभ्यो विगर्हिताः १३१

स्वच्छ और पवित्र भूमिमें उत्पन्न होनेवाले, काष्ठ, बांस और जिन स्थलोंमें गौ भ्रमण करती हैं उन स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाले संस्वेदज शाकोंको अतिदोषकारक न समझे, अर्थात् अधिक हानि नहीं करते शेष अर्थात् कुत्सित पदार्थ और कुत्सित भूमिमें उत्पन्न होनेवाले संस्वेदज शाक निन्दनीय हैं ॥ १३१ ॥

फलगुणमाह ।

बालमध्यमाम्रगुणाः ।

आम्रबालं रक्तपित्तकरं मध्यन्तु पित्तलम् ॥१३२॥

बाल आम्र (जिनमें गुठली पैदा नहीं हुई ऐसी अँबियां) रक्तपित्तको उत्पन्न करती हैं मध्यम आम्र (कच्चा आम,) पित्तको उत्पन्न करता है ॥ १३२ ॥

पक्वाम्रफलगुणमाह ।

पक्वं वर्णकरं रुच्यं मांसशुक्रबलप्रदम् ।
पित्तविरोधि वातघ्नं हृद्यं गुर्वनुलोमनम् ॥ १३३ ॥

पका आम—देहके वर्णको उत्तम करता है, रुचिकारक है, मांस शुक्र, तथा बलको देनेवाला है, पित्तको हरता है, वायुको नाश करता है, हृदयको प्रिय है, भारी है, अनुलोमन (दस्तावर) है ॥ १३३ ॥

मधुना तत्क्षयप्लीहवातश्लेष्महरं परम् ॥
सघृतं वातपित्तघ्नं दीपनं बलवर्णकृत् ॥ १३४ ॥

पके आमका रस मधुसंयुक्त सेवन करनेसे—क्षय, प्लीहा, वायु, और कफको नाश करता है, घृतके साथ सेवन किया हुवा आमका रस, वातपित्तको नाश करता है, जठराग्नि दीप्त करता है, बल तथा वर्णको उत्पन्न करता है ॥१३४॥

आम्रपेषीगुणाः ।

आम्रपेषी कषायाम्ला भेदिनी कफवातजित्॥१३५॥

अमचूर—(कच्ची अमियांका छिलका दूर करके घाममें सुखाए हुए टुकडे) कषैला है, खट्टा है, भेदक, (दस्तावर) है, कफ और वायुको जीतनेवाला है ॥१३५॥

दाडिमगुणाः ।

दाडिमं हृद्यमम्लोष्णं वातघ्नं ग्राहि दीपनम् ।
कषायानुरसं प्रोक्तं कफपित्तविरोधि च ॥ १३६ ॥

अनार–हृदयको प्रिय है, खट्टा है, गरम है, वायुनाशक है, ग्राही है, जठराग्निको प्रदीप्त करता है, कषाय रसवाला है कफ और पित्तका विरोधी है ॥१३६॥

दाडिमभेदेन गुणमाह ।

द्विविधं तत्तु विज्ञेयं मधुरं चाम्लमेव च ।
मधुरन्तु त्रिदोषघ्नं आम्लं वातकफापहम् ॥ १३७ ॥
ज्वरघ्नं दीपनं पथ्यं पाके लघ्वग्निदीपनम् ॥१३८॥

अनार मीठे और खट्टे इन भेदोंसे दो प्रकारके जानना चाहिए । मीठा अनार त्रिदोषको नाश करताहै, खट्टा अनार वायु और कफको नाश करताहै ज्वर नाशक है दीपन है, पथ्य है, पाकमें लघु है, अग्नि दीपन करता है॥१३७॥१३८॥

मातुलुंगफलगुणमाह ।

मातुलुङ्गफलं हृद्यमम्लं लघ्वग्निदीपनम् ।
श्वासकासारुचिहरं तृष्णाघ्नं कण्ठशोधनम् ॥१३९॥
विबद्धे चैव हिक्कायां शूले छर्द्यांच्च शस्यते ॥१४०॥

बिजौरा निम्बू–हृदयको हितकारी है, खट्टा है, लघु है, अग्नि दीपन है, श्वास, कास, अरुचिको हरण करता है प्यासको दूर करता है कण्ठको शोधन करता है और मल मूत्रके विबंधमें, तथा हिक्का रोगमें, शूलमें और छर्दिमें परम हित करनेवाला है ॥ १३९ ॥ १४० ॥

लिम्पाकगुणाः ।

लिम्पाकं सुरभि स्वादु नात्यम्लं भक्तरोचकम् ।
वातश्लेष्महरं हृद्यं छर्दिघ्नं नातिपित्तकृत् ॥१४१॥

लिम्पाक निम्बू—सुगन्धित है सुस्वादु है बहुत खट्टा नहीं अन्नपर रुचि करनेवाला है, वायु और कफको हरनेवाला है, छर्दिको नाश करता है और पित्तको अधिक बढानेवाला नहीं ॥ १४१ ॥

जम्बीरगुणाः ।

जम्बीरं मधुरं किञ्चिदत्यम्लं पित्तकृद् गुरु ।
सुगन्धि दुर्जरं वह्निकफवातविबन्धनुत् ॥ १४२ ॥

जम्बीरी निंबू—किञ्चित् मीठा है, अत्यन्त खट्टा है पित्तको करता है गुरु है सुन्दर गन्धवाला है दुर्जर है, आम अग्नि तथा कफ वायु और विबंधको नष्ट करता है ॥ १४२ ॥

मधुकुक्कुटिकागुणाः ।

मधुकुक्कुटिका शीता श्लेष्मास्यस्यप्रसादनी ।
रुच्या स्वादुर्गुरुः स्निग्धा वातपित्तविनाशिनी १४३ ॥

मधु कर्कटी—शीतल है, कफको बढाता है, मुखको प्रसन्न करता है, रुचिकारक है, स्वादु है, भारी है, चिकना है, घात तथा पित्तको नाश करता है । इसको चकोतरा भी कहते हैं ॥ १४३ ॥

नागरंगगुणाः ।

नागरंगन्तु सुरभि विपाके दुर्जरं गुरु ।
नात्यम्लमीषन्मधुरं वृष्यं वातविनाशनम् ॥ १४४ ॥

नारंगी सुगन्धित है, पचनेमें दुर्जर है भारी है, अधिक खट्टी नहीं है, किञ्चित् मीठी है, वृष्य है, तथा वातको नाश करती है ॥ १४४ ॥

अपक्वकर्कन्धु-कोल-बदराणां गुणाः ।

कर्कन्धुकोलबदरमामं पित्तकफावहम् ॥ १४५ ॥

कर्कन्धु, और कोल, तथा बदर यह कच्चे—पित्त और कफको बढाते हैं, छोटी जातिके गोलआकारवाले बेरको कर्कन्धु कहते हैं, सामान्य बेरको कोल कहते हैं बडे बेरको बदर कहते हैं ॥ १४५ ॥

तेषां पक्वगुणाः ।

पक्वं पित्तानिलहरं स्निग्धं समधुरं सरम् ॥ १४६ ॥

पक्के बेर—पित्त तथा वातको हरते हैं और चिकने हैं मधुरता युक्त है तथा सारक हैं ॥ १४६ ॥

तेषां शुष्कगुणाः ।

तच्छुष्कं कफवातघ्नं नच पित्ते विरुध्यते ॥ १४७ ॥

सूखे बेर—कफ और वायुको नष्ट करते हैं तथा पित्तको नहीं बढाते हैं ॥ १४७ ॥

तेषां पुरातनगुणाः ।

पुराणं तृट्प्रशमनं श्रमघ्नं दीपनं लघु ॥ १४८ ॥

पुराने बेर—तृषाको शमन करतेहैं थकावटको दूर करते हैं दीपन हैं तथा हलके हैं ॥ १४८ ॥

करमर्दगुणाः ।

करमर्दं पिपासाघ्नमम्लं रुच्यञ्च पित्तकृत् ॥ १४९ ॥

करौंदा—प्यासको हरता है खट्टा है रुचिको करता है तथा पित्तको बढाता है ॥ १४९ ॥

लिकुचफलगुणाः ।

लिकुचं गुरु विष्टंभि त्रिदोषशुक्रदूषणम् ॥ १५० ॥

बडहर—भारी है विष्टम्भी है त्रिदोषको उत्पन्न करता है तथा वीर्य्यको दूषित करता है ॥ १५० ॥

आम्रातकफलगुणाः ।

आम्रातं तर्पणं बल्यं गुरु विष्टम्भ्यजीर्णकृत् ॥ १५१ ॥

अंबाडा—तर्पण है बलकारक है विष्टम्भ तथा अजीर्णको करता है ॥ १५१ ॥

कर्म्मरंगफलगुणाः ।

कर्म्मरंगन्तु तीक्ष्णोष्णं कटु पाकेऽम्लपित्तकृत् ॥ १५२ ॥

कमरख—तीक्ष्ण है, खट्टी है गर्म है, पाकमें कटु है अम्लपित्तको करनेवाली है ॥ १५२ ॥

प्राचीनामलकगुणाः ।

पानीयामलकं ग्राहि स्वाद्वम्लं मुखशोधनम्॥१५३॥

पानी आमला—ग्राही है, स्वादिष्ठ है, खट्टा है, और मुखको शोधन करता है पानी आमलेके वृक्ष जलाशयके किनारे होते हैं फल लाल रंगके और करडे होते हैं पत्र किञ्चित् लंबे होते हैं ॥ १५३ ॥

बहुवारफलगुणाः ।

बहुवारं हिमं वृष्यं श्लेष्मलं मधुरं गुरु ॥ १५४ ॥

लसोढा—शीतल है बीर्य्यवर्द्धक है, कफ करनेवाला है, मीठा है, और भारी है ॥ १५४ ॥

लवनीफलगुणाः ।

लवनीनां फलं हृद्यं सुगन्धं कफवातजित् ॥१५५॥

लवनी (लवली) के फल हृदयको हित हैं सुगन्धित हैं कफ तथा वायुको जीतते हैं । इनको हरफा रेवडी भी कहते हैं ॥ १५५ ॥

जम्बुफलगुणाः ।

जाम्बवं गुरु विष्टम्भि कषायं स्वादु शीतलम् ।
अग्निसन्दूषणं रूक्षं वातलं कफपित्तजित् ॥१५६॥

जामुनके फल—विष्टम्भकर्त्ता हैं भारी हैं कषैले हैं स्वादु हैं शीतल हैं अग्निको दूषित करते हैं रूखे हैं; वायुको बढाते हैं, कफ और पित्तको नष्ट करते हैं ॥१५६॥

भव्यफलगुणाः ।

भव्यं स्वादु कषायाम्लं हृद्यमास्यविशोधनम् १५७॥

भव्यफल—स्वादु, कषैला, खट्टा, हृदयको प्रिय मुखको शोधन करनेवाला होता है इसके वृक्ष होते हैं ॥ १५७ ॥

अपक्वतिन्दुकफलगुणाः ।

तिन्दुकं वातकृच्चामं कषायं गुरु शीतलम् ॥१५८॥

कच्चा तेंदू—वायुको नष्ट करता है कषैला है भारी है शीतल है ॥ १५८ ॥

पक्वतिन्दुकफलगुणाः।

पक्वन्तु गुरु पाके तु मधुरं कफपित्तनुत् ॥ १५९ ॥

पका तेंदू-पचनेमें गुरु है, मीठा है, और कफ तथा पित्तको नष्ट करता है तेंदूके वृक्ष जंगलोंमें प्रायः सब जगह होते हैं फल गोल हरे पकने पर पीले होते हैं, इसके वृक्षमें कहीं २ कोई कांटा भी होता है जब वृक्ष पुराना होजाता है तो इसके बीचका भाग काला होजाता है, लोग इसको केंदू तथा आबनूस भी कहते हैं॥ १५९ ॥

अपक्वपरूषकफलगुणाः।

परूषमामं वातघ्नं पित्तकारि च तत्स्मृतम् ॥१६०॥

कच्चा फालसा-वायुको नष्ट करता है, तथा पित्तको बढानेवाला कहाहै ॥१६०॥

पक्वपरूषकफलगुणाः।

पक्वं स्वादुरसं पाके शीतलं वातपित्तनुत् ॥१६१ ॥

पका फालसा-पचनेमें मीठे रसवाला है, शीतल है, वायु और पित्तको नष्ट करता है॥ १६१ ॥

अपक्वकपित्थ-फलगुणाः।

कपित्थमामं कण्डूघ्नं विषघ्नं ग्राहि वातलम् ।
मधुराम्लकषायत्वात् सौगन्ध्याच्च रुचिप्रदम्१६२॥

कैथका कच्चा फल-खाजको नष्ट करता है विषको दूर करता है, ग्राही है, वायुको बढाता है, मीठा है, खट्टा है, कषैला होनेसे तथा सुगन्धित होनेसे रुचिको पैदा करता है ॥ १६२ ॥

पक्वकपित्थफलगुणाः।

तदेव पक्वं दोषघ्नं गुरु ग्राहि विषापहम् ॥ १६३ ॥

कैथका पका फल-त्रिदोषको नष्ट करता है, भारी है ग्राही है विषविकारको नाश करता है॥ १६३ ॥

अपक्वाम्लवेतसगुणाः ।

अम्लवेतसमत्यम्लमानाहकफवातजित् ॥ १६४ ॥

कच्चा अमलबेत—अत्यन्त खट्टा है तथा अनाहरोग, कफ, और वायुको जीतता है ॥ १६४ ॥

पक्वाम्लवेतसगुणाः ।

तदेव सिद्धं दोषघ्नं श्रमघ्नं ग्राहि गुर्वपि ॥ १६५ ॥

वही अम्लबेत पकनेपर त्रिदोषको नष्ट करता है थकावटको दूर करता है मलको बांधता है और भारी है ॥ १६५ ॥

महार्द्रकगुणाः ।

महार्द्रं दीपनं ग्राहि रूक्षं वातकफापहम् ॥ १६६ ॥

महार्द्र फल—दीपन है, ग्राही है, रूखा है, वात और कफको नाश करता है इसको बन अदरख भी कहते हैं इसके फल चरचराहटमें अदरखके समान होते हैं ॥ १६६ ॥

अपक्वतिन्तिडीफलगुणाः ।

अम्लिकायाः फलं बालं वातघ्नं कफपित्तकृत्॥१६७॥

कच्ची इमली—वायुको हरती है और कफ पित्तको करती है ॥ १६७ ॥

पक्वतिन्तिडीफलगुणाः ।

तत्पक्वं दीपनं रुच्यमत्युष्णं कफवातहृत् ॥१६८॥

इमलीके—पकेहुए फल—दीपन हैं रुचिको करते हैं अत्यन्त गरम हैं, कफ और वायुको नष्ट करते हैं ॥ १६८ ॥

करुणनिम्बूकगुणाः ।

करुणं कफवातास्रमेदोघ्नं पित्तकोपनम् ॥ १६९ ॥

करुणके फल—कफको नष्ट करते हैं, वातरक्त तथा मेदरोगको हरते हैं और पित्तको कुपित करते हैं इसको कन्ना नींबू भी कहते हैं ॥ १६९ ॥

कोषाम्रफलगुणाः।

कोषाम्रं कफवातघ्नं दीपनं ग्राहि तत्परम् ॥१७०॥

कोशाम्र—कफ तथा वायुको नष्ट करता है दीपन है और ग्राही है ॥ १७० ॥

चीरुकफलगुणाः।

चीरुकं रोचनं चाम्लं विदाहि कफपित्तकृत् ॥१७१॥

चिरुकफल—रुचि करता है, खट्टा है, दाहको उत्पन्न करता है कफ तथा पित्तको बढाता है ॥ १७१ ॥

पक्वकण्टाफलगुणाः।

कण्टाफलं सुमधुरं बृंहणं गुरु शीतलम्।
दुर्जरं वातपित्तघ्नं श्लेष्मशुक्रबलप्रदम् ॥ १७२ ॥

कटहलका पक्का फल मीठा है, बृंहण है भारी है, शीतल है, दुर्जर है वात और पित्तको नष्ट करता है कफ वीर्य्य तथा बलको बढाता है ॥ १७२ ॥

अपक्वकण्टाफल-तदस्थिगुणाः।

कण्टाफलमपक्वन्तु कषायं स्वादु शीतलम्।
कफपित्तहरञ्चैव तत्फलास्थ्यपि तद्गुणम् ॥ १७३ ॥

तथा कच्चा कटहल—कषैला है, स्वादु है, शीतल है, कफ और पित्तको नाश करता है, इसकी गुठलीके गुण भी इसीके समान जानने चाहिये ॥ १७३ ॥

तद्बीजं सर्पिषा युक्तं स्निग्धं हृद्यं बलप्रदम् ॥१७४॥

इसके बीजोंको घीमें पकालिया जाय तो वे चिकने होते हैं, हृदयको हितकारी हैं, और बलको बढाते हैं ॥ १७४ ॥

तालफलगुणाः।

वातहा बृंहणो बल्यः कृमिहा कुष्ठनाशनः।
रक्तपित्तहरः स्वादुस्तालः सप्तगुणान्वितः ॥१७५॥

ताड़का फल-वायुको नष्ट करता है, बृंहण है, बलकारक है कृमियोंको तथा कुष्ठको नष्ट करता है, और रक्तपित्तको हरता है, तथा स्वादु है, ये सात गुण तालके फलमें हैं ॥ १७५ ॥

तालशस्यगुणाः ।

तालशस्यन्तु मधुरं मूत्रलं वातपित्तजित् ॥ १७६ ॥

तालका छोटा फल मधुर है, मूत्रको पैदा करता है, और वातपित्तको नष्ट करता है ॥ १७६ ॥

तालास्थिमज्जागुणाः ।

तालास्थिमज्जा मधुरा मूत्रला शीतला गुरुः ।
कफकृमिहरा वृष्या वातला दुर्जरा मता ॥ १७७ ॥

ताडकी गुडलीकी मज्जा मीठी है, मूत्रको बढाती है, शीतल है भारी है, कफ तथा कृमियोंको हरती है वायुको करती है तथा दुर्जर है ॥ १७७ ॥

सामान्यनारिकेलगुणाः ।

नारिकेलं गुरु स्निग्धं पित्तघ्नं स्वादु शीतलम् ।
बलमांसकरं हृद्यं बृंहणं बस्तिशोधनम् ॥ १७८ ॥

नारियलका फल-भारी है, चिकना है, पित्तनाशक है, स्वादिष्ठ है शीतल है, बल, तथा मांसको उत्पन्न करता है, हृदयको प्रिय है, बृंहण है, बस्तिशोधन है १७८॥

कोमलनारिकेलगुणाः ।

विशेषतः कोमलनारिकेलं निहन्ति पित्तज्वर-
मस्रदोषान् ॥ तृट्छर्दिदाहामयमाशु हन्यात्
सरक्तपित्तप्रभवांश्च रोगान् ॥ १७९ ॥

कोमल नारियल-विशेष करके पित्तज्वर और रुधिर विकारोंको नाश करता है प्यास, वमन, दाहको शीघ्र नाश करता है, और रक्तपित्तसे होनेवाले रोगोंको दूर करता है ॥ १७९ ॥

कदलीफलसाधारणगुणाः ।

कदलं मधुरं वृष्यं कषायं नातिशीतलम् ।
रक्तपित्तहरं हृद्यं रुच्यं श्लेष्मकरं गुरु ॥ १८० ॥

केलाका फल—मीठा है, वृष्य है, कषाय है, विशेष शीतल नहीं है, रक्तपित्तको हरनेवाला है हृदयको प्रिय है, रुचिकारक है कफको उत्पन्न करता है भारी है १८० ॥

चम्पककदलीगुणाः ।

तदेव चम्पकाख्यन्तु वातपित्तहरं गुरु ।
वृष्यञ्चैवातिशीतञ्च मधुरं रसपाकयोः ॥ १८१ ॥

पीले केलेका फल—वात तथा पित्तको हरनेवाला है, भारी है वृष्य है, अत्यन्त शीतल है रसमें तथा पाकमें मीठा है ॥ १८१ ॥

द्राक्षागुणाः ।

द्राक्षा तु मधुरा स्निग्धा वृष्या शीतानुलोमनी ।
बल्या वृष्या क्षतक्षीणतृषावातास्रपित्तजित् ॥१८२॥

द्राक्षा (मुनक्का) मधुर है, चिकना है, वृष्य है, शीतल है अनुलोमन (मलको पकाकर निकालनेवाला) है, बल दायक है, वीर्य्य वर्द्धक है क्षत क्षीणता, प्यास, वायु रक्तपित्तको जीतनेवाला है ॥ १८२ ॥

खर्जूरफलगुणाः ।

खर्जूरं मधुरं वृष्यं बृंहणं गुरु शीतलम् ।
क्षयेभिघाते दाहे च वातपित्ते च तद्धितम् ॥१८३॥

खजूरके फल—मधुर हैं, वृष्य हैं, पुष्टिकारक हैं, भारी हैं, शीतल हैं, क्षयमें, अभिघात (घाव, चोट) में, दाहमें, वात तथा पित्त रोगोंमें हित हैं ॥ १८३ ॥

क्षीरवृक्षाणां फलगुणाः ।

क्षीरकायाः फलं विद्यात् गुरु विष्टम्भि शीतलम् ।
कषायमधुरं साम्लं नातिमारुतकोपनम् ॥ १८४ ॥

दूध वाले वृक्षोंके फल भारी होतेहैं विष्टम्भी हैं, शीतल है, कषैले हैं, मधुर हैं खट्टे होते हैं, वायुको अत्यन्त कुपित नहीं करते ॥ १८४ ॥

गाम्भारीफलगुणाः ।

गाम्भारिकाफलं ग्राहि सतिक्तं मधुरं गुरु ।
केश्यं रसायनं मेध्यं शीतलं दाहपित्तजित् ॥१८५॥

गम्भारीके फल—ग्राही हैं, तीखे हैं, मधुर हैं, भारी हैं, केशोंको हित कारक हैं रसायन हैं, मेधाजनक हैं, शीतल हैं दाह और पित्तको जीतनेवाले होते हैं ॥ १८५ ॥

बालबिल्वगुणाः ।

बिल्वं बालं कषायोष्णं पाचनं वह्निदीपनम् ।
संग्राहि तिक्तकटुकं तीक्ष्णं वातकफापहम् ॥१८६॥

कच्चा बेल—कषैला है, गरम है, पाचक है, अग्निको प्रदीप्त करता है । ग्राही है, तीखा है, कटु है तीक्ष्ण है, वातको तथा कफको दूर करता है ॥ १८६ ॥

पक्वबिल्वगुणाः ।

पक्वं सुगन्धि मधुरं दुर्जरं ग्राहि दोषलम् ॥ १८७ ॥

पक्का बेल—सुगन्धित है, मधुर है, दुर्जर है, ग्राही है, दोषोत्पादक है १८७॥

बालबिल्वस्य प्राधान्यमाह ।

फलेषु परिपक्वेषु ये गुणाः समुदाहृताः ।
बिल्वादन्यत्र विज्ञेया बिल्वमामं गुणोत्तरम् ॥१८८॥

बेलको छोडकर और सब प्रकारके फल पकेहुए विशेष गुणवाले होतेहैं परन्तु बेलका कच्चा ही फल अधिक गुणवाला है ॥ १८८ ॥

बिल्वपेषिकागुणाः ।

कफवातामशूलघ्नी ग्राहिणी बिल्वपेषिका ॥१८९॥

बेलका सूखा गूदा कफ, वात, आम और शूलनाशक है तथा ग्राही है १८९॥

बकुलफलगुणाः ।

बकुलं मधुरं ग्राहि दन्तस्थैर्यकरं परम् ॥ १९० ॥

मौलसिरीके फल—मधुर हैं ग्राही हैं दांतोंको अत्यंत स्थिर करनेवाले हैं१९०॥

प्रियालफलगुणाः ।

प्रियालं मधुरं स्निग्धं बृंहणं वातपित्तजित् ॥१९१॥

चिरोंजी—मधुर है चिकनी है, बृंहण है बात तथा पित्तको जीतनेवाली है १९१॥

मधूकफलगुणाः ।

मधूकस्य फलं पक्वं वातपित्तप्रणाशनम् ॥ १९२ ॥

महुवाका पका फल—वात तथा पित्तको नाश करता है ॥ १९२ ॥

भ्रष्टनिष्पावफलगुणाः ।

निष्पावकफलं भ्रष्टं बद्धवर्चस्करं गुरु ॥ १९३ ॥

सेमके भूँजे हुए फल—मलको बांधनेवाले तथा भारी हैं॥ १९३ ॥

वेत्रफलगुणाः ।

फलं वेत्रस्य वातघ्नमम्लपित्तबलासकृत् ॥ १९४ ॥

बेतके फल—वायुको नाश करते हैं अम्लपित्त तथा कफको उत्पन्न करते हैं ॥ १९४ ॥

फल्गुफलगुणाः ।

फल्गोः फलं गुरु ग्राहि तर्पणं स्वादु शीतलम् १९५॥

कठूमरके फल—भारी हैं, ग्राही हैं, तर्पण (तृप्ति) कारक हैं, स्वादिष्ट हैं, शीतल हैं ॥ १९५ ॥

त्रिफलासाधारणगुणाः ।

त्रिफला तु त्रिदोषघ्नी नात्युष्णा मलभेदिनी॥१९६॥

त्रिफला—त्रिदोषको नाश करती है, अत्यन्त उष्ण नहीं है, मलभेदक है ॥१९६॥

हरीतकीनां भेदमाह ।

जीवन्ती रोहिणी चैव विजया चाभयामृता ।
पूतना कालिका चेति पथ्या सप्तविधा मता ॥ १९७ ॥

जीवन्ती, रोहिणी, विजया, अभया, अमृता, पूतना, कालिका, इन भेदोंसे हरड सात प्रकारकी कही है ॥ १९७ ॥

तेषां लक्षणमाह ।

सुवर्णवर्णा जीवन्ती रोहिणी कपिलद्युतिः ।
अलाबुवृत्ता विजया पंचाशा चाभया स्मृता १९८॥
स्थूलमांसामृता ज्ञेया पूतनास्थिमती मता ।
त्र्यंशा च कालिकेत्येवं सप्तजातिहरीतकी ॥ १९९ ॥

जीवन्ती हरड-पीले रङ्गकी होती है, रोहिणी पिंगल (वानरके) रंगवाली होती है, विजया अलावु (तूंमा, कद्दू) के समान वृत्त (गोल और लंबी) होती है, अभया पांच रेखावाली होती है अमृता स्थूल मांस (मोटे बकले) वाली होती है, पूतना छोटी गुठली वाली होती है, कालिका तीन रेखा वाली होती है ॥ १९८ ॥ १९९ ॥

तेषां प्रयोगविधिः ।

स्नेहपानेषु सर्वेषु जीवन्ती च प्रशस्यते ।
रोहिणी क्षयरोगेषु विजया सर्वकर्म्मसु ॥ २०० ॥
पूतना लेपने ज्ञेया चामृता तु विरेचने ।
अभया नेत्ररोगेषु चूर्णयोगेषु कालिका ॥ २०१ ॥

घृतादि संपूर्ण स्नेहोंमें जीवन्ती हरड ग्रहण करने योग्य है, रोहिण, क्षय-रोगमें, विजया सर्व कामोंमें पूतना लेपमें, अमृता विरेचनमें अभया नेत्ररोगोंमें और कालिका (जंगी हरड या काली हरड) चूर्णोंके योगमें डालनी चाहिये ॥ २०० ॥ २०१ ॥

हरीतकीशब्दस्य निरुक्तिकथनम् ।

हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हरते सर्वरोगांश्च तेन नाम्ना हरीतकी ॥ २०२ ॥

हरके भवन (कैलाश) में पैदा हुई है और स्वभावसे हरे रंगकी है, और सब रोगोंको हरनेवाली है इसलिये हरीतकी नामसे प्रसिद्ध है ॥ २०२ ॥

हरीतक्या उत्पत्तिकथनम् ।

पीयूषं पिबतस्त्रिविष्टपपतेर्ये बिन्दवो निर्गता-
स्तेभ्योऽभूदभया दिवाकरकरश्रेणीव दोषापहा ॥
कालिन्दीव बलप्रमोदजननी गौरीव शूलिप्रिया
वह्नेर्द्योतकरी घृताहुतिरिव क्षोणीव नानारसा २०३॥

जब इन्द्रने अमृत पिया था उस समय जो बिन्दुएं पृथ्वी पर गिरीं उनसे हरडे पैदा हुई वह हरडे जैसे सूर्य्यकी किरणें अन्धकारको नष्ट करती हैं ऐसे रोगोंके समूहको नष्ट करनेवाली हुई । तथा कालिन्दी (यमुना) के समान बल और आनन्दको उत्पन्न करनेवाली वैसेही मनुष्योंके मलको दूर कर बल और आनन्दको देनेवाली है । और जैसे पार्वतीजी महादेवका हित चाहनेवाली हैं वैसेही हरडे भी मनुष्योंको प्रियकारक हैं । जैसे घीकी आहुति डालनेसे अग्नि प्रज्वलित होती है ऐसे ही हरीतकीके सेवनसे मनुष्योंकी जठराग्नि चेतन होती है । और पृथ्वीके समान अनेक रसोंवाली है ॥ २०३ ॥

द्रव्यविशेषेण हरीतकीभक्षणगुणाः ।

वातघ्नी लवणैः पथ्या पित्तघ्नी घृतसंयुता ।
नागरेण कफं हन्ति सर्वदोषान् गुडान्विता ॥२०४॥

हरड लवणके साथ सेवन करनेसे वायुको नष्ट करती है । घीके साथ पित्तको नष्ट करती है । सोंठके साथ कफको नष्ट करती है गुडके साथ सब दोषोंको नष्ट करती है ॥ २०४ ॥

हरीतकीसाधारणगुणाः ।

पथ्या पञ्चरसायुष्या चक्षुष्याऽलवणा सरा ।
मेध्योष्मा दीपनी शोथदोषकुष्ठव्रणापहा ॥ २०५ ॥

हरड पांच रसोंवाली है, आयुको बढानेवाली है, नेत्रोंको हितकारी है, लवण-रसरहित है। दस्तावर है, मेधाजनक है, उष्णवीर्य्य है दीपन है और शोथ त्रिदोष कुष्ठ तथा व्रणोंको नष्ट करती है ॥ २०५ ॥

आमलकीफलगुणाः ।

तद्वद्धात्री विशेषेण वृष्या शीतैव वीर्य्यतः ।
हंति वातं तदम्लत्वात् पित्तं माधुर्य्यशैत्यतः॥२०६॥
कफं रूक्षकषायत्वात् फलेभ्योप्यधिकं हि तत् ।
आदावन्ते च मध्ये च भोजनस्य प्रशस्यते॥२०७॥
निरत्ययं दोषहरं फले त्वामलकीफलम् ॥ २०८ ॥

हडके समान ही आमले भी गुणदायक हैं परन्तु विशेषतासे वीर्य्यको बढाते हैं और शीत वीर्य्य हैं खट्टेपनसे वायुको मीठेपनसे पित्तको, रूखे तथा कषैलेपनसे कफको नष्ट करते हैं इसीलिये और सब फलोंकी अपेक्षा आमले अधिक गुणवाले माने हैं भोजनके आदिमें तथा मध्यमें और अन्तमें नित्यप्रति सेवन करनेसे सब दोषोंको हरते हैं यह आमलेके गुण हैं ॥ २०६ ॥ २०७ ॥ २०८ ॥

विभीतकफलगुणाः ।

विभीतं भेदि तीक्ष्णोष्णं कृमिवैस्वर्यनाशनम् ।
चक्षुष्यं स्वादुपाकं च कषायं कफपित्तनुत् ॥२०९॥

बहेडा—भेदन करताहै, तीक्ष्ण है, गर्म है, कृमिरोगको और स्वरभङ्गको नष्ट करता है। नेत्रोंकी ज्योतिको बढाता है पाकमें स्वादु है कषैला है और कफ तथा पित्तको नाश करताहै ॥ २०९ ॥

पथ्यामज्जागुणाः ।

पथ्यामज्जा तु चक्षुष्या वातपित्तहरा गुरुः ॥२१०॥

हरडकी मींगी—नेत्रोंका हित करतीहै और वात तथा पित्तको नष्ट करती है और भारी है ॥ २१० ॥

विभीतकामलयोर्मज्जागुणाः ।

विभीतमज्जा तृट्छर्दिकफवातहरा लघुः ।
कषाया मेदकृच्चापि धात्रीमज्जापि तद्गुणा ॥२११॥

बहेडेकी मींगी—प्यास, बमन, कफ, वायु, इनको हरनेवाली है, हलकी है, कषैली है, मेदको बढाती है । यही गुण आंवलेकी मीगीमें भी जानने ॥ २११ ॥

बदरफलमज्जागुणाः ।

कोलमज्जा तु मधुरा पित्तच्छर्दितृषापहा ॥ २१२ ॥

बेरकी मींगी—मीठी है, पित्तको, छर्दिको और तृषाको हरती है ॥ २१२ ॥

कूष्माण्डफलमज्जागुणाः ।

कूष्मांडमज्जा वृष्या स्यात् पित्तनुद्वस्तिशोधना ॥२१३॥

पेठेकी मींगी (मज्जा, मगज, बीजोंके अन्दरकी गिरी) बीर्यवर्द्धक है, पित्त और कफको नाश करती है, और बस्तिको शोधन करती है, ॥ २१३ ॥

अनुक्तमज्जागुणाः ।

यस्य यस्य फलस्येह वीर्य्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानं हि विनिर्दिशेत् ॥२१४॥

जिस २ फलका जैसा २ वीर्य्य होता है, उसकी मींगीमें भी उसीके समान गुण जानना ॥ २१४ ॥

इति फलवर्गः ।

अथ मत्स्यवर्गमाह ।

मत्स्यसामान्यगुणाः ।

मत्स्यास्तु बृंहणाः सर्वे गुरवः शुक्रवर्द्धनाः ।
बल्याः स्निग्धोष्णमधुराः कफपित्तकराः स्मृताः२१५
व्यायामाध्वरतानां च वातार्तानां च पूजिताः ।
मत्स्याशिनो न बाधन्ते रोगा वातसमुद्भवाः ॥२१६॥

सब प्रकारकी मछलियें पुष्टिकारी तथा भारी और बीर्य्य वर्द्धक होती हैं, तथा बलको बढाती हैं, गर्म हैं चिकनी हैं, मीठी हैं, कफ तथा पित्तको बढाती हैं ॥ कसरत करनेवालोंको रास्ता चलनेवालोंको वायुसे पीडित मनुष्योंको मछरियोंका खाना परम हितकारक है, मछली खानेवाले मनुष्यको वायुसे उत्पन्न हुए रोग कभी भी बाधा नहीं करते ॥ २१५ ॥ २१६ ॥

बृहन्मत्स्यगुणाः ।

महाप्रमाणा गुरवः शुक्रला बद्धवर्चसः ॥ २१७ ॥

महामच्छ--भारी हैं बीर्य्यको उत्पन्न करतेहैं मलको बांधतेहैं ॥ २१७ ॥

क्षुद्रमत्स्यगुणाः ।

क्षुद्रमत्स्यास्तु लघवो ग्राहिणो ग्रहिणीहिताः२१८॥

छोटी मछलियें--हलकी ग्राही तथा संग्रहणीमें हितकारक होती हैं ॥ २१८ ॥

कृष्णवर्णमत्स्यगुणाः ।

कृष्णमत्स्या लघुस्निग्धा वातघ्ना वह्निवर्द्धनाः॥२१९॥

काली मछलियें--हलकी, चिकनी, वातघ्न और अग्निवर्द्धक होती हैं ॥ २१९ ॥

पाण्डुमत्स्यगुणाः ।

पांडुरा दोषलाः स्निग्धा गुरवो भिन्नवर्चसः॥२२०॥

पांडुर वर्णकी मछलियें--त्रिदोषको करती हैं चिकनी हैं, भारी हैं, मलको भेदन करती हैं ॥ २२० ॥

क्लिन्नशुष्कमत्स्ययोर्गुणाः ।

कुथिता दोषला मत्स्याः शुष्का विष्टंभिदुर्जराः २२१

कुथित मछलियें—दोषवाली होती हैं । सूखी मछलियें विष्टम्भी तथा दुर्जर होती हैं॥ २२१ ॥

लवणसंयुक्तमत्स्यगुणाः ।

लवणैस्ताडिता मत्स्याः कफपित्तकराः सराः २२२॥

लवणयुक्त मछलियें कफ और पित्तको करती हैं और दस्तावर हैं॥ २२२ ॥

सामुद्रिकमत्स्यगुणाः ।

सामुद्रा गुरवो वृष्याः स्निग्धोष्णा वातनाशनाः ।
पित्तलास्तु विशेषेण मांसाशित्वाद्बलावहाः॥२२३॥

समुद्रकी मछलियें—भारी हैं, बीर्य्यकारक हैं, चिकनी हैं, गर्म हैं, वातनाशकहैं पित्तको बढाती हैं, प्रायः मांसखानेवाली होनेसे सब मछलियोंसे बलवान हैं॥२२३॥

नादेयमत्स्यगुणाः ।

नादेयाः श्लेष्मला वृष्या मधुराः स्वल्पवर्च्चसः २२४

नदीकी मछली—कफकारक हैं वृष्य हैं, मधुर हैं अल्पमल करनेवाली हैं॥२२४॥

सरोवर—तडागसम्भूतमत्स्यगुणाः ।

सरस्तडागसम्भूताः स्निग्धाः स्वादुरसाःस्मृताः २२५

सर तथा तडागमें पैदा हुई मछली चिकनी हैं, तथा स्वादिष्ट हैं ॥ २२५ ॥

ह्रदजातमत्स्यगुणाः ।

महाह्रदेषु बलिनः स्वल्पाऽम्भस्यबलाः स्मृताः ।
दुर्नामानिलदोषघ्नाः कृमिदूषीविषापहाः॥ २२६ ॥
चक्षुष्या मधुराः पाके स्वल्पमेधाग्निवर्द्धनाः॥२२७॥

महा ह्रद (अगाध) जलमें उत्पन्न होनेवाली मछली बलवान हैं थोडे जलमें पैदा हुई मछली बलरहित हैं, बवासीर, वायुके विकारोंको दूर करती हैं, कृमिरोग

तथा दूषी विषको नाश करती हैं नेत्रोंको हितकारक हैं, पाकमें मधुर हैं, मेधा तथा अग्निको किञ्चित् बढानेवाली हैं ॥ २२६ ॥ २२७ ॥

रोहितमत्स्यगुणाः ।

रोहितः सर्वमत्स्यानां वरो वृष्योऽर्दितार्तिजित् ।
कषायानुरसः स्वादुर्वातघ्नो नातिपित्तलः ॥२२८॥

रोहित मछली–सब मच्छियोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ है वृष्य है, अर्दितरोगको जीतनेवाली है। कषाय रसवाली है स्वादिष्ठ है, वातनाशक है, अति पित्तल नहीं है ॥ २२८ ॥

भाकुटमत्स्यगुणाः ।

भाकुटो मधुरः शीतो वृष्यः श्लेष्मकरो गुरुः ।
आमवातकरो हृद्यो वातपित्तहरो मतः ॥ २२९ ॥

भाकुट मछली–मधुर है, शीतल है, वृष्य है, कफकारक है, भारी है, आमवातको करनेवाली है हृदयको प्रिय है और वात तथा पित्तको हरनेवाली कही जाती है ॥ २२९ ॥

पाठीनमत्स्यगुणाः ।

पाठीनः श्लेष्मलः स्निग्धो मधुरः सकषायवान् ।
बल्यो वृष्यः कटुः पाके रोचनो वातपित्तजित् २३०

पाठीन मछली–कफकारक है, स्निग्ध है, मधुर है, कषैली है, बलकारक है, वृष्य है, पचनेमें कटु है, रुचिकारक है, वात तथा पित्तको जीतनेवालीहै,॥२३०॥

शिलिन्दमत्स्यगुणाः ।

शिलिन्दः श्लेष्मलो बल्यो विपाके मधुरो गुरुः ।
आमवातकरो हृद्यो वातपित्तहरो मतः ॥ २३१ ॥

शिलिन्द मछली–कफकारक है, बलकारक है, पचनेमें मधुर है, भारी है, आमवात कारक है, हृदयको प्रिय है, वात तथा पित्तको हरनेवाली है ॥ २३१ ॥

आडिमत्स्यगुणाः ।

आडिमत्स्यो गुरुः स्निग्धो वातश्लेष्मप्रकोपनः २३२॥

आडी मछली—भारी है, स्निग्ध है, वात तथा कफको कुपित करती है॥२३२॥

भल्लकीमत्स्यगुणाः ।

भल्लकी मधुरः शीतो वृष्यः श्लेष्मकरो गुरुः॥२३३॥

भल्लकी मछली—मधुर है, शीतल है, वृष्य है, कफकारक है और भारी है ॥ २३३ ॥

चित्रफलमत्स्यगुणाः ।

चित्रफलो गुरुःस्वादुः स्निग्धो वृष्यो बलप्रदः २३४

चित्रफल मछली—भारी है, स्वादिष्ट है, स्निग्ध है, वृष्य है, बलदायकहै॥२३४॥

गर्गरमत्स्यगुणाः ।

गर्गरो मधुरः स्निग्धो गुरुर्वातविनाशनः ॥ २३५ ॥

गर्गर मछली—मधुर है, स्निग्ध है, भारी है, तथा वात विनाशक है ॥२३५॥

नन्दावर्त्तमत्स्यगुणाः ।

नन्दावर्तस्तु संग्राही कफपित्तविनाशनः ॥ २३६ ॥

नन्दावर्त्त मछली—संग्राही है, कफ तथा पित्तको विनाश करती है ॥ २३६ ॥

कुलिशमत्स्यगुणाः ।

कुलिशो मधुरो हृद्यः कषायो दीपनो मतः ।
बल्यः स्निग्धो लघुर्ग्राही हितो वाते च रोचकः२३७॥

कुलिश मछली—मधुर है, हृदयको प्रिय है, कषैली है, दीपन है, बलकारक है, स्निग्ध है हलकी है, ग्राही है, वातरोगोंमें हितकारक है, रोचक है ॥ २३७ ॥

इलिशमत्स्यगुणाः ।

इलिशो मधुरो हृद्यः पित्तश्लेष्मामवर्द्धनः ।
भृशं व्यवायनित्यानां हितः शीतोग्निकृल्लघुः ॥२३८॥

इलिश मछली—मधुर है, हृदयको हितकारक है, पित्त, कफ, तथा आमको बढानेवाली है, नित्य, अत्यन्त मैथुन करनेवाले मनुष्योंको हितकारक है, शीतल है, अग्निको उत्पन्न करनेवाली है तथा लघु (हलकी) है ॥ २३८ ॥

वापुषमत्स्यगुणाः ।

वापुषो मधुरो वृष्यो बृंहणो धातुवर्द्धनः ॥ २३९ ॥

वापुष मछली—मधुर है, वृष्य है, धातुवर्द्धक है ॥ २३९ ॥

बृहच्छफरीमत्स्यगुणाः ।

स्निग्धास्यकण्ठरोगघ्नी श्रेष्ठा प्रोष्ठी प्रकीर्तिता २४०

श्रेष्ठ प्रोष्ठी बड़ी सफरी या सहरी मछली—स्निग्ध है, मुख और कण्ठरोगोंको दूर करती है ॥ २४० ॥

मद्गुरमत्स्यगुणाः ।

मद्गुरो मधुरः स्निग्धः संग्राही शुक्रलो गुरुः ॥२४१॥

मद्गुर मछली—मधुर है, स्निग्ध है, संग्राही है, शुक्रको पैदा करती है, तथा भारी है ॥ २४१ ॥

शृंगीमत्स्यगुणाः ।

शृङ्गी स्वादुरसा स्निग्धा बृंहणी कफकोपिनी॥२४२॥

शृङ्गी मछली—स्वादिष्ठ है, स्निग्ध है, बृंहण है, तथा कफको कुपित करनेवाली है ॥ २४२ ॥

शकुलमत्स्यगुणाः ।

शकुलो मधुरो ग्राही रूक्षः पित्तास्रजिद्गुरुः॥२४३॥

शकुल मछली—मधुर है, ग्राही है, रूखी है, रक्तपित्तको जीतनेवाली है, भारी है ॥ २४३ ॥

वर्मुषमत्स्यगुणाः ।

वर्मुषो वातहा स्निग्धो ग्राही दोषविनाशनः॥२४४॥

वर्मुष मछली—वातनाशक है, स्निग्ध है ग्राही है, दोषोंको नाश करनेवाली है ॥ २४४ ॥

वर्मिमत्स्यगुणाः ।

वर्मिमत्स्यो गुरुर्वृष्यः कषायो रक्तपित्तहा ॥२४५॥

वर्मि मछली–भारी है, वृष्य है, कषैली है, तथा रक्तपित्तको नाश करनेवाली है ॥ २४५ ॥

फलिमत्स्यगुणाः ।

फलिः स्वादुर्गुरुः स्निग्धो बलकृच्छुक्रवर्द्धनः॥२४६॥

फलि मछली–स्वादिष्ट है भारी है, स्निग्ध है, बलकारक है, तथा शुक्रको बढानेवाली है ॥ २४६ ॥

चिडंगमत्स्यगुणाः ।

चिडंगस्तु गुरुर्ग्राही मधुरो बलवर्द्धनः ।
मेदःपित्तास्रजिद्वृष्यो रोचनः कफवातलः ॥२४७॥

चिडंग मछली–भारी है, ग्राही है, मधुर है, बलको बढानेवाली है । मेद तथा रक्तपित्तको जीतनेवाली है, वृष्य (वीर्य्य तथा धातुओंको बढ़ानेवाली) है, रोचक है, कफ तथा वातको उत्पन्न करती है ॥ २४७ ॥

कवपीमत्स्यगुणाः ।

कवपी मधुरा स्निग्धा बल्या वातकफापहा॥२४८॥

कवपी मछली–मधुर है, स्निग्ध है, बलकारक है, वात तथा कफको नाश करती है ॥ २४८ ॥

शकलीमत्स्यगुणाः ।

शकली रोहिताकारा भूमौ प्रायश्चरत्यसौ ।
गुर्वी पाके च मधुरा भेदिनी दोषकोपनी ॥ २४९ ॥

शकली मछली–रोहित मछलीके आकारवाली तथा प्रायः भूमिमें चलनेवाली होती है भारी है पचनेमें मधुर है, भेदन (दस्तावर) है, तीनों दोषोंको कुपित करनेवाली है ॥ २४९ ॥

गडिशमत्स्यगुणाः ।

गडिशो मधुरो ग्राही बल्यो वह्निप्रदो गुरुः ॥२९०॥

गडिश मछली-मधुर है, ग्राही है, बलकारक है, अग्निदीपक है, भारी है २९०

चन्द्रकमत्स्यगुणाः ।

चन्द्रकस्त्वनभिष्यन्दी मधुरो बलवर्द्धनः ॥ २९१ ॥

चन्द्रक मछली-अभिष्यन्दी नहीं है, मधुर है, बलको बढानेवाली है ॥२९१॥

चम्पकुन्दमत्स्यगुणाः ।

चम्पकुन्दो गुरुर्वृष्यो मधुरो वातपित्तजित् ।
शुक्रलो बलकृत्प्रोक्तः स्नेहनः श्लेष्मकोपनः २९२

चम्पकुन्द मछली-भारी है, वृष्य है, मधुर है, वात तथा पित्तको जीतनेवाली है, शुक्रको उत्पन्न करती है, बलकारक है, स्नेहन (चिकनी) है तथा कफको कुपित करती है ॥ २९२ ॥

दण्डिमत्स्यगुणाः ।

दण्डिकः कफजित्तिक्तो वातपित्तहरो लघुः ॥२९३॥

दंडिक मछली-कफको जीतनेवाली है, तीखी है, वात तथा पित्तको हरनेवाली है, और हलकी है ॥ २९३ ॥

त्रिकण्टकमत्स्यगुणाः ।

त्रिकण्टः पित्तहा रूक्षो दीपनः कफजिल्लघुः॥२९४॥

त्रिकण्टक मछली-पित्तनाशक है, रूखी है, दीपन है, कफको जीतनेवाली है तथा लघु है ॥ २९४ ॥

मलङ्गीमत्स्यगुणाः ।

मलङ्गी मधुरा हृद्या वातघ्नी श्लेष्मला गुरुः ॥२९५॥

मलङ्गी मछली-मधुर है, हृदयको हितकारी है, वात नाशक है, कफको उपन्न करती है, तथा भारी है ॥ २९५ ॥

खलिशमत्स्यगुणाः ।

खलिशः कथितो बल्यो वातपित्तकफापहा ।
रूक्षो लघुः शूलहरः किञ्चिदामविनाशनः ॥२५६॥

खलिश मछली–बलकारक है, वात, पित्त तथा कफको नाश करती है, रूखी है, हलकी है, शूलको हरनेवाली है, किञ्चित् आमनाशक है ॥ २५६ ॥

चलदङ्गमत्स्यगुणाः ।

चलदङ्गोऽनभिष्यन्दी हितो वातेषु रोचनः॥२५७॥

चलदङ्ग मछली–अभिष्यन्दी नहीं है, वात विकारोंमें हितकारी है, तथा रोचक है ॥ २५७ ॥

गडकमत्स्यगुणाः ।

गडको मधुरो रूक्षः कषायः शीतलो लघुः ॥२५८॥

गडक मछली–मधुर है, रुखी है, कषैली है, शीतल है, तथा हलकी है॥२५८॥

पर्वतमत्स्यगुणाः ।

पार्वतो वातहा स्निग्धः शुक्रलो बलवर्द्धनः ॥२५९॥

पार्वत मछली–वातनाशक है, स्निग्ध है, शुक्रको उत्पन्न करती है, तथ बलको बढाती है ॥ २५९ ॥

वाचमत्स्यगुणाः ।

वाचः स्वादुर्गुरुः स्निग्धः श्लेष्मलो वातपित्तजित्२६०

वाच मछली–स्वादिष्ठ है, भारी है, कफकारक है, वात तथा पित्तको जीतनेवाली है ॥ २६० ॥

एलङ्गमत्स्यगुणाः ।

एलङ्गो मधुरो वृष्यः संग्राही कफवातजित् ॥२६१॥

एलङ्ग मछली–मधुर है, वृष्य है, ग्राही है, कफ तथा वातको जीतनेवाली है ॥ २६१ ॥

वल्लीगडमत्स्यगुणाः ।

बल्लीगडो लघू रूक्षोऽनभिष्यन्दी मरुत्करः ॥२६२॥

बल्लीगड मछली—हलकी है, रूखी है, अनभिष्यन्दी (नजला न करनेवाली) है, वायुकारक है ॥ २६२ ॥

चिलचिममत्स्यगुणाः ।

मत्स्यश्चिलचिमो ग्राही कषायो वातकोपनः ॥२६३॥

चिलचिम मछली—ग्राही है, कषैली है तथा वातको कुपित करनेवाली है २६३

गवाटीमत्स्यगुणाः ।

गवाट्यजीर्णजननी गुर्वी श्लेष्मप्रकोपनी ॥ २६४ ॥

गवाटी मछली—अजीर्ण पैदा करती है, भारी है, तथा कफको कुपित करती है ॥ २६४ ॥

क्षुद्रशफरीमत्स्यगुणाः ।

प्रोष्ठी तिक्ता कटुः स्वादुः शुक्रला कफवातजित २६५

क्षुद्र प्रोष्ठी छोटी सफरी या सहरी मछली- तीखी है, कटु है, स्वादिष्ट है, शुक्रको उत्पन्न करती है, कफ और वातको जीतनेवाली है ॥ २६५ ॥

पोताधानमत्स्यगुणाः ।

पोताधानस्तु सर्वेषां सुस्निग्धो लघुरोचनः ॥२६६॥

संपूर्ण मछलियोंमें पोताधान, (अंडोंसे निकली हुई छोटी मछलियोंका समूह) स्निग्ध है, हलकी हैं तथा रुचिकारक हैं ॥ २६६ ॥

मत्स्यादिडिम्बगुणाः ।

मत्स्यकूर्म्मखगाण्डानि स्वादुवाजिकराणि च ।
कटुपाकानि रुच्यानि वातश्लेष्मकराणि च ॥२६७॥

मछली कछुवा तथा पक्षियोंके अंडे—स्वादिष्ठ हैं, वाजीकर (मैथुनकी शक्तिको बढानेवाले) हैं, पाकमें कटु हैं, रुचिकारक हैं, वात तथा कफको उत्पन्न करनेवाले हैं ॥ २६७ ॥

इति मत्स्यगुणाः ।

मांसगुणमाह ।

मांसं वातहरं वृष्यं बृंहणं बलवर्द्धनम् ।
प्रीणनं गुरु हृद्यं च मधुरं रसपाकयोः ॥ २६८ ॥

मांस—वातको हरनेवाला है वृष्य (वीर्यवर्द्धक) है बृंहण (पुष्टिजनक) है वलबर्द्धक है, तृप्तिकारक है, भारी है, हृदयको प्रियकारक है, रस तथा पाकमें मधुर है ॥ २६८ ॥

स्थानक्रियादिभेदे मांसानां जातिभेदमाह ।

प्रसह्य भक्षयन्त्येते प्रसहास्तेन सञ्ज्ञिताः ।
भूशया बिलशायित्वादानूपोऽनूपसंश्रयात् ॥२६९॥
जले निवासाज्जलजा जलेचर्य्या जलेचराः ।
स्थलजा जाङ्गलाः प्रोक्ता मृगा जङ्गलचारिणः२७०
विकीर्यविष्किराश्चैव प्रतुद्यप्रतुदा मताः ।
योनिरष्टविधा तेषां मांसानां परिकीर्तिता ॥२७१॥

अपने बलसे शीघ्र छीन कर खानेवाले जीवोंका प्रसह कहते हैं । पृथ्वीके विल आदिमें रहनेवाले जीवोंको भूशय कहते हैं, । अनूप संचारी जीवोंको आनूप कहते हैं जलमें रहनेवालोंको जलज कहते हैं जलमें विचरनेवालोंको जल-चर कहते हैं । जो स्थलमें पैदा होनेवाले हैं उनको जांगल कहते हैं । जंगलमें विचरनेवाले मृग कहेजाते हैं जो अपनी चोंचसे इधर उधर बखेर कर खाते हैं उनको विष्किर कहते हैं जो अपनी चोंचसे काट काट २ कर खाते हैं उनको प्रतुद कहते हैं इस प्रकार मांसाहारियोंके लिये मांस जानवर आठ प्रकारके होते हैं । किसीके मतमें वनचरोंको छागादिकोंसे अलग रखनेमें नौ प्रकारके कहे हैं ॥ २६९ ॥ २७० ॥ २७१ ॥

नामभेदेन तेषां जातिभेदः ।

तत्र प्रसहा कुररश्येनादयः । भूशया नकुलगो-धादयः । आनूपाः खड्गिमहिषवराहादयः ।

जलजाः कुम्भीरशुशुमारादयः ॥ २७२ ॥ जले- चरा मद्गुहंसप्रभृतयः । जाङ्गला हरिणच्छागादयः विष्किरास्तित्तिरमयूरकुक्कुटादयः । प्रतुदाः कपोतपारावतादयः ॥ २७३ ॥

कुंज और बाज आदिक पक्षियोंकी गणना प्रसह जातिमें की जाती है । नकुल और गोधा आदि भूशय कहेजाते हैं गैंडा भैंसा शूकर आदिकोंको आनूप कहाजाता है नाका और मछली घडियाल आदि जलज कहेजाते हैं । मद्गु (पक्षीविशेष) तथा हंस आदिकी जलज संज्ञा है, हरिण तथा छाग (बकरा) आदिक जाङ्गल कहे जाते हैं, तीतर, मोर, मुरगा आदि विष्कर कहे जाते हैं, कबूतर, तथा पारा- वत (कबूतरका भेद) आदि प्रतुद कहेजातेहैं ॥ २७२ ॥ २७३ ॥

प्रसहादिजलचरान्तानां मांसानां सामान्यगुणाः ।

प्रसहा भूशयानूपवारिजा वारिचारिणः ।
गुरूष्णा मधुराः स्निग्धा वातघ्नाः शुक्रवर्द्धनाः२७४

प्रसह, भूशय, अनूप, वारिज तथा जलचरोंका मांस—भारी है, गरम है, मधुर है, चिकना है, वातनाशक है, शुक्रको बढानेवाला है ॥ २७४ ॥

विष्किरादिजांगलान्तानां मांसानां सामान्यगुणाः ।

लावाद्यो विष्किरो वर्गः प्रतुदा जांगला मृगाः ।
लघवः शीतमधुराः सकषायाऽहिता नृणाम् ॥२७५॥

लवा आदि विष्किर (पक्षी) वर्ग प्रतुद और जांगलजातिके पशुओंका मांस हलका है, शीतल है, मधुर है, कषैला है तथा मनुष्योंको हानिकारक है ॥२७५॥

सामान्येनोपदिष्टानां मांसानां स्वगुणैः पृथक् ।
केषान्तु गुणवैशिष्ट्याद्विशेष उपदेक्ष्यते ॥२७६॥

सामान्यतासे ऊपर कहे हुए मांसोंके गुणोंसे विशेष किसी २ में कुछ न्यूना- धिकता होती है, सो उनको अलग २ रूपसे वर्णन करते हैं ॥ २७६ ॥

हरिणमांसगुणाः ।

हरिणः शीतलो बद्धविण्मूत्रो दीपनो लघुः ।
रसे पाके च मधुरः सुगन्धिः सन्निपातहा ॥२७७॥

हरिणका मांस शीतल है, मलमूत्रको बांधनेवाला है, हलका है, रस तथा पाकमें मीठा है सुगंधित है और सन्निपातको नष्ट करता है ॥ २७७ ॥

कृष्णहरिणमांसगुणाः ।

एणः कषायो मधुरः पित्तासृक्कफनाशनः ।
संग्राही रोचनो हृद्यो बलकृज्ज्वरनाशनः ॥२७८॥

एणका मांस—कषैला है मीठा है रक्तपित्त, तथा कफको नष्ट करता है मलको बांधता है रुचिकारक है हृदयको हित है बलको बढाता है ज्वरनाशक है ॥ एग काले मृगको कहते हैं ॥ २७८ ॥

कृष्णसारमांसगुणाः ।

संग्राही रोचनो बल्यः कृष्णसारो ज्वरापहः॥२७९॥

कृष्णसारका मांस—मलको बांधता है, रुचिको करता है, बलवर्द्धक है तथा ज्वरको हरनेवाला है कृष्णसार भी एणमृगका ही भेद है ॥ २७९ ॥

शशकमांसगुणाः ।

शशः स्वादुः कषायश्च बद्धविट् शीतलो लघुः ।
शोथातिसारपित्तासृङ्नाशनो रूक्ष एव च॥२८०॥

शशेका मांस—मीठा कषैला है, मलको बद्ध (काबिज) करता है, शीतल है हलका है, शोथ, अतीसार, तथा रक्तपित्तको नाश करता है, तथा रूखा है॥२८०॥

छागमांसगुणाः ।

छागमांसं परं हृद्यं बृंहणं बलवर्द्धनम् ।
स्निग्धं मृद्वनभिष्यन्दि नात्युष्णं धातुसाम्यकृत्२८१

बकरेका मांस-हृदयको अतिहितकारी है, बृंहण है, बलको बढानेवाला है, स्निग्ध है, कोमल है, अनभिष्यंदी (नजला न करनेवाला) है, अतिगरम नहीं है तथा धातुओं (रस रक्तादिकोंको) साम्य (समता) करनेवाला है ॥ २८१॥

मेषमांसगुणाः ।

मेषस्य बृंहणं मांसं पित्तश्लेष्मकरं गुरु ॥ २८२ ॥

भेंडका मांस बृहण है पुष्टिदायक है, पित्त, तथा श्लेष्मा (कफ) को उत्पन्न करता है और भारी है ॥ २८२ ॥

वराहमांसगुणाः ।

वराहपिशितं वृष्यं वातघ्नं बलवर्द्धनम् ॥ २८३ ॥

वाराहका मांस-वृष्य है वातनाशक है तथा बलको बढाता है ॥ २८३ ॥

महिषमांसगुणाः ।

माहिषं तर्पणं बल्यं स्निग्धोष्णं मधुरं गुरु ।
निद्रापुंस्त्वबलस्तन्यवर्द्धनं मांसदार्ढ्यकृत्॥२८४॥

भैंसेका मांस-तृप्तिकारक है, बलकारक है, स्निग्ध है, गरम है, मधुर है भारी है । निद्रा, पुंस्त्व, बल तथा स्तनोंमें दूधको बढानेवाला है और देहके मांसको दृढ करनेवाला है ॥ २८४ ॥

खड्गिमांसगुणाः ।

खड्गिमांसं कफच्छेदि कषायमनिलापहम् ।
पैत्र्यं पवित्रमायुष्यं बद्धमूत्रं विरूक्षणम् ॥ २८५ ॥

गैंडेका मांस-कफको नाश करता है कषैला है वायुको नाश करनेवाला है, पैत्र्य है, पवित्र है आयुष्य है, मूत्रको बद्ध करता है विशेष करके सूखा है ॥२८५॥

गोमांसनिन्दा ।

अपवित्रमनायुष्यं गव्यं वै पापरोगकृत् ।
दुग्धाद्येव ग्रहीतव्यं सर्वत्र चामृतोपमम् ॥२८६॥

गोमांस—अपवित्र है; आयुको नष्ट करता है, इस लोक और परलोकमें निंदाकारक है । तथा अनेक रोगों और पापोंको करने वाला है ॥ इसलिये गौके दुग्धादिक (दूध, दही, घी गोबर, गोमूत्र,) ही ग्रहण करने योग्य हैं वह अमृतके समान गुणकारी है ॥ २८६ ॥

गोधिकामांसगुणाः ।

गोधा विपाके मधुरा कषाया कटुका रसे ।
वातपित्तहरा बल्या बृंहणी बलवर्द्धिनी ॥ २८७ ॥

गोहका मांस कषैला है, कटु है, वात तथा पित्तको हरनेवाला है, बलकारक है, बृंहण है बलको बढानेवाला है ॥ २८७ ॥

कूर्म्ममांसगुणाः ।

कूर्म्मो वातहरो वृष्यश्चक्षुष्यो बलवर्द्धनः ।
मेधास्मृतिकरः पथ्यः शोथघ्नो दोषनाशनः ॥२८८॥
भूतिस्तेषां तु पित्तघ्नी पादस्तेषां कफापहः ॥२८९॥

कछुवेका मांस—वातको हरनेवाला है, वृष्य है, नेत्रोंको हितकारी है, बलको बढानेवाला है, मेधा और स्मृतिको उत्पन्न करनेवाला है, पथ्य है शोथ नाशक है, दोषोंको नाश करता है, इसकी विभूति पित्तनाशक होती है तथा इसके पांव कफको नाश करते हैं ॥ २८८ ॥ २८९ ॥

मूषिकमांसगुणाः ।

मधुरो मूषिकः स्निग्धो व्यवायी शुक्रवर्द्धनः ॥२९०॥

मूसेका मांस—मधुर है, स्निग्ध है, व्यवाई है, तथा शुक्रको बढानेवाला है ॥२९०॥

अश्वमांसगुणाः ।

हयमांसं बलकरमुष्णं मारुतनाशनम् ॥ २९१ ॥

घोडेका मांस—बलकारक है उष्ण है, वायुको नाश करता है ॥ २९१ ॥

गवयमांसगुणाः ।

गवयस्यापि मांसं च स्निग्धं कासनिबर्हणम् ।
रसे पाके च मधुरं व्यवायि स्तन्यवर्द्धनम् ॥२९२॥

गवय (मृग विशेष) का मांस—स्निग्ध है, खांसीको दूर करता है, रसपाकमें मधुर है, व्यवाई है, स्तनोंमें दूध बढानेवाला है ॥ २९२ ॥

कर्कटमांसगुणाः ।

कर्कटः सृष्टविण्मूत्रः सन्धातानिलपित्तजित् ।
कृष्णकर्कटकस्तेषां बल्यः कोष्णोनिलापहः २९३॥

केकडेका मांस—मल तथा मूत्रको उत्पन्न करनेवाला है, कटे हुएको जोडनेवाला है, वात तथा पित्तको जीतनेवाला है काले केंकडेका मांस—बलकारक है, कुछ गरम है, वातको नाश करनेवाला है ॥ २९३ ॥

तित्तिरिमांसगुणाः ।

तित्तिरिः सर्वदोषघ्नो ग्राही वर्णप्रसादनः ।
मधुरो रोचनो वृष्यो मेधाग्निबलवर्द्धनः ॥ २९४ ॥

तीतरका मांस—सब दोषों (तीनों दोषों) को नाश करनेवाला है, ग्राही (काबिज) है, वर्णप्रसादन (वर्णको निर्मल करनेवाला या प्रसन्न करनेवाला) है, मधुर है, रोचक है, वृष्य है, मेधा अग्नि तथा बलको बढानेवाला है ॥२९४॥

कपिञ्जलमांसगुणाः ।

कपिञ्जलो लघुः शीतः कफासृक्पित्तहाग्निदः २९५॥

कपिञ्जलका मांस—हलका है, शीतल है, कफ तथा रक्तपित्तको नाशनेवाला तथा अग्निदायक है ॥ २९५ ॥

क्रकरचक्रोपचक्रिकानां मांसगुणाः ।

क्रकरा लघवो हृद्यास्तथा चक्रोपचक्रिकाः ।
वीर्य्योष्णाः कटुपाकाश्च बल्या दीप्तिकरा मताः २९६

क्रकर (काँकडा पक्षीविशेष) का मांस हलका है, हृदयको हितकारी है, चक्र (चक्रवाक, या चकवा) और उपचक्रका मांस भी यही गुणवाला होता है विशेषतः उष्णवीर्य्य है, पाकमें कटु है, बलकारक है, तथा अग्निको प्रदीप्त करता है ॥ २९६ ॥

चटकमांसगुणाः ।

कुलिंगो मधुरः स्निग्धो व्यवायी बलवर्द्धनः ।
सन्निपातहरो वेश्मकुलिङ्गस्त्वतिशुक्रलः ॥ २९७ ॥

कुलिङ्ग (चटक, चिडा) का मांस—मधुर है, स्निग्ध है, व्यवाई है, बलको बढानेवाला है, सन्निपातको नाश करनेवाला है, वेश्मकुलिङ्ग (घरके चटक या चिडे) का मांस शुक्रको अत्यन्त उत्पन्न करनेवाला है ॥ २९७ ॥

पारावतमांसगुणाः ।

पारावतो रसे पाके स्वादुः शीतोऽस्रपित्तहा ।
गुरुः कषायो विशदो बलोपचयकृत्परः ॥ २९८ ॥

पारावत (कबूतरका भेद) का मांस—रस तथा पाकमें स्वादिष्ठ है, शीतल है, रक्तपित्तको नाश करता है, भारी है, कषैला है, विशद (स्वच्छ) है बलकी वृद्धिको करनेवाला है ॥ २९८ ॥

कपोतमांसगुणाः ।

कपोतो मधुरः शीतः कषायो वातपित्तजित् ॥ २९९ ॥

कबूतरका मांस—मधुर है, शीतल है, कषैला है, वात तथा पित्तको जीतनेवाला है ॥ २९९ ॥

हरितालमांसगुणाः ।

हरितालोऽल्पविट्कः स्यात्कषायो विशदो लघुः ।
रक्तपित्तप्रशमनस्तृष्णाघ्नो वातकोपनः ॥ ३०० ॥

हरितालका मांस—मलको अल्प करता है, कषैला है, स्वच्छ है, हलका है, रक्तपित्तको शमन करता है, प्यासको दूर करनेवाला है, तथा वातको कुपित करता है इसको हरियलभी कहते हैं ॥ ३०० ॥

कुक्कुटमांसगुणाः ।

कुक्कुटो मधुरो वृष्यः स्निग्धोष्णबलकृद्गुरुः ३०१॥

मुरगेका मांस–मधुर है, वृष्य है, स्निग्ध है, उष्ण है, बलकारक है तथा भारी है ॥ ३०१ ॥

वन्यकुक्कुटमांसगुणाः ।

कुक्कुटो वनजो रूक्षः कषायः स्वादुशीतलः॥३०२॥

वनमुरगेका मांस–रूखा है कषैला है, स्वादिष्ट है, तथा शीतल है ॥३०२ ॥

कुक्कुटाण्डगुणाः ।

कुक्कुटांडं तु मधुरं बलकृद्वह्निदीपनम् ॥ ३०३ ॥

मुरगाके अंडे–मधुर हैं, बलकारक हैं अग्निदीपक हैं ॥ ३०३ ॥

हंसमांसगुणाः ।

हंसो वातहरो वृष्यः स्वर्यो मांसबलप्रदः ॥ ३०४ ॥

हंसका मांस–वातको हरनेवाला है, वृष्य है, स्वरको देने या मधुर करनेवाला है, मांस तथा बलको देनेवाला है ॥ ३०४ ॥

हंसाण्डगुणाः ।

हंसबीजं परं वृष्यं बृंहणं वातकोपनम् ।
पाके लघुतरं प्रोक्तं सर्वामयविनाशनम् ॥ ३०५ ॥

हंसके अंडे–अत्यन्त वृष्य हैं (वीर्य्यवर्द्धक) बृंहण (पुष्टिकारक) हैं वातको कुपित करते हैं, पाकमें अतिशय हलके हैं तथा सब रोगोंके नाश करनेवाले कहे हैं ॥ ३०५ ॥

लावमांसगुणाः ।

लावो लघुः कटुर्ग्राही स्वादुः शीतस्त्रिदोषनुत्३०६॥

लवा पक्षीका मांस–हलका है, कडुवा है, ग्राही (काबिज) है स्वादिष्ट है, शीतल है, तथा त्रिदोषोंका नाशक है ॥ ३०६ ॥

वर्त्तिकामांसगुणाः ।

वर्त्तिका मधुरा रूक्षा कफमारुतनाशिनी ॥ ३०७ ॥

चतकका मांस—मधुर है, कफ तथा वातको नाश करता है॥ ३०७ ॥

शुकमांसगुणाः ।

शुकमांसं परं बल्यं विपाके गुरु शीतलम् ।
कासश्वासक्षयहरं संग्राहि लघु दीपनम् ॥ ३०८ ॥

तोतेका मांस—अतिशय बलकारक है पचनेमें भारी है, शीतल है, खांसी, श्वास, तथा क्षयको हरनेवाला है, संग्राही (काबिज) है, हलका है, तथा अग्नि-दीपक है ॥ ३०८ ॥

मयूरमांसगुणाः ।

मयूरः श्रोत्रनेत्राग्निमेधावर्णस्वरायुषाम् ।
हितो बल्यो गुरुश्चोष्णो वातघ्नः शुक्रमांसदः ॥३०९॥

मोरका मांस—कान, आंख, जठराग्नि, मेधा, वर्ण, स्वर, आयु इन सबको हित कारक है तथा बलको बढानेवाला उष्ण, गुरु, और वायुको नष्ट करनेवाला तथा शुक्र और मांसको देनेवाला है॥ ३०९॥

मयूरमांसभक्षणकालनिर्णयः ।

हेमन्तकाले शिशिरे वसन्ते सेव्यं हि मायूरमुशन्ति मांसम् ॥ उष्णो हि बर्ही विषभोजनाच्च वर्षाशरद्-ग्रीष्मसुखेष्वपथ्यम् ॥ ३१० ॥

हेमन्त, शिशिर और वसन्त ऋतुमें मोरका मांस खाना चाहिये । वर्षा, शरद, तथा ग्रीष्म ऋतुमें मयूर विष (सर्पआदि विषधारी जीवों) को भक्षण करते हैं इससे अतिशय उष्ण होते हैं अतः इन ऋतुवोंमें मोरका मांस अपथ्य है ॥३१०॥

शराय्यादीनां मांसगुणाः ।

शरारिमद्गुकादम्बबलाकाः पवनापहाः ।
स्निग्धाः सृष्टमला वृष्या रक्तपित्तहरा हिमाः ३११॥

शरारि, मद्गु कादम्ब तथा वलाक आदि पक्षियोंके मांस वातको नाश करते हैं हैं, स्निग्ध हैं, मलको उत्पन्न करते हैं वृष्य हैं, रक्तपित्तको हरनेवाले हैं, तथा शीतल हैं ॥ ३११ ॥

गुरुभक्ष्या बहुभुजो ये चोपचितमेदसः
एकदेहेपि पूर्वार्द्धं मृगाणां पक्षिणां परम् ॥ ३१२ ॥

गुरु पदार्थोंके भक्षण करनेवाले तथा जिनके शरीरमें चर्बी अधिक होनेसे शरीर पुष्ट हों ऐसे मृगोंका शरीर एक होते हुए भी देहका पूर्वार्द्ध अच्छा होता है, ऐसे ही पक्षियोंका परार्द्ध अच्छा होता है ॥ ३१२ ॥

मांसानां शिरस्कन्धादीनां यथोत्तरं गुरुत्वमाह ।

सर्वेषां च शिरस्कन्धप्लीहचर्मयकृद्दताम् ।
पादपुच्छान्त्रमस्तिष्कमुष्कक्रोडाः समेहनाः ॥ ३१३ ॥
धातवः शोणिताद्याश्च गुरवः स्युर्यथोत्तरम् ॥ ३१४ ॥

सब जीवोंके अङ्ग इस क्रमसे पहलेसे दूसरे भारी होते हैं जैसे शिरसे, कन्धा, कन्धेसे, प्लीह, प्लीहसे, चर्म्म, इसी क्रमसे यकृत्, पाद, पूंछ, मस्तिक, अंडकोश, क्रोड, लिङ्ग, और रक्त भी जानने ॥ ३१३ ॥ ३१४ ॥

ग्राह्यमांसकथनम् ।

वयस्थं निर्विषं सद्योहतं मांसं प्रशस्यते ॥ ३१५ ॥

बयस्थ (जवान) विषरहित तथा तत्काल मारे हुए जीवोंका मांस प्रशंसा योग्य है अर्थात् मांसाहारियोंको ग्रहण करने योग्य है ॥ ३१५ ॥

त्याज्यमांसकथनम् ।

मृतं च व्याधितं व्युष्टं वृद्धं बालं विषैर्हतम् ।
अगोचरहतं व्याडं मृदितं मांसमुत्सृजेत् ॥ ३१६ ॥

मृत (अपनी मौतसे मरे हुए) रोगयुक्त बुड्ढासे हुए, बालक, विषसे मरे हुए, बालक, विषसे मरे हुए, अगोचर (विना स्वयं देखे) मारे हुए, व्याड

(मांसाहारी पशु) तथा मृदित (गतरस) जीवोंका मांस त्याग देना चाहिये अर्थात् ऐसा मांस भक्षण करने योग्य नहीं है ॥ ३१६ ॥

अथ मद्यवर्गमाह ।

मद्यसाधारणगुणाः ।

**प्रकृत्या मद्यमम्लोष्णमम्लं चोष्णं विपाकतः ।
सर्वं सामान्यतस्तस्य विशेष उपदेक्ष्यते ॥ ३१७ ॥**

सामान्यतासे सर्व प्रकारकी मद्य स्वभावसे और पाकमें खट्टी और उष्ण है अब विशेष वर्णन करते हैं ॥ ३१७ ॥

सामान्यसुरागुणाः ।

**कृशानां रक्तमूत्राणां ग्रहण्यर्शोविकारिणाम् ।
सुरा प्रशस्ता वातघ्नी स्तन्यरक्तक्षयेषु च ॥३१८॥**

क्षीण मनुष्योंको, मूत्रद्वारा खून गिरने वालोंको, ग्रहणी, तथा बवासीरके विकार वाले पुरुषोंको, सुरा सेवन करना उत्तम है सुरा वातको नाश करती है स्तन्य और रक्तक्षयमें भी उत्तम है ॥ ३१८ ॥

उत्तममद्यगुणमाह ।

**कासार्शोग्रहणीदोषप्रतिश्यायविनाशिनी ।
श्वेतमूत्रकरी स्तन्यरक्तमांसकरी सुरा ॥ ३१९ ॥
छर्द्यरोचकहृत्कुक्षितोदशूलप्रमर्दिनी ॥ ३२० ॥**

अच्छी स्वच्छ मद्य—खाँसी, बवासीर, ग्रहणी, विकार, तथा प्रतिश्याय (नजला या जुखाम) को नाश करती है, मूत्रको स्वच्छ करती है, स्तनोंमें दूध, रक्त तथा मांसको उत्पन्न करनेवाली है, वमन, अरुचि, हृदय तथा कुक्षिमें तोद (सुई चुभानेके समान पीडा) तथा शूलको नाश करनेवाली है ॥३१९॥३२०॥

प्रसन्नागुणमाह ।

प्रसन्ना गुल्मवाताशोंविबन्धानाहनाशिनी ।
शूलं प्रवाहिकाटोपकफवातार्शसां हिता ॥ ३२१ ॥

प्रसन्ना—गुल्म, वात, बवासीर, विबन्ध, अनाहको नाश करती है । शूल, प्रवाहिका, आटोप (अफरा) कफ तथा वातार्श (वातकी बवासीर) में हित है । परिपक्व अन्न संधानको अग्निद्वारा यंत्रसे निकाले हुए द्रव पदार्थको सुरा कहते हैं, तथा सुरामंडको प्रसन्ना कहते हैं ॥ ३२१ ॥

जगलमद्यगुणाः ।

जगलो ग्राहिरूक्षोष्णः शोषघ्नो भक्तरोचनः ।
शोथार्शोग्रहणी दोषान् हन्त्यरिष्टः कफामयान् ३२२

जगल—ग्राही (काविज) है, रुक्ष है, उष्ण है, शोषको नाश करती है, भोजनमें रुचि उत्पन्न करती है, सुराके नीचे भागमें रहनेवाले पतले पदार्थको जगल कहते हैं । अरिष्ट—शोथ, बवासीर, ग्रहणी दोषों तथा कफरोगोंको दूर करता है । जल आदि पतले पदार्थोंमें औषधोंको चुरायकर किसी पात्रमें भरके चिरकालतक रखनेके बाद सिद्ध पदार्थको अरिष्ट कहते हैं ॥ ३२२ ॥

अभिनवमद्यगुणाः ।

प्रायशोभिनवं मद्यं गुरु दोषलमीरितम् ।
स्रोतसां शोधनं जीर्णं दीपनं लघु रोचनम् ॥ ३२३ ॥
हर्षणं प्रीणनं बल्यं मद्यं शोकश्रमापहम् ।
प्रागल्भ्यप्रतिभाकान्तितुष्टिपुष्टिस्वरप्रदम् ॥ ३२४ ॥

प्रायः नवीन मद्य भारी और त्रिदोषको बढानेवाली कही है । और पुरानी मद्य दीपन है, हलकी है, रुचिको बढाती है, हर्षको देती है, तृप्तिकारक है, बलको बढाती है, और शोक तथा श्रमको नष्ट करती है, और प्रगल्भता (जल्दी २ बोलना) प्रतिभा (ढीठपना, निर्लज्जताके तेजयुक्त होना) कान्ति, तुष्टि, पुष्टि तथा स्वर इनके उत्पन्न करनेवाली होती है ॥ ३२३ ॥ ३२४ ॥

काञ्जिकगुणाः ।

काञ्जिकं भेदि तीक्ष्णोष्णं पित्तकृत्स्पर्शशीतलम् ।
श्रमक्लमहरं रुच्यं दीपनं बस्तिशोधनम् ॥ ३२५ ॥
पाचनं जरणीयं च हृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ ३२६ ॥

कांजी-दस्तावर है, तीक्ष्ण है, गर्म्म है, पित्तको करती है, स्पर्शमें शीतल है, थकावटको दूर करती है, कायलीको हरती है, रुचिको उत्पन्न करती है, दीपन है, वस्तिको शुद्ध करती है, पाचन है, भोजनको जीर्ण करनेवाली है, तथा हृद्रोग पाण्डुरोग, कृमिरोग इनको नाश करती है ॥ ३२५ ॥ ३२६ ॥

सौवीरगुणाः ।

ग्रहण्यर्शोविकारघ्नं सौवीरं मलभेदनम् ॥ ३२७ ॥

सौबीर-संग्रहणी तथा बवासीरको नष्ट करता है, और मलको भेदन करता है सौबीर यह भी कांजीका ही भेद है ॥ ३२७ ॥

तुषोदकगुणाः ।

शीतवातहरं युक्त्या प्रमेहघ्नं तुषोदकम् ॥ ३२८ ॥

तुषोदक -शीतल है, वायुको हरता है, युक्तिपूर्वक सेवन करनेसे प्रमेहको नष्ट करता है कच्चे यवोंको दल करके सन्धान बनाया हुवा तुषोदक कहा जाता है ॥ ३२८ ॥

सिद्धार्थतैलभृष्टतुषोदकगुणाः ।

सिद्धार्थतैलसंभृष्टं दश रोगान् व्यपोहति ।
कासं श्वासातिसारं च पाण्डुरोगं सकामलम् ३२९॥
आमं च गुल्मशूलं च पार्श्वशूलं सवेदनम् ।
अर्शांसि श्वयथुं चैव भुक्ते पीते च शाम्यति॥३३०॥

तुषोदकको सरसोंके तेलमें छौंक कर खाने पीनेमें उपयोग किया जाय तो खाँसी, श्वास, अतीसार, कामलासहित पाण्डु, आम, गुल्म, शूल, पीडायुक्त पार्श्वशूल बवासीर और शोथ इन दश रोगोंको शमन करता है ॥ ३२९ ॥ ३३० ॥

मूत्रगुणाः ।

मूत्रं तीक्ष्णोष्णलवणं पित्तकृत्कटुकं लघु ।
रूक्षं कृम्युदरानाहशोथार्शोविषकुष्ठनुत् ॥ ३३१ ॥

मूत्र-तीक्ष्ण है, उष्ण है, नमकीन है, पित्तकारक है, चरपरा है, और हलका है, तथा रूखा है । कृमिरोग, उदररोग, अफरा, सूजन, बवासीर विषकुष्ठ, इन सबको नष्ट करता है ये गुण प्रायः किञ्चित् न्यूनाधिकतासे सब मूत्रोंमें होते हैं परन्तु गोमूत्र सबमें उत्तम और गुणकारक होता है ॥ ३३१ ॥

अथ मधुवर्गमाह ।

मधुनः सामान्यगुणाः ।

मधु शीतं मृदु स्वादु त्रिदोषघ्नं व्रणापहम् ।
कषायानुरसं रूक्षं चक्षुष्यं श्वासकासनुत् ॥३३२॥

मधु—शीतल है, मृदु है, स्वादिष्ठ है, त्रिदोष नाशक है, व्रणनाशक है, कषाय रसवाला है, रूखा है, नेत्रको हितकारी है, श्वास तथा खाँसीको नाश करता है ॥ ३३२ ॥

मधुनः जातिभेदः ।

पौत्तिकं भ्रामरं क्षौद्रं माक्षिकं छात्रमेव च ।
अर्घ्यमौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः ॥३३३॥

पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र, माक्षिक, छात्र अर्घ्य औद्दालक, तथा दाल यह शहदकी आठ प्रकारकी जाति हैं ॥ ३३३ ॥

मधूनामुत्पत्तिकथनम् ।

पिंगला मक्षिका ज्ञेया महत्यल्पा च सा द्विधा ।
महती पूतिकानाम्नी स्वल्पा क्षुद्रेति कथ्यते॥३३४॥

पिङ्गला मक्षिका—बडी और छोटी इन भेदों करके दो प्रकारकी जानना । बडी पूतिका नामवाली तथा छोटी क्षुद्र नामवाली होती है ॥ ३३४ ॥

मध्यमा मक्षिका नीला मक्षिकेत्यभिधीयते ।
पुत्तिका भ्रमरा क्षुद्रा मक्षिकासम्भवं मधु ॥३३५॥

मध्यम आकारवाली नीली-मक्षिका नामसे कही जाती है । पुत्तिकासे पौत्तिक, भ्रमरसे भ्रामर, क्षुद्रासे क्षौद्र और मक्षिकासे माक्षिक मधु उत्पन्न होता है ॥ ३३५ ॥

पौत्तिकादुच्यते छात्रं वरटीछत्रसम्भवम् ।
तपोवने जरत्कारोरार्घ्यं मधु तदुद्भवम् ॥ ३३६ ॥

पुत्तिका मक्खीसे वरटी (गन्धोली) मक्खीके छत्रमें उत्पन्न हुए मधुको छात्र-मधु कहते हैं ॥ जरत्कारुके तप किये हुए वनमें उत्पन्न होनेवाले मधुको आर्घ्य कहते हैं ॥ ३३६ ॥

औद्दालकं तु वल्मीककारिकीटविनिर्मितम् ।
दालमित्यभिनिर्दिष्टं वृक्षकोटरकीटजम् ॥ ३३७ ॥

वल्मीक (बिंबोरे) के बनानेवाले कीटोंसे बने हुएको औद्दाल मधु कहते हैं, । वृक्ष और कोटरोंमें रहनेवाले कीटोंसे उत्पन्न मधुको दाल कहते हैं ॥ ३३७ ॥

मधूनां लक्षणमाह ।

माक्षिकं तैलवर्णं स्याद् घृतवर्णं तु पौत्तिकम् ।
क्षौद्रं कपिलवर्णं स्याच्छ्वेतं भ्रामरमुच्यते ॥ ३३८ ॥

तैलके समान वर्णवालेको माक्षिक, घीके वर्णवालेको पौत्तिक, कपिल (किञ्चित् पीले) वर्णवालेको क्षौद्र और सफेद वर्णवालेको भ्रामर मधु कहते हैं ॥ ३३८ ॥

पौत्तिकमधुगुणाः ।

पौत्तिकं तेषु वीर्य्योष्णं कषायाद्गुरसान्वयात् ।
वातासृक्पित्तकृद्भेदि मदकृन्मधुरं मधु ॥ ३३९ ॥

पौत्तिक मधु—उष्णवीर्य्य है, कुछ कषेले रसवाला है, वातरक्त तथा पित्तको उत्पन्न करता है, भेदी (दस्तावर) है, मदकारक तथा मधुर है ॥ ३३९ ॥

भ्रामरमधुगुणाः ।

पैच्छिल्यात्स्वादुभूयस्त्वाद् भ्रामरं गुरु कीर्त्तितम्३४०॥

भ्रामर मधु—पिच्छिलता, तथा अत्यन्त स्वादिष्टताके कारण भारी कहाहै३४०

क्षौद्रमधुगुणाः ।

क्षौद्रं विशेषतो ज्ञेयं शीतलं लघु लेखनम् ॥३४१॥

क्षौद्र मधु—अतिशीतल, लघु तथा लेखन (दस्तावर) समझना चाहिए ॥३४१॥

माक्षिकमधुगुणाः ।

तस्माल्लघुतरं रूक्षं माक्षिकं प्रवरं स्मृतम् ।
श्वासादिषु च रोगेषु प्रशस्तं तद्विशेषतः ॥ ३४२ ॥

माक्षिक मधु—अतिशय हलका, रूखा तथा अत्यन्त श्रेष्ठ कहा है । विशेष करके श्वास आदि रोगोंमें उत्तम है ॥ ३४२ ॥

छात्रमधुगुणाः ।

छात्रं श्वित्रकृमिहरं रक्तपित्तहरं गुरु ॥ ३४३ ॥

छात्र मधु—श्वित्रकुष्ठ तथा कृमिरोगको हरनेवाला है, रक्तपित्तको हरता है तथा हलका है ॥ ३४३ ॥

आर्घ्यमधुगुणाः ।

आर्घ्यं चाक्षुष्यमायुष्यं कफपित्तामवातजित्३४४॥

आर्घ्य मधु—नेत्रोंको हितकारी है, आयुवर्द्धक है, कफ, पित्त, तथा आमवातको जीतनेवाला है ॥ ३४४ ॥

औद्दालकमधुगुणाः ।

औद्दालकं कषायोष्णं कटु कुष्ठविषापहम् ॥३४५॥

औद्दालक मधु—कषैला है, गरम है, कडू है कुष्ठ तथा विषको नाश करता है ॥ ३४५ ॥

दालमधुगुणाः ।

दालं कफहरं रूक्षं दीपनं छर्दिमेहनुत् ॥ ३४६ ॥

दाल मधु—कफनाशक है, रूखा है, दीपन है, वमन तथा प्रमेहको नाश करता है ॥ ३४६ ॥

उष्णमधुनः निषिद्धता ।

**उष्णमुष्णार्त्तमुष्णैश्च हन्यान्मधुविषान्वयात् ।
मधुन्युष्णो विरुध्यंते वर्जयित्वाघ्र्यसंभवम् ॥३४७॥**

विषैली, मक्खियां, विषयुक्त, फूलोंका, मधु, आकर्षण करलेती हैं । यदि शहदको धूप या अग्निसे गरम किया जाय तो वह विष मधुमें मिलजाता है, इस लिये वह शहद, विषयुक्त होजाता है, वह मनुष्योंको हानिकारक है, तथा उष्ण औषधियोंसे युक्त किया मधु उष्ण प्रकृतिवाले मनुष्योंको मारडालता है, इस लिये उसका उपयोग न करे परन्तु विना गर्म किये निकाले हुए शहदका उष्ण प्रकृतिवालेको भी निषेध नहीं क्योंकि वह गर्म किया न होनेसे उसमें दोष नहीं होता उसके सब दोष मोमके और मरकके छत्तेमें रहजाते हैं ॥ ३४७ ॥

अभिनवमधुगुणाः ।

बृंहणीयं मधु नवं वातश्लेष्महरं परम् ॥ ३४८ ॥

नवीन मधु—बृंहण है, तथा वात और कफको नाश करनेवाला है ॥ ३४८ ॥

पुरातनमधुगुणाः ।

पुराणं लघु संग्राहि निर्दोषं स्थौल्यनाशनम् ॥३४९॥

पुराना मधु—हलका है संग्राही (काबिज) है निर्दोष है, तथा स्थूलता-नाशक है ॥ ३४९ ॥

पक्वापक्वमधुगुणाः ।

दोषत्रयहरं पक्वमाममम्लत्रिदोषकृत् ॥ ३५० ॥

पका मधु—त्रिदोषको हरनेवाला है । कच्चा मधु—खट्टा तथा त्रिदोषको करनेवाला है शरद, और वसंत ऋतुके अंतमें होनेवाले तथा अधिक दिनके लगे छत्तेके

मधुकी पक्व संज्ञा है और वसन्त, तथा शरद ऋतुसे भिन्न ऋतुओंमें होनेवाले तथा तत्कालके लगे हुए छत्तेके मधुको कच्चा मधु कहते हैं इसकी आमसंज्ञा है ३९०

मधुजातशर्करागुणाः ।

मधुजा शर्करा रूक्षा तृष्णाछर्द्यतिसारजित्॥३९१॥

शहदसे बनाई शक्कर--रूखी है, प्यास, वमन, तथा अतीसारको जीतनेवाली होती है ॥ ३९१ ॥

अथ क्षीरवर्गमाह ।

क्षीरं स्वादुरसं स्निग्धमौजस्यं धातुवर्द्धनम् ।
वातपित्तहरं वृष्यं श्लेष्मलं शीतलं गुरु ॥ ३९२ ॥

दूध--स्वादिष्ठ है, स्निग्ध है, ओजको उत्पन्न करता है, धातुवर्द्धक है, वात तथा पित्तको हरनेवाला है, वृष्य है, कफकारक है शीतल है, भारी है ॥३९२॥

गोदुग्धगुणाः ।

गोक्षीरं जीवनं बल्यं रक्तपित्तानिलापहम् ।
आयुष्यं पुंस्त्वकृत्पथ्यं मेध्यं वृष्यं रसायनम् ३९३॥

गायका दूध--प्राणरक्षक है, बलदायकहै, रक्तपित्त तथा वातको नाश करनेवाला है आयुवर्द्धक है पुरुषत्वकारक है, पथ्य हैं, मेधाकारक है, वृष्य है, रसायन है ॥ ३९३ ॥

छागदुग्धगुणाः ।

छागक्षीरं तु मधुरं शीतलं ग्राहि दीपनम् ।
रक्तपित्तविकारघ्नं कासश्वासनिबर्हणम् ॥ ३९४ ॥

बकरीका दूध--मधुर है, शीतल है, ग्राही है, अग्निदीपन है, रक्तपित्तके विकारोंका नाशक है, खांसी और श्वासको नाश करता है ॥ ३९४ ॥

छागीनामल्पकायत्वाद्विविधौषधसेवनात् ।
नात्यम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वदोषहरं पयः ॥ ३९५ ॥

बकरियोंका शरीर छोटा और हलका होता है, इसलिए वह जङ्गलमें ऊँची नीची भूमीसे सब प्रकारकी बूटियोंको खाती हैं, और जल बहुत थोडा पीती हैं तथा सब जगह ऊँचे नीचे कूदती हैं इसलिये उनका दूध सब दोषोंको हरनेवाला है ॥ ३५५ ॥

मेषीक्षीरगुणाः ।

मेषीक्षीरं गुरु स्वादु स्निग्धोष्णं कफपित्तजित्॥३५६॥

भेडका दूध—गुरु है, मीठा है, चिकना है, उष्ण है तथा कफ पित्तको नाश करता है ॥ ३५६ ॥

महिषीदुग्धगुणाः ।

माहिषं स्निग्धमत्यर्थं निद्राकृद्वह्निनाशनम् ॥३५७॥

भैंसका दूध—चिकना है, बहुत निद्राको करनेवाला है और अग्निको नाश करता है अर्थात् मन्दाग्निकारक है ॥ ३५७ ॥

उष्ट्रीक्षीरगुणाः ।

उष्ट्रीक्षीरं तु रूक्षोष्णं शोथवातकफापहम् ॥ ३५८ ॥

ऊँटनीका दूध—रूखा है, उष्ण है, तथा सूजन वायु कफ इनको नाश करता है ॥ ३५८ ॥

अश्वीदुग्धगुणाः ।

अश्वीक्षीरं सलवणं मधुराम्लरसं लघु ॥ ३५९ ॥

घोडीका दूध—नमकीन है, मीठा है अम्ल रसयुक्त है और हलका है ॥ ३५९ ॥

हस्तिनीक्षीरगुणाः ।

हस्तिन्या मधुरं वृष्यं कषायानुरसं गुरु ॥ ३६० ॥

हथिनीका दूध—मीठा है, वीर्य्यवर्द्धक है, कषायानुरस (पीछेसे कषैले स्वादुवाला) है और गुरु है ॥ ३६० ॥

मनुष्यदुग्धगुणाः ।

मानुष्यं जीवनं सात्मं बृंहणं स्नेहनं पयः ॥३६१॥

स्त्रीका दूध—जीवनकारक है, प्रकृतिके अनुकूल है, बृंहणहै, चिकना है ॥३६१॥

गोदुग्धग्रहणकालनिर्णयः ।

गव्यं प्रत्युषसि क्षीरं गुरु विष्टम्भि दुर्ज्जरम् ।
तस्मादभ्युदिते सूर्ये यामं यामार्द्धमेव वा ॥३६२॥
समुत्तार्य ततो ग्राह्यं तत्पथ्यं दीपनं लघु ॥ ३६३ ॥

गायका दूध–प्रातःकाल न निकालना चाहिये क्योंकि प्रातःकालका दूध भारी होताहै विष्टम्भ (कब्जियत) करता है, और दुर्जर है इसलिये एक प्रहर या आधा पहर दिन चढने पर निकालना चाहिये यह दूध, पथ्य है, दीपन है, और हलका है ॥ ३६२ ॥ ३६३ ॥

गोदुग्धानां प्रशस्ताप्रशस्तभेदः ।

निर्वत्साबालवत्सायाः पयो दोषलमीरितम् ।
शस्तं वत्सैकवर्णाया धवलीकृष्णयोरपि ॥ ३६४ ॥
इक्ष्वादा माषपर्ण्यादा ऊर्द्धशृङ्गी च या भवेत् ।
तासां गवां हितं क्षीरं शृतं वाशृतमेव वा ॥३६५॥

बिना बछडेवाली तथा बहुत छोटे बछडेवाली गौका दूध दोषयुक्त कहा है । जिस गायका बछडा गायके रङ्गका हो उसका दूध अथवा सफेद या काले रङ्गकी गौका दूध बहुत उत्तम होता है जो गौ ईख अथवा माषपर्णी या उडदके पत्र खाती है अथवा जिनके सींग ऊपरको खडे हैं उनका दूध कच्चा तथा गरम किया हुवा दोनों अवस्थाओंमें हितके करनेवाला है ॥ ३६४ ॥ ३६५ ॥

पर्य्युषितक्षीरगुणाः ।

क्षीरं पर्य्युषितं सर्वं गुरु विष्टम्भि दुर्जरम् ॥ ३६६ ॥

सब प्रकारके पर्य्युषित (बासी) दूध भारी हैं विष्टम्भ कर्त्ता हैं और दुर्जर हैं ॥ ३६६ ॥

पक्वामदुग्धगुणाः ।

पयोभिष्यन्दि गुर्वामं शृतोष्णं कफवातजित् ३६७॥

कच्चा दूध—अभिष्यन्दी है, और भारी है गरम किया हुवा दूध कफ और वायुको नाश करता है ॥ ३६७ ॥

शृतशीतधारोष्णदुग्धयोर्गुणाः ।

शृतशीतं तु पित्तघ्नं धारोष्णममृतोपमम् ॥ ३६८ ॥

गरम करके शीतल किया हुवा दूध—पित्तको नाश करता है और धारोष्ण दूध अमृतके समान गुणकारी है, जो वर्त्तनके ऊपर कपडा रखकर दूध निकाला हुवा हो और उसकी गरमाई ठंढी न होनेपाई हो तथा बरतन जमीन पर रखनेसे पहले तत्काल निकाले दूधको धारोष्ण कहते हैं ॥ ३६८ ॥

क्षीरसन्तानिकागुणाः ।

क्षीरसन्तानिका वृष्या स्निग्धा पित्तानिलापहा ३६९

मलाई—वीर्य्यको बढाती है चिकनी है, तथा पित्त और वायुको नष्ट करती है। (मावा आदिमें भी यही गुण हैं) ॥ ३६९ ॥

वर्ज्जनीयदुग्धकथनम् ।

वर्ज्जयित्वा स्त्रियाः स्तन्यं सर्वमामं विवर्ज्जयेत् ।
वर्ज्यं सलवणं क्षीरं यच्च विग्रथितं भवेत् ॥ ३७० ॥

स्त्रीके दूधके बिना और सब प्रकारके दूध विना गरम किये नुकसान करने, वाले हैं लवणयुक्त, फटा हुवा दूध त्याग देने योग्य है ॥ ३७० ॥

अथ दधिवर्गमाह ।

दधिसामान्यगुणाः ।

दधि स्वाद्वम्लदं हृद्यं स्नेहनं रोचनं गुरु ।
पाकेम्लमुष्णं वातघ्नं मांगल्यं बृंहणं परम् ॥ ३७१॥

दही–मीठा है, अग्निको दीपन करता है, हृदयको हित है चिकना है, रुचिकारक है गुरु है, पचनेमें खट्टा और उष्णवीर्य्य है, वायुको नष्ट करता है मांगलिक है, और परम पुष्टिकरता है ॥ ३७१ ॥

गव्यदधिगुणाः ।

गव्यं दधि तु वातघ्नं मंगलं शुचि रोचनम् ।
स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं बलवर्द्धनम् ॥३७२॥

गौका दही–वायुको नष्ट करता है, मांगलिक है, पवित्र है, रुचिकारी है, चिकना है, पचनेमें मीठा है, अग्निको दीप्त करता है और बलको बढाता है॥ ३७२॥

छागीदधिगुणाः ।

छागं दधि ल प्रोक्तं कफवातक्षयापहम् ।
दुर्नामश्वासकासेषु हितमग्नेश्च दीपनम् ॥ ३७३ ॥

बकरीका दही–हलका है, कफ, वात, तथा क्षयको नाश करनेवाला है, बवासीर, श्वास, खाँसी, रोगमें हितकारक है, अग्निको दीप्त करता है ॥ ३७३ ॥

मेषीदधिगुणाः ।

आविकं दधि दुर्नामकफव्याधिप्रकोपकम् ॥३७४॥

भेडका दही–बवासीर, तथा कफ, रोगोंको कुपित करता है ॥ ३७४ ॥

महिषीदधिगुणाः ।

माहिषं दध्यतिस्निग्धं रक्तपित्तप्रसादनम् ।
विपाके मधुरं वृष्यं गुरु श्लेष्मविवर्द्धनम् ॥३७५

भैंसका दही–अत्यन्त चिकना है, रक्तपित्तको नाश करता है, पाकमें मधुर है, वृष्य है, भारी है, तथा कफको बढानेवाला है ॥ ३७५ ॥

घोटकीदधिगुणाः ।

वाडवं दधि वातघ्नं दीपनं चक्षुषोर्हितम् ॥३७६॥

घोडीका दही–वातको नाश करता है, अग्निदीपन है, तथा नेत्रोंको हित करनेवाला है ॥ ३७६ ॥

उष्ट्रीदधिगुणाः ।

औष्ट्रकं दधि सक्षारमत्यम्लं पाकतः कटु ॥३७७॥

ऊँटनीका दही—सक्षार (नमकीन) है अत्यन्त खट्टा है, पचनेमें कटू है ॥३७७॥

हस्तिनीदधिगुणाः ।

हस्तिन्या दधि वीर्य्योष्णं कषायं कफवातनुत् ३७८

हथिनीका दही—उष्णवीर्य्य है, कषैला है, कफ तथा वातको नाश करता है ॥ ३७८ ॥

मानुषीदधिगुणाः ।

मानुष्यं मधुरं बल्यं स्निग्धं सन्तर्पणं दधि॥३७९॥

स्त्रीका दही—मधुर है, बलकारक है, चिकना है, और सन्तर्पण (तृप्ति करनेवाला) है ॥ ३७९ ॥

स्वादुदधिगुणाः ।

दधि यत्स्वादु तन्मेदः कफाभिष्यंदकारकम् ॥३८०॥

स्वादिष्ठ दही—मेद, कफ, तथा अभिष्यन्द (नजला) को करनेवाला है॥३८०॥

अम्लदधिगुणाः ।

दध्यम्लमतियद्रक्तदूषणं कफपित्तकृत् ।
विदाहि सृष्टविण्मूत्रं वह्निमान्द्यत्रिदोषकृत् ॥३८१॥

अत्यन्त खट्टा दही—रक्तको दूषित करता है, कफ तथा पित्तको उत्पन्न करता है, दाहकारक है, मल तथा मूत्रको निकालनेवाला है, अग्निमांद्य तथा त्रिदोषको करनेवाला है ॥ ३८१ ॥

असारदधिगुणाः ।

दधि त्वसारं रूक्षं च ग्राहि विष्टम्भि शीतलम् ३८२॥

मक्खन अथवा स्नेहसे रहित दही—रूखा है, ग्राही (काबिज) है, विष्टम्भ करनेवाला है, तथा शीतल है ॥ ३८२ ॥

दधिसरगुणाः ।

दध्नः सरो गुरुर्वृष्यः स्निग्धो मेदःकफप्रदः ।
बृंहणो मारुतघ्नश्च बलोपचयकारकः ॥ ३८३ ॥

दहीकी मलाई–सर है, भारी है बृष्य है, स्निग्ध है, मेद तथा कफको उत्पन्न करती है, बृंहण है, वातनाशक है, बल और स्थूलताको उत्पन्न करती है ३८३॥

रोगविशेषे दध्नः प्रशस्तता ।

पीनसे चातिसारे च शीतके विषमज्वरे ।
अरुचौ मूत्रकृच्छ्रे च कार्श्ये च दधि शस्यते ३८४॥

पीनसमें, अतीसारमें, शीतलतामें विषमज्वरमें, अरुचिमें, मूत्रकृच्छ्रमें तथा कृशतामें दही सेवन करना हित कारक है॥ ३८४ ॥

कालविशेषे दध्नोऽप्रशस्तता ।

शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशो दधि गर्हितम् ॥३८५॥

प्रायः शरद, ग्रीष्म, वसन्त ऋतुमें दही सेवन करना निंदित है अर्थात् हानिकारक है ॥ ३८५ ॥

रोगविशेषे दध्नो निषिद्धता ।

रक्तपित्तविकारेषु कफोत्थेषु न तद्धितम् ॥ ३८६ ॥

दही–रक्तपित्तरोगमें तथा कफसे उत्पन्न होनेवाले रोगोंमें अहित (हानिकारक) है ॥ ३८६ ॥

दधिभक्षणनिषिद्धता ।

न नक्तं दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम् ।
नामुद्गयूषं नाक्षौद्रं नोष्णमामलकैर्विना ॥ ३८७ ॥

दही–रात्रिको न खाना चाहिये, घी, तथा शक्करके विना भी न खाना चाहिये। विना मूँगके जूसके और बिना शहदके तथा गरम और विना आंवलेके भी दहीको न खाना चाहिये ॥ ३८७ ॥

अक्रमदधिभक्षणगुणाः।

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयान् क्रमात् ।
प्राप्नुयात् कामलां चापि विधिं हित्वा दधिप्रियः॥३८८

विधिरहित अर्थात् प्रथम कहे हुए नियमोंके विरुद्ध दही खानेसे—ज्वर, रक्त-पित्त, विसर्प, कुष्ठ, पांडु आदि रोगोंको तथा कामलाको प्राप्त होता है॥३८८॥

दधिमस्तुगुणाः।

मस्तु श्लेष्मानिलहरं वृष्यं स्रोतोविशोधनम्॥३८९॥

मस्तु (दहीका तोड या पानी) कफ तथा वातको हरता है, वृष्य है, स्रोतो (मार्गों) को शुद्ध करनेवाला है॥ ३८९॥

दधिकूर्चिकागुणाः।

वातघ्नी ग्रहिणी रूक्षा दुर्जरा दधिकूर्चिका॥ ३९०॥

दधिकूर्चिका—वातको नाश करनेवाली है, ग्राही है, रूखी है, तथा दुर्जर (पाकमें कठिन) है,॥ ३९०॥

दधिकूर्चिकालक्षणम्।

अर्द्धोदके पयस्युष्णे दध्यम्लं दधिकूर्चिका॥ ३९१॥

एक भाग गरम दूधमें आधा भाग जल मिलानेसे तथा खट्टा दही मिलानेसे दधिकूर्चिका बनती है॥ ३९१॥

तक्रवर्गमाह।

तक्रं त्रिदोषशमनं स्वादु पाकरसं लघु।
वीर्योष्णं मूत्रकृच्छ्रघ्नं कषायमम्लमग्निदम्॥३९२॥

तक्र (मट्ठा अथवा छांछ) त्रिदोषको शमन करता है, पचनेसें स्वादिष्ट है, हलका है, उष्णवीर्य्य है, मूत्रकृच्छ्रको नाश करता है, कषैला तथा खट्टा है, और अग्निको प्रज्वलित करता है॥ ३९२॥

येषु रोगेषु तक्रं देयं तदाह ।

शोथोदराशोग्रहणीदोषमूत्रग्रहेऽरुचौ ।
स्नेहव्यापदि पाण्डुत्वे तक्रं दद्याद् गरेषु च ॥३९३॥

शोथ, उदररोग, बवासीर, ग्रहणी मूत्रबद्ध (पेशाब रुकना) तथा अरुचि रोगमें, घृत आदि स्नेह पान किए हुएको तथा पांडुरोगमें और विषपीडित इतने मनुष्योंको तक्र देना योग्य है, ॥ ३९३ ॥

तक्रस्याविषयमाह ।

न तु तक्रं क्षते दद्यादुष्णकाले न दुर्बले ।
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न ज्वरे रक्तपित्तके ॥ ३९४ ॥

क्षत (घाव) से पीडितको तक्र न देवै उष्ण समयमें भी न देवे दुर्बलको, तथा मूर्च्छा, भ्रम, दाह, ज्वर और रक्तपित्त रोगमें भी तक्र न देना चाहिये ३९४

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च कफोत्थेष्वामयेषु च ।
मार्गावरोधे कुष्ठे च वायौ तक्रं प्रशस्यते ॥ ३९५ ॥

शीत कालमें, मन्दाग्निमें कफसे उत्पन्न रोगोंमें मार्गोंके अवरोधमें कुष्ठमें तथा वातविकारोंमें तक्र सेवन करना हितकारक है ॥ ३९५ ॥

तक्रलक्षणमाह ।

तक्रमुद्धृतसारं यद्दधिपादजलान्वितम् ॥ ३९६ ॥

दहीमें चौथाई भाग जल मिलायकर नवनीत (माखन) निकाल लेनेसे बचे हुए पदार्थको तक्र कहते हैं ॥ ३९६ ॥

तक्रकूर्च्चिकागुणाः ।

ग्राहिणी वातला रूक्षा दुर्जरा तक्रकूर्चिका ॥३९७॥

तक्रकूर्चिका-ग्राही (काबिज) है, रूखी है, तथा दुर्जर (पचनेमें दुखदायक) है ॥ ३९७ ॥

तक्रकूर्चिकालक्षणमाह ।

तप्ते पयसि तक्रेण संयोगात्तक्रकूर्चिका ॥ ३९८ ॥

तप्त दूधमें तक्रके संयोगसे तक्रकूर्चिका बनाई जाती है ॥ ३९८ ॥

इति तक्रवर्गः ॥

अथ नवनीतगुणमाह ।

सद्योजातनवनीतगुणाः ।

नवनीतं नवं वृष्यं ग्राहि पाचनरोचनम् ।
क्षयारुच्यर्दितप्लीहग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ ३९९ ॥

नवीन नवनीत—वृष्य है, ग्राही (काबिज) है, पाचक है, रोचक है । क्षय, अरुचि, अर्दित, प्लीहा, संग्रहणी तथा अर्श (बवासीर) विकारोंको नाश करनेवाला है इसको मक्खन तथा नोनी भी कहते हैं ॥ ३९९ ॥

दुग्धजातनवनीतगुणाः ।

चक्षुष्यं बृंहणं स्निग्धं वृष्यं जीवनकारकम् ।
क्षीरोत्थितं हिमं ग्राहि रक्तपित्ताक्षिरोगनुत् ॥४००॥

दूधसे निकाला हुवा माखन—नेत्रोंको हितकारी है, बृंहण (पुष्ट करनेवाला) है, चिकना है, वीर्य्यको बढानेवाला है, आयुको बढानेवाला है, शीतल है, ग्राही (काबिज) है, रक्तपित्त तथा नेत्ररोगोंको नाश करता है ॥ ४०० ॥

इति नवनीतगुणाः ।

अथ घृतवर्गमाह ।

घृतसाधारणगुणाः ।

घृतं बुद्ध्यग्निशुक्रौजोमेधास्मृतिकफावहम् ।
वातपित्तविषोन्मादशोथालक्ष्मीज्वरापहम् ॥४०१॥
स्नेहोत्तमं योगवाहि सर्वथा मधुरं हिमम् ॥४०२॥

घी-बुद्धि, अग्नि, शुक्र, ओज, मेधा, स्मृति, तथा कफको बढाता हैं; वात, पित्त, विष, उन्माद, शोथ अलक्ष्मी तथा ज्वरको नाश करता है। सब स्नेहोंमें उत्तम है, योगवाही है, मधुर है तथा शीतल है ॥ ४०१ ॥ ४०२ ॥

गव्यघृतगुणाः ।

गव्यं तु वातपित्तघ्नं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ।
सर्वस्नेहोत्तमं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥ ४०३ ॥

गायका घी-वात तथा पित्तको नाश करता है, नेत्रोंको हितकारी है, बलको बढानेवाला है, सब स्नेहोंमें उत्तम है शीतल है, रस तथा पाकमें मधुर है॥४०३॥

माहिषघृतगुणाः ।

माहिषं स्वादु शीतं च कफदं रक्तपित्तनुत् ॥४०४॥

भैंसका घी-स्वादिष्ठ है, शीतल है, कफको देनेवाला है, तथा रक्तपित्तनाशक है ॥ ४०४ ॥

आजघृतगुणाः ।

आजं कासे क्षये पथ्यं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ॥४०५॥

बकरीका घी-कास तथा क्षयमें पथ्य है, नेत्रोंको हितकारक है तथा बलको बढानेवाला है ॥ ४०५ ॥

मेषीघृतगुणाः ।

आविकं पित्तलं योनिदोषे शोषे कफानिले॥४०६॥

भेडीका घी-पित्तकारक है, योनिदोष, शोष, कफ तथा वातरोगोंमें हितहै ४०६

औष्ट्रघृतगुणाः ।

औष्ट्रिकं कफवातघ्नं शोथकृम्युदरापहम् ॥ ४०७ ॥

ऊँटिनीका घी-कफ तथा वातको नाश करता है, शोथ, कृमि, तथा उदररोगोंको दूर करता है ॥ ४०७ ॥

मानुष्यघृतगुणाः ।

मानुष्यमतिचक्षुष्यं लघु पाके प्रमेहजित् ।
मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥४०८॥

स्त्रीका घी—नेत्रोंको अत्यन्त हित करनेवाला है पचनेमें हलका है, प्रमेहको जीतनेवाला है । मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, ग्रह तथा अपस्मारको नाश करता है ॥ ४०८ ॥

पुराणप्रपुराणघृतलक्षणगुणाश्च ।

उग्रगन्धं पुराणं स्याद्दशवर्षस्थितं घृतम् ।
लाक्षारसनिभं शीतं प्रपुराणमतःपरम् ॥ ४०९ ॥
यथा यथा भवेज्जीर्णं गुणवत्स्यात्तथा परम् ॥४१०॥

उग्रगन्धवाला, दश वर्षका प्राचीन तथा लाखके रसके समान लाल रंगवाले घृतको पुराण घृत कहते हैं यह शीतल है, दश वर्षसे अधिक पुराने घीको प्रपुराण घृत कहते हैं । घी जैसा जैसा पुराना होता है उसमें वैसेही २ अधिक गुण होते हैं ॥ ४०९ ॥ ४१० ॥

इति घृतगुणाः ।

अथ इक्षुवर्गमाह ।

इक्षसाधारणगुणाः ।

इक्षवो रक्तपित्तघ्ना बल्या वृष्याः कफप्रदाः ।
विपाके मधुराः स्निग्धा गुरवो मूत्रला हिमाः॥४११॥

ईख—रक्तपित्तको नाश करती है, बलजनक है, वीर्य्यको बढानेवाली है, कफकारक है, पचनेमें मधुर है, स्निग्ध है, भारी है, मूत्र बढानेवाली है तथा शीतल है ॥ ४११ ॥

कोषकारेक्षुगुणाः ।

कोषकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ॥ ४१२ ॥

कोषकार ईख—भारी है, शीतल है, रक्तपित्त तथा क्षयको नाश करनेवाली है ॥ ४१२ ॥

पौंड्रकेक्षुगुणाः ।

पौंड्रकः शीतलो वृष्यः स्निग्धो मधुरबृंहणः ४१३॥

पौंड्रक ईख—शीतल है, वृष्य है, स्निग्ध है, मधुर है, बृंहण है ॥ ४१३ ॥

भीरुकेक्षुगुणाः ।

भीरुः श्लेष्मकरः स्वादुरविदाही गुरुः परम्॥४१४॥

भीरु ईख—कफकारक है, स्वादिष्ट है, अविदाही (दाह न करनेवाली) है, तथा अतिशय भारी है ॥ ४१४ ॥

वंशकेक्षुगुणाः ।

वंशकस्त्वनभिष्यन्दी लघुर्दोषत्रयापहः ॥ ४१५ ॥

वंशक ईख—अनभिष्यन्दी (जुखामको न पैदा करनेवाली) है, हलकी है, त्रिदोष नाशक है ॥ ४१५ ॥

कान्तारीक्षुगुणाः ।

कांतारी मधुरा लघ्वी सक्षारा कफवातला ॥४१६॥

कान्तारी ईख—मधुर है, हलकी है, क्षारयुक्त है कफ तथा वातको करनेवाली है ॥ ४१६ ॥

इक्षुमूलादिगुणाः ।

इक्षुमूलोतिमधुरो मध्ये मधुर एव च ।
ग्रंथौ त्वच्यग्रभागे च विज्ञेयो लवणो रसः॥४१७॥

ईखकी जड—अत्यंत मधुर है, बीचका भाग भी मधुर है, ईखकी गाँठोंमें त्वचा (छिलका) में, और अग्रभागमें नमकीन रस होता है ॥ ४१७ ॥

यन्त्रनिष्पीडितेक्षुरसगुणाः ।

वृष्यः शीतः सरः स्निग्धो यांचिकस्तु विदह्यति ।
मूलाग्रजन्तुजग्धादिपीडनान्मलसंकरात् ॥ ४१८ ॥
किञ्चित्कालनिवृत्त्या च विकृतिं याति यांत्रिकः॥४१९॥

यंत्र (कोल्हू) के द्वारा निकाला हुवा ईखका रस-धातुवर्द्धक है, शीतल है, सर (दस्तावर) है, चिकना है, तथा दाहकारक है जिन ईखोंके मूल (जडें) या अग्र (ऊपरके) भागको कीडा खागये हों उन ईखोंको यंत्रद्वारा दबाकर जो रस निकाला जाता है वह मलिन होनेसे कुछ कालके बाद विकारको प्राप्त होता (विगडजाता) है ॥ ४१८ ॥ ४१९ ॥

पक्केक्षुरसगुणाः ।

पक्को रसो गुरुः स्निग्धः सतीक्ष्णः कफवातनुत् ४२०

ईखका पकाया हुवा रस भारी है, स्निग्ध है, तीखा है, कफ तथा वातको नाश करता है ॥ ४२० ॥

फाणितगुणाः ।

फाणितं गुर्वभिष्यन्दि बृंहणं कफशुक्रलम् ॥ ४२१ ॥

फाणित (राब अथवा खांड)—भारी है, अभिष्यन्दी (जुखामको पैदा करनेवाली) है पुष्टिकारक है, कफ तथा शुक्रको उत्पन्न करनेवाली है ॥ ४२१ ॥

सामान्येक्षुरसगुणाः ।

इक्षुरसो हिमो वृष्यस्तर्पणो जीवनः परः ।
वातासृक्पित्तजित्स्वादुः स्निग्धः प्रीणनबृंहणः ॥४२२॥

ईखका रस-शीतल है, वीर्य्यको बढानेवाला है, तृप्तिकारक है, आयुको बढानेवाला है, वात, तथा रक्तपित्तको जीतनेवाला है, स्वादिष्ठ है, चिकना है, प्रसन्न करनेवाला है तथा पुष्टिकारक है ॥ ४२२ ॥

दन्तनिष्पीडितेक्षुरसगुणाः ।

रक्तप्रसादनो वृष्यो दन्तनिष्पीडितो रसः ॥४२३॥

दाँतोंसे चूसा हुवा ईखका रस-रक्तको प्रसन्न करनेवाला तथा वीर्य्यको बढानेवाला है ॥ ४२३ ॥

गुडगुणाः ।

गुडो वृष्यो गुरुः स्निग्धो वातघ्नो मूत्रशोधनः ।
नातिपित्तकरो मेदः कफक्रिमिबलप्रदः ॥ ४२४ ॥

गुड—वीर्य्यको बढानेवाला है, भारी है, चिकना है वातको नाश करता है मूत्रशोधक है । पित्तको अधिक नहीं पैदा करता, मेद, कफ, कृमि तथा बलको उत्पन्न करता है ॥ ४२४ ॥

पुराणगुडगुणाः ।

गुडः पुराणोऽतिगुणो वातहासृक्प्रसादनः ।
पित्तघ्नो मधुरः स्निग्धो बल्यः पथ्यो विशेषतः ४२५

पुराना गुड—अत्यन्त गुणोंवाला हैं, वातनाशक है, रक्तको प्रसन्न करनेवाला है, पित्तनाशक है, मधुर है, चिकना है, बलकारक है तथा विशेष करके पथ्य है ॥ ४२५ ॥

खण्डगुणाः ।

खण्डं वृष्यतमं बल्यं चक्षुष्यं वात पित्तनुत् ॥४२६॥

खाँड—अत्यन्त वीर्यवर्द्धक है, बलकारी है नेत्रोंको हितकारी है, वात तथा पित्तको नाश करती है ॥ ४२६ ॥

शर्करागुणाः ।

शर्करा ज्वरपित्तासृग्मूर्च्छाच्छर्दितृषापहा ॥४२७॥

शक्कर—ज्वर, रक्तपित्त, मूर्च्छा, वमन, तथा प्यासको नाश करती है ॥ ४२७ ॥

तमराजगुणाः ।

तृष्णाघ्नस्तमराजस्तु ज्वरदाहास्रपित्तनुत् ॥ ४२८ ॥

तमराज (शक्करका भेद)—प्यासको दूर करता है, ज्वर, दाह, तथा रक्तपित्तको नाश करता है ॥ ४२८ ॥

लसीकादीनामुत्तरोत्तरं निर्मलत्वादिना गुणवत्त्वमाह ।

लसीका फाणितगुडं खण्डं मत्स्यण्डिका सिता ।
निर्मला लघवो ज्ञेयाः शीतवीर्य्या यथोत्तरम् ॥४२९॥
यथा यथैषां नैर्मल्यं गुणवत्स्यात्तथा तथा ॥४३०॥

शीरा, राब, गुड, खाँड, बूरा, तथा मिश्री, यह क्रमसे निर्मल और हलके उत्तरोत्तर समझने चाहिये अर्थात् शीरासे राब, राबसे गुड, और गुडसे खाँड, अधिक निर्मल तथा शीतवीर्य्य हैं । यह जैसे २ निर्मल किये जाँय वैसे २ ही अधिक गुणवाले होते हैं ॥ ४२९ ॥ ४३० ॥

इति इक्षुगुणाः ॥

अथ हिंग्वादीनां गुणमाह ।

हिंगुगुणाः ।

हिंगु तीक्ष्णं कटुरसं शूलाजीर्णविबन्धनुत् ।
लघूष्णं पाचनं स्निग्धं दीपनं कफवातजित् ॥४३१॥

हींग—तीक्ष्ण है, कटु है, शूल, अजीर्ण तथा विबन्धको नाश करती है । हलकी है उष्ण है, पाचन है, चिकनी है अग्निदीपन है, कफ तथा वातको जीतनेवाली है ॥ ४३१ ॥

जीरकगुणाः ।

जीरकं रुचिकृत्स्वादु गन्धाढ्यं कफवातजित् ।
पाके च कटु तीक्ष्णोष्णं लघु पित्ताग्निवर्द्धनम् ४३२॥

जीरा—रुचिको उत्पन्न करता है, स्वादिष्ठ है, सुन्दरगन्धवाला है, कफ तथा वातको जीतनेवाला है, पाकमें कडू है, तीक्ष्ण है, गरम है, हलका है, पित्त तथा अग्निको बढानेवाला है ॥ ४३२ ॥

बाष्पीकागुणाः ।

बाष्पीका कटुतीक्ष्णोष्णा कृमिशोथापहा मता४३३

वाष्पिका-कटु है, तीक्ष्ण है, गरम है, कृमि तथा शोथको नाश करती है इसको हिङ्गुपत्री भी कहते हैं ॥ ४३३ ॥

आर्द्रधन्याकगुणाः ।

धन्याकमार्द्रं मधुरं सुगन्धि रुचिकारकम् ॥ ४३४ ॥

गीली धनियाँ-मधुर है, सुन्दर गन्धित है तथा रुचिको करनेवालीहै ॥ ४३४ ॥

शुष्कधन्याकगुणाः ।

शुष्कन्तु कफवातघ्नं दाहच्छर्दितृषापहम् ॥ ४३५ ॥

सूखी धनियां-कफ तथा वातको नाश करती है, दाह, वमन, तथा प्यासको दूर करती है ॥ ४३५ ॥

कासुन्दीवटिकागुणाः ।

कासुन्दीवटिका हृद्या वातश्लेष्मरुजापहा ।
अग्निसंदीपनी रुच्या मलवातानुलोमनी ॥ ४३६ ॥

कसोंदीवटिका-हृदयको हितकरनेवाली है, वात तथा कफके रोगोंको दूर करती है, अग्निको दीपन करती है, रुचिकारक है, मल तथा वायुको अनुलोम करती (निकालती) है ॥ ४३६ ॥

हरिद्रागुणाः ।

हरिद्रा कफवातास्रशोथकण्डूरुजापहा ॥ ४३७ ॥

हलदी-कफ, वातरक्त, शोथ, तथा खाजको दूर करती है ॥ ४३७ ॥

शतपुष्पागुणाः ।

शताह्वानिलदाहामशूलतृट्छर्दिनाशिनी ॥ ४३८ ॥

सोया-वात, दाह, आम, शूल, प्यास, तथा वमनको नाश करती है ॥ ४३८ ॥

मधुरीगुणाः ।

मधुरी रोचनी वृष्या दाहासृक्पित्तनाशिनी ॥ ४३९ ॥

सौंफ-रोचक है, वीर्य्यको बढानेवाली है, दाह तथा रक्तपित्तको नाश करती है ॥ ४३९ ॥

यवानीगुणाः ।

यवानी कोष्ठशूलघ्नी हृद्या पित्ताग्निकारिणी ।
समीरणबलासघ्नी कृमीणां चैव नाशिनी ॥४४०॥

अजवायन—कोष्ठकी शूल नास करती है, हृदयको हितकारी है, पित्त तथा अग्निको उत्पन्न करती है, वात तथा कफको नाश करती है। तथा कृमियोंको नाश करती है ॥ ४४० ॥

शुष्कपिप्पलीगुणाः ।

पिप्पली मधुरा वृष्या कटुका दीपनीसरा ।
स्निग्धोष्णा मारुतश्लेष्मकासश्वासविनाशिनी४४१

सूखी पीपल—मधुर है, वृष्य है, कटु है, अग्निदीपन है, सर (दस्तावर) है, चिकनी है, गरम है, वात, कफ, खाँसी तथा श्वासको दूर करती है ॥ ४४१ ॥

आर्द्रपिप्पलीगुणाः ।

पिप्पल्यार्द्रा स्वादुगुर्वी शीता स्निग्धा कफापहा४४२

गीली पीपल—स्वादिष्ठ है, भारी है, शीतल है, चिकनी है कफको नाश करती है ॥ ४४२ ॥

आर्द्रमरिचगुणाः ।

मरिचं स्वादुपाक्यार्द्रं गुरु श्लेष्मप्रसेकि च ॥४४३॥

गीली काली मिरच—पचनेमें स्वादिष्ठ हैं, भारी हैं तथा कफको निकालनेवाली हैं ॥ ४४३ ॥

शुष्कमरिचगुणाः ।

शुष्कं रुच्याग्निदं रूक्षं कटूष्णं लघु शुक्रनुत् ॥४४४॥

सूखी काली मिरच—रुचि और अग्निको देने वाली है रूखी है, कटु है गरम हैं, हलकी है तथा शुक्रनाशक हैं ॥ ४४४ ॥

शुण्ठीगुणाः ।

शुण्ठी तु कफवातघ्नी सस्नेहा लघुदीपनी ।
विपाके मधुरा वृष्या हृद्योष्णा कटुरोचनी ॥४४५॥

सोंठ—कफ तथा वातको नाश करती है, चिकनी है, हलकी है, दीपन है, पाकमें मधुर है, वीर्य्यवर्द्धक है, हृदयको हितकारी है, गरम है, कटु है तथा रोचक है ॥ ४४५ ॥

आर्द्रकगुणाः ।

आर्द्रकं कफवातघ्नं विबन्धानाहशूलनुत् ॥ ४४६ ॥

अदरख—कफ तथा वातको नाश करती है, विबन्ध, आनाह (अफरा) तथा शूलको नाश करती है ॥ ४४६ ॥

सर्षपसिद्धार्थयोर्गुणाः ।

सर्षपः कफवातघ्नस्तीक्ष्णोष्णो रक्तपित्तकृत् ।
कटुकः कृमिकुष्ठघ्नः सिद्धार्थश्चापि तद्गुणः ॥४४७॥

सरसों—कफ तथा वातको नाश करती है, तीक्ष्ण तथा उष्ण है, रक्तपित्तको उत्पन्न करती है, कडवी है, कृमि और कुष्ठको नाश करती है पीली सरसोंमें भी यही गुण हैं ॥ ४४७ ॥

राजिकगुणाः ।

राजिका कटुतीक्ष्णोष्णा कृमिशोथविनाशिनी४४८

राई—कटु है तीक्ष्ण है, गरम है, कृमि तथा शोथको नाश करनेवाली है॥४४८॥

रसोनगुणाः ।

लशुनः क्षारमधुरः कण्ठ्यो वृष्यो गुरुः सरः ।
भग्नसन्धानकृद्बल्यो रक्तपित्तप्रदूषणः ॥ ४४९ ॥

लहसुन—क्षार है, मधुर है, कण्ठको हितकारी है, वीर्य्यको बढानेवाला है, भारी है, दस्तावर है, टूटे स्थानको जोडनेवाला है, बलकारक है तथा रक्तपित्तको दूषित करता है ॥ ४४९ ॥

पलाण्डुगुणाः ।

पलाण्डुर्मधुरो वृष्यः कटुः स्निग्धोऽनिलापहः ।
बल्यः पित्ताविरोधी च कफनुत्तर्पणो गुरुः ॥४५०॥

प्याज–मधुर है, वीर्य्यको बढानेवाला है, कटु है, स्निग्ध है, वातको नाश करता है, बलकारक है, पित्तका विरोधी है, कफको नाश करता है, तृप्तिकारक है, भारी है ॥ ४५० ॥

गुडत्वग्गुणाः ।

गुडत्वक् कफशुक्रामवातघ्नं मधुरं कटु ॥ ४५१ ॥

दालचीनी–कफ, शुक्र, आम, तथा वातको नष्ट करती है, मधुर है तथा कटु है ॥ ४५१ ॥

शुष्कतेजपत्रगुणाः ।

शुष्कपत्रं ज्वरश्लेष्मपित्तघ्नं वह्निवर्द्धनम् ॥ ४५२ ॥

तेजपत्र–ज्वर, कफ तथा पित्तको नाश करता है तथा अग्निको बढाता है ॥ ४५२ ॥

सैन्धवगुणाः ।

सैन्धवं दोषजिद्वृष्यं चक्षुष्यमविदाहि च ।
अग्निसंदीपनं स्निग्धं रोचनं मधुरं लघु ॥ ४५३ ॥

सैंधव लवण–तीनो दोषोंको जीतता है, वीर्य्यको बढाता है, नेत्रोंको हितकारी है, दाह नहीं करता, अग्निको दीपन करता है, स्निग्ध है, रुचिकारी है, मधुर है, हलका है, ॥ ४५३ ॥

सौवर्च्चलगुणाः ।

सौवर्च्चलं रुचिकरं वीर्य्योष्णं विषदं कटु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नं किञ्चित्पित्तकरं लघु ॥४५४॥

कालानमक–रुचिकारी है, उष्णवीर्य्य है, स्वच्छ है, कटु है । गुल्म शूल तथा विबन्धको नाश करता है, किञ्चित् पित्तकारक है, हलका है ॥ ४५४ ॥

बिडलवणगुणाः ।

बिडं लवणमुत्क्लेदि वह्नेर्बलविबन्धनुत् ।
मलवातामविष्टम्भशूलाटोपविबन्धनुत् ॥ ४९५ ॥

बिडलवण—उबकाई लाता है, अग्निको बलवान् करता है । तथा विबन्धको नाश करता है । मल, वात, आम, विष्टम्भ, शूल तथा अफराजन्य विबन्धको नाश करता है ॥ ४९५ ॥

औद्भिदलवणगुणाः ।

औद्भिदं तीक्ष्णमुत्क्लेदि सक्षारं कटु तिक्तकम् ४९६ ॥

औद्भिदलवण—तीक्ष्ण है, उबकाई करता है, क्षार है, कटु तथा तिक्त है ४९६

साम्भारिलवणगुणाः ।

विबन्धानाहशूलघ्नं लोके साम्भारिसंज्ञकम् ४९७ ॥

सांभरनमक—विबन्ध, अफरा, तथा शूलको नाश करता है ॥ ४९७ ॥

सामुद्रलवणगुणाः ।

सामुद्रं लवणं पाके नात्युष्णमविदाहि च ।
भेदकं मधुरं स्निग्धं शूलघ्नं नातिपित्तलम् ॥ ४९८ ॥

समुद्रलवण—पाकमें किञ्चित् उष्ण तथा अविदाही है । दस्तावर है, मधुर है, स्निग्ध है, शूलको नाश करता है तथा अतिपित्तकारी नहीं है ॥ ४९८ ॥

पांशुलवणगुणाः ।

पांशुजं लवणं भेदि पाचनं पित्तकारकम् ।
रोचनं दीपनं स्वादु रेचनं मारुतापहम् ॥ ४९९ ॥

पांशु लवण—दस्तावर है, पाचन है, पित्तकारक है । रोचन है, अग्निदीपन है, स्वादिष्ठ है, रेचक है तथा वातको नाश करता है ॥ ४९९ ॥

प्रसिद्धलवणगुणाः ।

लोकप्रसिद्धं लवणं पाचनं दीपनं सरम् ।
कफवातक्रिमिहरं लेखनं पित्तकोपनम् ॥ ४६० ॥

संसारमें प्रसिद्ध साधारण लवण—पाचन है, दीपन है, दस्तावर है । कफ, वात, तथा कृमियोंको नाश करता है लेखन (मलको फाडकर निकालनेवाला) है तथा पित्तको कुपित करता है ॥ ४६० ॥

यवक्षारगुणाः ।

यवक्षारो जयेदर्शः श्वासान् वातकफामयान् ।
गुल्महृद्ग्रहणीपाण्डुप्लीहानाहगलामयान् ॥४६१॥

जवाखार—बवासीर, श्वास, वात तथा कफके रोगोंको जीतता है । गुल्म, हृद्रोग, ग्रहणी, पाण्डु, प्लीहा, आनाह तथा गलेके रोगोंकोभी जीतनेवालाहै ४६१

सर्जिकाक्षारगुणाः ।

तस्मादल्पांतरगुणः सर्जिकाक्षार उच्यते ॥ ४६२ ॥

सज्जीखार—जवाखारके अपेक्षा कुछ हीनगुणवाला कहा है ॥ ४६२ ॥

टंकणक्षारगुणाः ।

श्लेष्मघ्नष्टंकणक्षारस्तीक्ष्णोष्णो वह्निवर्द्धनः ।
निरुक्षणोऽनिलकरो भेदनः पित्तवर्द्धनः ॥ ४६३ ॥

सुहागा—कफनाशक है, तीक्ष्ण है, गरम है, अग्निको बढानेवाला है, रूखा है, वातकारक है, दस्तावर है, तथा पित्तको बढानेवाला है ॥ ४६३ ॥

पलाशादिक्षारगुणाः ।

पलाशधवपूतीककरञ्जपाटलादिजाः ।
क्षारास्तु पाचनाः सर्वे रक्तपित्तहराः सराः ॥४६४॥
गुल्मार्शःकृमिपुंस्त्वघ्नाः शर्कराश्मरिनाशनाः ४६५

पलाश (ढाक), धव, पूतिकरंज तथा पाटला आदिकोंके क्षार (खार) पाचक हैं, रक्तपित्तको हरण करते हैं, दस्तावर हैं, गुल्म, बवासीर, कृमि, पुरुषता, इनको नाश करते हैं शर्करा तथा अश्मरी (पथरी) को नाश करते हैं॥४६४॥४६५॥

इति हिंग्वादि वर्गः ॥

अथ अन्नवर्गमाह ।

उत्तमान्नकथनम् ।

तण्डुलाः शालयो धौता वारिमध्ये निवासिताः ।
स्थाल्यां तप्तजले सिद्धं भक्तं भवति शोभनम् ४६६॥

शालिधानके चावल-पानीसे अच्छे प्रकार धोकर पानीमें ही भिगोरक्खे फिर पकते हुए पानीके बरतनमें छोडकर पकावे सिद्ध होनेपर यह उत्तम भात होजाता है ॥ ४६६ ॥

अन्नसाधारणगुणाः ।

अन्नं वृद्धिकरं वृष्यं प्रीणनं बृंहणं गुरु ।
धात्विंद्रियकरं बल्यं क्षुत्क्षामायासकार्श्यजित्४६७

अन्न-देहकी वृद्धि करता है, बीर्य्यको बढाता है, तृप्तिदायक है, पुष्टिकारक है, भारी है। धातु तथा इन्द्रियोंको बढानेवाला है, बलकारक है क्षुधा, दुर्बलता, थकावट तथा कृशताको जीतनेवाला है ॥ ४६७ ॥

नवान्नगुणाः ।

नवान्नं श्लेष्मलं स्वादु सुस्निग्धं बृंहणं गुरु ॥४६८॥

नया अन्न-कफको उत्पन्न करता है, स्वादिष्ठ है चिकना है पुष्टिकारक है तथा भारी है ॥ ४६८ ॥

पुराणान्नगुणाः ।

पुराणं विरसं रूक्षं पथ्यं वह्निप्रदीपनम् ॥ ४६९ ॥

पुराना अन्न-विरस (रसहीन) है, रूखा है, पथ्य है तथा अग्निदीपक है ॥ ४६९ ॥

अत्युष्णाद्यन्नगुणाः ।

अत्युष्णान्नं बलं हन्ति शीतं शुष्कं च दुर्जरम् ॥ ४७० ॥

अत्यन्त उष्ण अन्न—बलको नाश करता है, शीतल अन्न, तथा शुष्क (सूखा) अन्न दुर्जर है ॥ ४७० ॥

क्लिन्नतण्डुलसंयुक्तयोश्चान्नयोर्गुणाः ।

अतिक्लिन्नं ग्लानिकरं दुर्जरं तण्डुलान्वितम् ॥ ४७१ ॥

अत्यन्त क्लिन्न (गिलगिला) अन्न—ग्लानिकारक है, खिचडी आदि भातसे, किञ्चित् देरमें पाचन होती है ॥ ४७१ ॥

जलधौतसद्योन्नगुणाः ।

सद्योन्नं वारिणा धौतं शीघ्रपाकि हिमं लघु ॥ ४७२ ॥

ताजा अन्न—अर्थात् जिस भातके ऊपरसे पीछे (मांड) उतार दी गई हो वह ताजा भात—जल्दी पचनेवाला है शीतल है तथा हलका है ॥ ४७२ ॥

जलसंयुक्तपर्य्युषितान्नगुणाः ।

त्रिदोषकोपनं रूक्षं वार्य्यन्नं निशि संस्थितम् ॥ ४७३ ॥

जलमें बना हुवा अन्न रातभर पडा रहनेसे—त्रिदोषको कुपित करता है और रूखा होता है जैसे दाल चावल आदि इसीलिये घीमें पकी हुई मिठाई आदिको बासी होनेपर भी खासक्ते हैं ॥ ४७३ ॥

भृष्टतण्डुलान्नगुणाः ।

भृष्टतण्डुलजं चान्नं लघु वह्निप्रदीपनम् ॥ ४७४ ॥

भुने हुए चावलोंका भात—हलका है तथा अग्निदीपक है ॥ ४७४ ॥

यवागूगुणाः ।

यवागूर्ज्वरतृष्णाघ्नी लघ्वी बस्तिविशोधिनी ।
अतिसारे ज्वरे दाहे हिता वह्निप्रदीपनी ॥ ४७५ ॥

यवागू—ज्वर तथा प्यासको दूर करती है, हलकी है, बस्तिको शुद्ध करती है, अतीसार, ज्वर तथा दाहमें हितकारी है और अग्निको दीपन करनेवाली है ॥ ४७५ ॥

विलेपीगुणाः ।

विलेपी तर्पणी लघ्वी ग्राहिणी क्षुत्तृषापहा ॥४७६॥

विलेपी-तृप्तिकारक है, हलकी है, ग्राही है, क्षुधा तथा तृषाको नाश करती है ॥ ४७६ ॥

पेयागुणाः ।

पेया स्वेदाग्निजननी वातवर्चोनुलोमनी ।
क्षुत्तृष्णाग्लानिदौर्बल्यकुक्षिरोगविनाशिनी॥४७७॥

पेया (पीनेके योग्य पदार्थ)-पसीना, तथा अग्निको उत्पन्न करनेवाली है, वायु तथा मलको अनुलोमन करनेवाली (निकालनेवाली) है । क्षुधा, प्यास, ग्लानि, दुर्बलता तथा कुक्षिरोगोंको नाश करनेवाली है ॥ ४७७ ॥

मण्डगुणाः ।

क्षुद्बोधनो बस्तिविशोधनश्च प्राणप्रदः शोणितवर्द्धनश्च ।
ज्वरापहारीकफपित्तहन्ता वायुंजयेदष्टगुणोहि मंडः४७८

मण्ड (मांड)-भूखको बढाता है, वस्ति स्थानको शुद्ध करता है, आयुको बढानेवाला है तथा रक्तवर्द्धक है । ज्वरको नाश करनेवाला है, कफ तथा पित्तको नाश करनेवाला तथा वायुको जीतनेवाला है यह आठ गुण माडमें हैं ॥ ४७८ ॥

भृष्टतण्डुलगुणाः ।

सुगन्धिः कफहा रूक्षः पित्तलो भृष्टतण्डुलः ॥४७९॥

भूने चावल-सुगन्धित हैं, कफको नाश करते हैं, रूखे हैं तथा पित्तल हैं ॥४७९॥

चिपिटकगुणमाह ।

पृथुका गुरवः स्निग्धाः कफविष्टम्भकारकाः ।
बल्याः सक्षीरभावात्तु वातघ्ना भिन्नवर्चसः ॥ ४८० ॥

पृथुक (चिउडे) भारी हैं चिकने हैं, कफ तथा विष्टम्भको करते हैं । दूधमें भीगे हुए चिउडे-बलकारक हैं, वातनाशक हैं, मलभेदक हैं ॥ ४८० ॥

लाजागुणाः ।

लाजास्तृट्छर्द्यतीसारमेहमेदःकफच्छिदः ।
कासपित्तामशमना दीपना लघवो हिमाः ॥४८१॥

लाजा (लाई, खील,) प्यास, वमन, अतीसार, प्रमेह, मेद तथा कफको नाश करती हैं। खांसी, तथा पित्तको शमन करती है, दीपन हैं, हलकी हैं, तथा शीतल हैं ॥ ४८१ ॥

लाजामण्डगुणाः ।

लाजामण्डोऽग्निजननो दाहतृष्णानिवारणः ।
ज्वरातिसारशमनः श्लेष्मलः सामपाचनः ॥४८२॥
मन्दाग्निविषमाग्नीनां बालस्थविरयोषिताम् ।
देयं च सुकुमाराणां लाजमण्डः सुसंस्कृतः ॥४८३॥

खीलोंका मांड—अग्निको उत्पन्न करता है, दाह तथा तृष्णाको निवारण करता है, ज्वर और अतीसारको समान करताहै, कफकारक है, आमको पचानेवाला है। मन्दाग्नि तथा विषमाग्निवालोंको बालक, वृद्ध, स्त्री तथा सुकुमार मनुष्योंको सुन्दर संस्कार कियेहुए खीलोंके मांडको देना चाहिये ॥ ४८२ ॥ ४८३ ॥

लाजपेयागुणाः ।

लाजपेया श्रमघ्नी तु क्षामकण्ठस्य देहिनः ।
क्षुत्तृष्णाग्लानिदौर्बल्यकुक्षिरोगविनाशिनी॥४८४॥

खीलोंकी पेया—क्षीणकण्ठवाले मनुष्योंके श्रमको दूर करनेवाली है । क्षुधा, प्यास, ग्लानि, दुर्बलता तथा कुक्षिरोगोंको नाश करती है ॥ ४८४ ॥

यवसक्तुगुणाः ।

यवानां सक्तवो रूक्षा लेखना वह्निवर्द्धनाः ॥४८५॥

जौके सत्तू—रूखे हैं लेखन हैं तथा अग्निको बढानेवाले हैं ॥ ४८५ ॥

मन्थगुणाः ।

मन्थः सद्यो बलकरः पिपासाश्रमनाशनः ॥४८६॥

मन्थ–तत्काल बलको उत्पन्न करता है प्यास और थकावटको दूर करता है ॥ ४८६ ॥

मन्थलक्षणम् ।

सक्तवः सर्पिषा युक्ताः शीतया विपरिप्लुताः ।
नात्यच्छा नातिसान्द्राश्च मन्थ इत्यभिधीयते ४८७

सत्तुओंमें घी मिलाकर उन्होंमें इस प्रकार जल मिलावे कि न तो अधिक पतले हों और न अधिक गाढे हों उसकी मंथ संज्ञा है ॥ ४८७ ॥

धानागुणाः ।

वातलाः कफरोगघ्ना वातवर्चोनुलोमनाः ।
धानासंज्ञास्तु तेऽतीव दुर्जरा लेखनाः स्मृताः४८८॥

धानी या भूने हुए जव–वातल हैं, कफरोगोंको दूर करते हैं, वायु तथा मलको अनुलोमन करते हैं अत्यन्त कठिनतासे पचने वाले हैं तथा लेखन (मलको फाडनेवाले) हैं ॥ ४८८ ॥

सक्तुपिण्डी-सक्त्ववलेहिकयोर्गुणाः ।

गुर्वी पिण्डी खरात्यर्थं लघ्वी सैव विपर्य्ययात् ।
सक्तूनामाशु जीर्य्येत मृदुत्वादवलेहिका ॥ ४८९॥

सत्तुओंकी पिंडी– भारी है, अत्यन्त खर है, इससे विपरीत अर्थात् पिंडीसे नरम–हलकी है सत्तुओंका अवलेह मृदु होनेसे शीघ्र पचता है ॥ ४८९ ॥

वाट्यमण्डगुणाः ।

वाट्यमण्डो विबन्धघ्नः शूलानाहविनाशनः ।
रोचनो दीपनो हृद्यः पित्तश्लेष्मानिलापहः॥४९०॥

वाट्यमण्ड (भूने हुए जौकीबालोंका (मांड) विबन्धको नाश करता है, शूल तथा आनाहको नाश करता है । रुचिकारी है दीपन है हृदयको हित-कारी है पित्त, कफ, तथा वायुको नाश करता है ॥ ४९० ॥

मुद्गयूषगुणाः ।

मुद्गयूषोऽग्निदो हृद्यः शुद्धानां व्रणिनामपि ।
पथ्यो बलासपित्तघ्नो ज्वरहा च कृताकृतः॥४९१॥

कृत और अकृत इन दोनों प्रकारके मूँगका जूस–अग्निदीपक है, हृदयको हित है शुद्ध पुरुषों तथा व्रणवालोंके लिये पथ्य है, कफ तथा पित्तको नाश करता है और ज्वरको नाश करता है ॥ ४९१ ॥

अकृतलक्षणमाह ।

अस्नेहलवणं सर्वमकृतं कटुकैर्विना ॥ ४९२ ॥

स्नेह (घी तेल आदि) तथा लवणसे रहित तथा कटु (मिर्च सोंठ) आदि-कोंसे रहित मूँगके यूषको अकृत कहते हैं ॥ ४९२ ॥

कृतलक्षणमाह ।

विज्ञेयं लवणस्नेहकटुकैः संस्कृतः कृतम् ॥ ४९३ ॥

नमक स्नेह (घी तेल) कटु (मिर्च सोंठ आदिसे संस्कार किये (बनाये) हुए मूँगके यूषको कृत कहते हैं ॥ ४९३ ॥

रागषाडवलक्षणमाह ।

स तु दाडिममृद्वीकायुक्तः स्याद्रागषाडवः ॥४९४॥

उस मूँगके यूषमें अनार और दाखका रस मिलानेसे उसको रागषाडव कहते हैं ॥ ४९४ ॥

तस्य गुणाः ।

रुचिकृल्लघुपाकश्च दोषाणामविरोधकृत् ॥ ४९५ ॥

रुचिकारक है, पचनेमें हलका है, दोषों (वात पित्त कफ) से विरोध नहीं करता ॥ ४९५ ॥

मसूरयूषगुणाः ।

मसूरयूषः संग्राही बृंहणश्च प्रमेहजित् ।
पित्तश्लेष्मज्वरहरस्तथातीसारनाशनः ॥ ४९६ ॥

मसूरका यूष–ग्राही है, पुष्टिकारक है, प्रमेहका जीतनेवाला है, पित्त, कफ, ज्वरको हरनेवाला है तथा अतीसारको नाश करता है ॥ ४९६ ॥

कुलत्थयूषगुणाः ।

कुलत्थयूषोऽनिलहा शर्कराश्मरिनाशनः ।
तूणीप्रतूणीकासार्शोगुल्ममेदःकफापहः ॥ ४९७ ॥

कुलथीका यूष–वातनाशक है शर्करा तथा पथरीको नाश करता है । तूणी, प्रतूणी, कास, बवासीर, गुल्म, मेद तथा कफको दूर करता है ॥ ४९७ ॥

माषयूषगुणाः ।

माषयूषो गुरुर्भेदी वातघ्नो दीपनो मतः ॥ ४९८ ॥

उडदका जूस–भारी है दस्तावर है वातनाशक है, तथा दीपन है ॥ ४९८ ॥

अथ खडयूषलक्षणमाह ।

तक्रं कपित्थचांगेरी मरिचाजाजिचित्रकैः ।
सुपक्वखडयूषोयमथः काम्बिलकः परः ॥ ४९९ ॥

तक्र, (मट्ठा) कपित्थ (कैथ) चाङ्गेरी, (अमलोनी) मिर्च, जीरा तथा चित्रकसे पकाये हुए यूषको खडयूष कहते हैं ॥ ४९९ ॥

अथ काम्बलिकयूषलक्षणमाह ।

दध्यम्ललवणस्नेहतिलमाषविपाचितः ॥ ५०० ॥

खट्टा दही, नमक, घृतादि स्नेह, तिल तथा उडद इनको पकानेसे बने हुए यूषको काम्बलिक यूष कहते हैं ॥ ५०० ॥

खडकाम्बलिकयूषयोर्गुणाः ।

खडकाम्बलिकौ यूषौ ग्राहिवातकफापहौ ॥५०१॥

खडयूष तथा काम्बलिक यूष यह दोनों यूष–ग्राही हैं, वात तथा कफको नाश करते हैं ॥ ५०१ ॥

इति अन्न वर्गः ॥

अथ मत्स्यपाकविधिगुणाश्च ।

दग्धमत्स्यगुणाः ।

दग्धमत्स्यो गुरुर्वृष्यो बृंहणः प्राणवर्द्धनः ।
क्षीणशुक्राश्च ये केचिद्भग्नजर्जरिताश्च ये ॥ ५०२ ॥
नित्यं स्त्रीसेवका ये च क्षीणतेजस एव च ।
दग्धमत्स्यो हितस्तेषां सतैललवणान्वितः ॥५०३॥

दग्धमत्स्य–भारी हैं वीर्य्यको बढाती हैं, पुष्टिकारक हैं, प्राणोंको बढाती हैं। क्षीणशुक्र तथा जो मनुष्य भग्नसे जर्जरित हैं नित्य मैथुन करनेवालोंको तथा क्षीण तेजवाले पुरुषोंको नमक तथा तेलसे संयुक्त दग्ध मत्स्य सेवन करना हित है ॥ ५०२ ॥ ५०३ ॥

भृष्टमत्स्यगुणाः ।

तस्माद्धीनगुणः किञ्चिद्भृष्टमत्स्य उदाहृतः ।
कफघ्नपित्तजननो रूक्षः शोधन एव च ॥ ५०४ ॥

भूनी हुई मछली–दग्ध मछलियोंकी अपेक्षा कुछ न्यून गुणवाली कही हैं कफनाशक हैं पित्तको उत्पन्न करती हैं, रूखी हैं, शोधन करती हैं ॥ ५०४ ॥

जम्बीररसयुक्तदग्धमत्स्यगुणाः ।

दग्धमत्स्यस्तु जम्बीररसाक्तो वातनाशनः ।
मधुरो रोचनो हृद्यो बृंहणो बलवर्द्धनः ॥ ५०५ ॥

जम्बीररसयुक्त दग्ध मत्स्य–वातको नाश करती हैं मधुर हैं रोचक हैं हृदयको हितकरनेवाली हैं पुष्टिकारक हैं तथा बलको बढानेवाली हैं ॥ ५०५ ॥

मत्स्यपुटपाकविधिः ।

पलालवेष्टितो मत्स्यः कर्दमेन विलेपितः ।
दग्धोऽङ्गारे सलवणो दग्धमत्स्यः प्रकीर्तितः॥५०६॥

पलाल (भूसा या घास) से लपेटी हुई मछलियोंके ऊपर कीचड लपेट कर अंगारोंमें जलायकै नमक मिलाया जाय उनको दग्धमत्स्य कहते हैं ॥ ५०६ ॥

सन्तोलितमत्स्यगुणाः ।

आर्द्रककटुतैलेन सम्यक् सन्तोलितो भवेत् ।
स स्वादुः कफवातघ्नः शुक्रलो बलवर्द्धनः ॥५०७॥

अदरख और कडू तेलसे सम्यक् प्रकारसे पकाई हुई मछलियोंको सन्तोलित कहते हैं यह स्वादिष्ठ हैं, कफ तथा वातको नाश करती हैं, शुक्रको उत्पन्न करती हैं बलको बढाती हैं ॥ ५०७ ॥

मत्स्यव्यञ्जनगुणाः ।

व्यञ्जनं शाकमत्स्याख्यं हृद्यं वृष्यञ्च पुष्टिकृत् ॥५०८॥

मछलियोंका शाक-हृदयको हितकारी है, वीर्य्यवर्द्धक तथा पुष्टिकरनेवाला है ॥ ५०८ ॥

मत्स्यघण्टगुणाः ।

मत्स्यघण्टो बलकरो वातघ्नो रोचनः परः ॥५०९॥

मत्स्यघण्ट-बलकारक है, वातनाशक है तथा रुचिकारक है ॥ ५०९ ॥

मांसरसगुणाः ।

रसो मांसस्य चक्षुष्यो बृंहणः प्राणवर्द्धनः ।
वृष्यो वातविकारघ्नः स्मृत्योजःस्वरवर्द्धनः ॥५१०॥
भग्नविश्लिष्टसन्धीनां कृशानां व्रणिनां हितः ५११॥

मांसका रस (सोरुवा)-नेत्रोंको हितकारी है, बृंहण है, प्राणोंको बढाता है, वृष्य है, वातविकारोंको नाश करता है, स्मृति, ओज तथा स्वरको बढानेवाला है भग्नरोग तथा ढीली सन्धिवालोंको कृशोंको तथा व्रणीरोगियोंको हितकारी है ॥ ५१० ॥ ५११ ॥

तैलसिद्धमांसगुणाः ।

मांसं यत्तैलसंसिद्धं वीर्य्योष्णं पित्तलं कटु ।
अग्निसंदीपनं हृद्यं दृष्टिनुत्पुष्टिकृद्गुरु ॥ ५१२ ॥

तेलमें पकाया हुवा मांस—उष्णवीर्य्य है, पित्तल है, कटु है, अग्निदीपन है, हृदयको हितकारी है, दृष्टिको नाश करता है पुष्टिकारक तथा भारी है ॥५१२॥

घृतसिद्धमांसगुणाः ।

मांसं तु घृतसंसिद्धं दृष्टिदं पुष्टिकृल्लघु ।
प्रीणनं सर्वधातूनां विशेषान्मुखशोषिणम् ॥५१३॥

घृतमें पकाया हुवा मांस—दृष्टिदायक है, पुष्टिकारक है, हलका है, सब धातु-वोंको तृप्त करता विशेष करके मुखशोषवाले रोगियोंको हितकारक है ॥ ५१३ ॥

परिशुष्कमांसलक्षणम् ।

मांसं बहुघृते पक्वं सिद्धं चोष्णाम्बुना मुहुः ।
जीरकाद्यैः समायुक्तं परिशुष्कं तदुच्यते ॥ ५१४ ॥

बहुत घीमें मांसको भूनकर उष्ण जलसे सिद्ध करे । जीरा आदि पदार्थोंसे संयुक्त उस मांसको परिशुष्क कहते हैं ॥ ५१४ ॥

परिशुष्कमांसगुणाः ।

परिशुष्कं स्थिरं स्निग्धं हर्षणं प्रीणनं गुरु ।
पित्तघ्नं बलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवर्द्धनम् ॥ ५१५ ॥

परिशुष्क मांस—देहको स्थिर करता है, स्निग्ध है, हर्ष उत्पन्न करनेवाला है भारी है पित्तनाशक है, बल, मेधा, अग्नि, मांस, ओज तथा शुक्रको बढाने-वाला है ॥ ५१५ ॥

अथ प्रदिग्धलक्षणमाह ।

तदेव घनतक्राढ्यं प्रदिग्धं सत्रिजातकम् ॥ ५१६ ॥

पहले कहेहुए परिशुष्क मांसमें नागरमोथा, तक्र, दालचीनी, इलायची, पत्रज मिलाने उसको प्रदिग्धमांस कहते हैं ॥ ५१६ ॥

प्रदिग्धमांसगुणाः ।

प्रदिग्धं बलमांसाग्निवर्द्धनं कफपित्तजित् ॥५१७॥

प्रदिग्ध मांस—बल, मांस तथा अग्निको बढाता है, कफ तथा पित्तको जीतता है ॥ ५१७ ॥

शूलिकाप्रोतमांसगुणाः ।

मांसं तु शूलिकाप्रोतमंगारेण विपाचितम् ।
ज्ञेयं गुरुतरं वृष्यं दीप्ताग्नीनां सदा हितम् ॥ ५१८ ॥

अंगारोंसे पकाया हुवा शूलिकाप्रोतमांस (शींखचे) अत्यन्त भारी है, वृष्य है, दीप्त अग्निवाले मनुष्योंको सदा हित है ॥ ५१८ ॥

अथ वेशवारलक्षणमाह ।

निरस्थिपिशितं पिष्टं स्निग्धं घृतगुडान्वितम् ।
कृष्णामरिचसंयुक्तं वेशवार इति स्मृतम् ॥ ५१९ ॥

निरस्थि (विना हड्डीके) मांसको पीसकर घृत और गुडसे स्निग्ध करै, पीपल, मिर्च संयुक्त बनाये हुए मांसको वेशवार कहते हैं ॥ ५१९ ॥

वेशवारगुणाः ।

वेशवारो गुरुः स्निग्धो बलोपचयवर्द्धनः ॥५२०॥

वेशवार—भारी है, स्निग्ध है, बल तथा स्थूलताको बढानेवाला है ॥ ५२० ॥

अनुक्तव्यञ्जनगुणाः ।

द्रव्येण येन येनेह व्यञ्जनं मत्स्यमांसयोः ।
तस्य तस्य च तत्रोक्तैर्गुणदोषैर्विभावयेत् ॥ ५२१ ॥

जिन २ द्रव्योंसे मत्स्य और मांसके व्यञ्जन बनाये जावैं उनके गुण दोष उसी प्रकार जानना चाहिये ॥ ५२१ ॥ इति व्यञ्जनगुणाः ।

पिष्टकसाधारणगुणाः ।

पिष्टं प्राणकरं रूक्षं विदाहि गुरु दुर्जरम् ॥ ५२२ ॥

पिष्ट (पिट्ठी) प्राणकारक है, रूखी है, दाहकारक है तथा कठिनतासे पचनेवाली है ॥ ५२२ ॥

शालितण्डुलकृतपिष्टगुणाः ।

शालिपिष्टमया भक्ष्याःकफपित्तविनाशनाः॥६२३॥

शालिचावलोंकी पिट्ठी—कफ तथा पित्तको नाश करती है॥ ६२३ ॥

वैदलकृतपिष्टकगुणाः ।

वैदला गुरवो भक्ष्या विष्टम्भिसृष्टमारुताः ॥६२४॥

सेम मूग उडद मटर आदि दो दलोंवाले अन्नोंकी पिट्ठी—भारी है, विष्टम्भकारी है वातको निकालनेवाली है ॥ ६२४ ॥

गुडादिपिष्टककृतगुणाः ।

सगुडाः सतिलाश्चैव सक्षौद्रक्षीरशर्कराः ॥
भक्ष्या हृद्याश्च बल्याश्च गुरवो बृंहणाः पराः॥६२५॥

गुड, तिल, शहद, दूध, शक्करसे बनाईहुई पिट्ठी भक्षण करनेसे—हृदयको हित करती है, बलकारक है भारी है अत्यन्त पुष्टिदायक है॥ ६२५ ॥

स्नेहसिद्धगोधूमकृतभक्ष्यगुणाः ।

सस्नेहाः स्नेहसिद्धाश्च भक्ष्या गोधूमसम्भवाः ।
गुरवस्तर्पणा हृद्या बलोपचयवर्द्धनाः ॥ ६२६ ॥

गेहूँकी पिट्ठी सुन्दर चिकनी तथा घृत आदि स्नेहोंसे पकाईहुई—भारी है तृप्तिकारक है, हृदयको हित करनेवाली है, बल तथा स्थूलताको बढानेवाली है ६२६

घृतपूरलक्षणमाह ।

मर्दितां समितां क्षीरनारिकेलसितादिभिः ।
अवगाह्य घृते पक्वा घृतपूरोऽयमुच्यते ॥ ६२७ ॥

दूध, नारियल, तथा चीनी आदिसे सानकर मर्दित कीहुई गेहूंकी पिट्ठीको घीमें अच्छी तरह पकावे इसको घृत पूर (घेवर) कहते हैं॥ ६२७ ॥

घृतपूरगुणाः ।

घृतपूरो गुरुर्वृष्यः कफकृद्रक्तमांसदः ।
वातपित्तहरो हृद्यः स्वादुः प्राणकरोऽग्निदः ॥६२८॥

घृतपूर (घेवर) भारी हैं, वीर्य्यवर्द्धक हैं, कफकारक हैं, रक्त तथा मांसको देनेवाले हैं वात तथा पित्तको हरण करते हैं, हृदयको हितकारी हैं स्वादिष्ठ हैं, प्राणकारक हैं अग्निदायक हैं ॥ ९२८ ॥

संयावलक्षणगुणाश्च ।

समितामम्बुदुग्धेन खण्डैलामरिचार्द्रकैः ।
घृतपक्वा क्षिपेत् खण्डे संयावो बृंहणो गुरुः ॥९२९॥

जल अथवा दूधसे गेहूंकी पिट्ठीको सानकर खांड, इलायची, मिर्च, अदरख-संयुक्त घीमें पकाकर खांडकी चासनीमें छोडकै सिद्ध करै इसको संयाव कहते हैं यह बृंहण तथा भारी होता है ॥ ९२९ ॥

मधुमस्तकलक्षणगुणाश्च ।

समिता वेष्टिता मध्ये मधु दत्त्वा शृता घृते ।
मधुमस्तकमुद्दिष्टं तद्वृष्यं गुरु दुर्जरम् ॥ ९३० ॥

गेहूंकी पिट्ठीको सानकै उसकी लोईके भीतर शहद भरकै घीमें पकावे इनको मधुमस्तक कहते हैं यह—वृष्य हैं, भारी तथा देरमें पचनेवाले हैं ॥ ९३० ॥

चन्द्रबिन्दुपायसलक्षणगुणाश्च ।

आतप्ततण्डुला धौता परिभृष्टा घृतेन च ।
खंडयुक्तेन दुग्धेन पाचिताः पायसो भवेत् ॥९३१॥
भृष्टजीरचतुर्जातचन्द्रबिन्दुसुरोचनः ॥ ९३२ ॥

चावलोंको अच्छीतरह धोकर थोडासा सुखालेवे फिर घीमें भूनकर खांडके सहित दूधमें पचानेसे पायस (खीर) कहीजाती है इसीमें भूना हुवा जीरा चतुर्जात (तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर) तथा किञ्चित् कर्पूर मिलानेसे सुन्दर रुचिवाली चन्द्रबिन्दु पायस कही जाती है ॥ ९३१ ॥ ९३२ ॥

पर्पटशष्कुल्योर्गुणाः ।

पर्पटा लघवो रूक्षाः शष्कुल्यः कफपित्तलाः॥९३३॥

पापड—हलके तथा रूखे होते हैं । शष्कुली पूरी या कचौरी कफ तथा पित्तको उत्पन्न करती हैं ॥ ९३३ ॥

फेनकगुणाः ।

फेनका लघवो रूक्षा वृष्या पित्तानिलापहाः॥९३४॥

फेनी–हलकी हैं रूखी हैं वृष्य हैं पित्त तथा वायुनाशक हैं ॥ ९३४ ॥

वटलड्डुकयोर्गुणाः ।

वटो विदाही तृष्णाकृल्लड्डुको दुर्जरः पर ॥९३५॥

वट (बडे) दाहकारक हैं, प्यासको करनेवाले हैं । लड्डू–पचनेमें अतिशय दुर्जर (कठिन) हैं ॥ ९३५ ॥

उपयोगविरुद्धतामाह ।

शाकाम्लफलपिण्याककुलत्थलवणामिषैः ।
करीरदधिमांसैश्च प्रायः क्षीरं विरुध्यते ॥ ९३६ ॥

शाक, खट्टेफल, पिण्याक (तिलोंकी खली) कुलथी, नमक, मछली, करील, दही तथा मांस इतने पदार्थोंके साथ दूध खाना प्रायः विरुद्ध (निषेध) है॥९३६॥

प्राणहारी च हारीतो हरिद्रालवणैः कृतः ॥ ९३७ ॥

हलदी और नमकके संग हारीत (हरियल) पक्षीका मांस भक्षण करना प्राणोंको नष्ट करता है ॥ ९३७ ॥

रुवोस्तैलेन संभृष्टं विषं मायूरमाहिषम् ॥ ९३८ ॥

अंडीके तेलमें पकाया हुवा मोर तथा भैंसका मांस विषके समान है॥९३८॥

वराहवसया भृष्टा बलाका तु हरत्यसून् ॥ ९३९ ॥

सूकरकी चरबीसे भूना हुवा बगुलाका मांस देहको नष्ट करता है ॥ ९३९ ॥

संयुक्ता सैव वारुण्या कुल्माषैश्च विरुध्यते ॥९४०॥

बगुलाका मांस मद्य तथा गुल्माषके संग भक्षण करना विरुद्ध है ॥ ९४० ॥

अविं कुसुम्भशाकेन मत्स्यतैलैः कणां त्यजेत्९४१

कुसुम्भेके शाकके संग भेडका मांस तथा मछलीके तेलके संग पीपली खाना त्याग देवे ॥ ९४१ ॥

माषैरिक्षुविकारांश्च काञ्जिकस्तिलशष्कुली॥५४२॥

उडद, इक्षुविकार (सिरका, राब, गुड, खांड, आदि) तथा कांजीके संग तिलोंकी शष्कुली खाना त्याग देना चाहिए ॥ ५४२ ॥

कपोतः सार्षपे भृष्टो घृतं कांस्ये दशाहगम् ॥५४३॥

सरसोंके तेलमें भूना हुवा कबूतरका मांस तथा दश दिन तक कांस्यपात्रमें धरा हुवा घी खाना हानिकारक है ॥ ५४३ ॥

विषं घृतसमं क्षौद्रं मधुना गगनाम्बुना ॥ ५४४ ॥

घी और शहद सम (बराबर २) खाना तथा शहद और आकाशका जल एकमें मिलाकर खाना विष है ॥ ५४४ ॥

मूलकं माषयूषेण मधुना नच भक्षयेत् ॥ ५४५ ॥

उडदके यूषके साथ अथवा शहदके साथ मूली खाना हानिकारक है॥५४५॥

नारिकेलजलेनापि कर्पूरं नैव भक्षयेत् ॥ ५४६ ॥

नारियरके जलके साथ कपूर खाना अयोग्य है ॥ ५४६ ॥

एकत्र सर्वमांसानि विरुध्यन्ते परस्परम् ॥ ५४७ ॥

परस्पर विरुद्ध होनेसे सब मांसोंको एकमें भक्षण करना हानिकारक है॥५४७॥

विरुद्धभोजने ये रोगा जायन्ते तानाह ।

नक्तान्ध्यवीसर्पदकोदराणां विस्फोटकोन्माद-
भगन्दराणाम् । मूर्छामदाध्मानगलग्रहाणां
पाण्ड्वामयस्यामविषस्य चैव ॥ ५४८ ॥
किलासकुष्ठग्रहणीगदानां शोथातिसारज्वर-
पीनसानाम् । सन्तानदोषस्य तथैव मृत्यो-
र्विरुद्धमन्नं प्रवदन्ति हेतुः ॥ ५४९ ॥

विरुद्ध भोजन-रतौंधा, विसर्प, जलोदर, विस्फोटक, उन्माद, भगन्दर, मूर्च्छा, मद, अध्मान, गलग्रह, पांडु, आम, विष, किलास, कुष्ठ, संग्रहणी, शोथ, अतीसार, ज्वर, पीनस, संतानदोष तथा मृत्युको करनेवाला होता है॥९४८॥९४९॥

विरुद्धाहारजनितरोगाणां चिकित्सामाह।

विरुद्धाहारजान् रोगान् विनिहन्ति विरेचनम्।
वमनं शमनं वापि सर्वं वा हितसेवितम् ॥ ९९० ॥

विरुद्ध भोजनोंसे उत्पन्न हुए रोगोंको विरेचन (जुलाब) नाश करता है। वमन तथा शमनकारक पदार्थ अथवा हितकारक भोजनोंके सेवन करनेसे शान्त होजाते हैं ॥ ९९० ॥

इति विरुद्धभोजनम् ॥

अथ भोजनयोगिनः।

भोजनादौ लवणार्द्रकादिभक्षणगुणाः।

भोजनाग्रे सदा पथ्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम्।
अग्निसंदीपनं हृद्यं लवणार्द्रकभक्षणम् ॥ ९९१ ॥

भोजन करनेके पहिले सैंधव नमक और अदरख खाना-पथ्य है, जिह्वा तथा कंठको शुद्ध करता है। अग्निदीपन है तथा हृदयको प्रिय है ॥ ९९१ ॥

आयुर्घृते गुडे रोगा मृत्युर्लीनो विदाहिषु।
आरोग्यं कटुतिक्तेषु बलं मांसे पयःसु च ॥९९२॥

भोजनके आदिमें भक्षण किया हुवा घृत आयुवर्द्धक है गुड रोगजनक है दाहकारक पदार्थ मृत्युदायक तथा कटू और तिक्त पदार्थ आरोग्यताकारक तथा मांस और दूध बलको उत्पन्न करनेवाले समझना चाहिये ॥ ९९२ ॥

क्रमादीनां गुणाधिक्यमाह।

अन्नादष्टगुणं पिष्टं पिष्टादष्टगुणं पयः।
पयसोऽष्टगुणं मांसं मांसादष्टगुणं घृतम् ॥ ९९३ ॥
घृतादष्टगुणं तैलं मर्दनान्न तु भक्षणात् ॥ ९९४ ॥

अन्न (चावलों) से आठगुना पिष्ट (आटा) तथा पिष्टसे आठ गुने अधिक दूधमें गुण हैं । दूधसे अठ गुने मांसमें और मांससे अठ गुने घीमें गुण हैं ॥ घीसे अठगुने देहमें तेल मालिश करनेमें गुण हैं तेल खानेमें नहीं ॥९९३॥९९४॥

आहारगुणाः ।

आहारः प्रीणनः सद्योबलकृद्देहधारकः ॥ ९९५ ॥

आहारशीघ्र तृप्तिकारक है, बलकारक तथा देहको धारण करनेवाला है ॥९९५॥

आहारादिङ्निर्णयः ।

आयुष्यं प्राङ्मुखो भुंक्ते यशस्यं दक्षिणामुखः ।
श्रियं प्रत्यङ्मुखो भुंक्ते ऋतं भुंक्ते ह्युदङ्मुखः९९६॥

आयुकी कामनावाले मनुष्यको पूर्वकी ओर मुख करके भोजन करना चाहिये यशकी इच्छावालेको दक्षिणकी ओर मुख करके भोजन करना चाहिये । लक्ष्मीकी इच्छावालेको पश्चिमको मुख करके और यशकी इच्छावालेको उत्तरकी ओर मुख करके भोजन करना चाहिये किसीके मतमें उत्तरको मुख करके भोजन करना उचित नहीं ॥ ९९६ ॥

भक्षणविषये अन्नादीनां परिमाणमाह ।

कुक्षावन्नेन भागौ द्वावेकं पानेन पूरयेत् ।
वायोः सञ्चरणार्थञ्च चतुर्थमवशेषयेत् ॥ ९९७ ॥

भोजन करते समय उदरके दो भाग अन्नसे तथा एक भाग जलसे भरना चाहिये और प्राणवायुके संचारके लिये उदरके चौथे भागको खाली रखना चाहिये ॥ ९९७ ॥

आचमनगुणाः ।

दन्तान्तरगतं चान्नं शौचेनैवाहरेच्छनैः ।
कुर्य्यादनिर्गतं तद्धि मुखस्यानिष्टगन्धताम्॥९९८॥

भोजन करनेके समय दांतोंके भीतर अन्न घुसजाता है उसको धीरजमें कुल्ले करके निकालना चाहिये यदि दांतोंका अन्न न निकाला जाय तो मुखमें दुर्गंध उत्पन्न होती है ॥ ९९८ ॥

भोजनान्ते कर्त्तव्यता ।

भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यदि दीयते ।
अचिरेणैव तद्वारि तिमिराणि व्यपोहति ॥ ९९९ ॥

भोजन करनेके पश्चात् हाथमें हाथको घिसकर यदि नेत्रोंमें लगाये जायँ तो आंखोंका जल और तिमिररोग बडी जल्दी दूर होजाता है ॥ ९९९ ॥

भुक्त्वाचम्य करं वामं दत्त्वा कुक्षौ ततः पठेत् ।
मन्त्रः--भुक्तं माहेन्द्रहस्तेन वैश्वानरमुखेन च ॥
गण्डुरस्य च कण्ठेन समुद्रस्य च वह्निना ।
वातापिर्भक्षितो येन पीतो येन महोदधिः ॥
यन्मया खादितं पीतं तदगस्त्यो जरिष्यति ॥९६०॥

भोजन करनेके पश्चात् आचमन करके कुक्षिमें बांया हाथ रखकर ऊपरके श्लोक पढे इससे भोजन शीघ्र पचजाता है ॥ ९६० ॥

सुखासीनः क्षणं तिष्ठेद् यावन्न लभते सुखम्॥९६१॥

तिसके अनन्तर जबतक आनन्द न प्राप्त हो तबतक विश्राम करे ॥ ९६१ ॥

भुक्त्वा पादशतं गत्वा वामपार्श्वेण संविशेत् ।
एवं चाधोगतं चान्नं सुखं तिष्ठति जीर्य्यति ॥९६२॥

भोजन करनेके उपरांत सौ कदम इधर उधर टहल कर वाम करवँटसे शयन करे इस प्रकार करनेसे उदरस्थित अन्न सुखपूर्वक पचजाता है ॥ ९६२ ॥

भोजनान्ते उपवेशनादिगुणाः ।

भुक्त्वोपविशतस्तुन्दं शयानस्य वपुर्भवेत् ।
आयुश्चंक्रममाणस्य मृत्युर्धावति धावतः ॥ ९६३ ॥

भोजनके उपरान्त बैठनेसे पेट बढता है शयनसे देह स्थूल (मोटी) होती है, टहलनेसे आयु बढ़ती है दौड़नेसे मृत्यु दौडती है ॥ ९६३ ॥

ताम्बूलभक्षणगुणाः ।

ताम्बूलं कटुतिक्तमुष्णमधुरं क्षारं कषायान्वितम् ।
वातघ्नं कृमिनाशनं कफहरं दुःखस्य विच्छेदनम् ॥
स्त्रीसम्भाषणभूषणं धृतिकरं कामाग्निसन्दीपनम् ।
तांबूले निहितास्त्रयोदश गुणाः स्वर्गेऽपि ते दुर्लभाः ९६४

पान—कटु है, तिक्त है, गरम है, मधुर है, क्षार है, कषैला है । वातनाशक है, कृमिनाशक है, कफको हरण करता है, दुःखको नाश करता है, स्त्रियोंसे भाषण करनेमें भूषण है, धृतिकारक है, कामाग्निको उद्दीपन करता है, यह स्वर्गमें भी दुर्लभ तेरह गुण तांबूलमें हैं ॥ ९६४ ॥

शुष्कपूगफलगुणाः ।

शुष्कमग्निकरं पूगं कषायं मधुरं परम् ॥ ९६५ ॥

सूखी सुपारी—अग्निकारक है, कषैली है, तथा मधुर है ॥ ९६५ ॥

पक्कपूगफलगुणाः ।

पक्कं तु वातलं रूक्षं भेदनं कफनाशनम् ॥ ९६६ ॥

पक्की सुपारी—वातकारक है, रूखी है, दस्तावर है तथा कफनाशक है ९६६

अपक्कपूगफलगुणाः ।

गुर्वभिष्यंदि मधुरं तोयधृग्वह्निनाशनम् ॥ ९६७ ॥

कच्ची सुपारी—गुरु है, अभिष्यन्दी है, मीठी है, जलको धारण करती (जखम आदिमें घिसकर लगानेसे स्रावको सुखाती) है, और जठराग्निको नष्ट करती है ॥ ९६७ ॥

ताम्बूलपत्रगुणाः ।

ताम्बूलपत्रं तीक्ष्णोष्णं कटुवातकफापहम् ।
पित्तकृत्स्रंसनं वृष्यं वह्निकृद्बस्तिशोधनम् ॥९६८॥

पानका पत्ता—तीक्ष्ण है, उष्ण है, चरपरा है, तथा वात और कफको नष्ट करता है । और पित्तको बढाता है, दस्तावर है, वीर्य्यको बढाता है, अग्निको चैतन्य करता है, और बस्तिको शुद्ध करता है ॥ ९६८ ॥

पर्णमूलादिगुणाः ।

पर्णमूले भवेद्व्याधिः पर्णाग्रे पापसम्भवः ।
मध्यपर्णं हरेदायुः सिरा वह्निविनाशिनी ॥ ९६९ ॥

पानके नीचेके ओरकी डंडीमें अनेक किसमकी व्याधियें रहती हैं, अर्थात् उसके खानेसे व्याधियां होती हैं, और पानका अग्रभाग याने चांचके खानेसे पाप होता है, पानके मध्यकी मोटी डण्डीसी खानेसे आयु क्षीण होती है और पानमें होनेवाली सिरायें खानेसे अग्नि नष्ट होती है ॥ ९६९ ॥

चूर्णगुणाः ।

चूर्णं समीरणश्लेष्ममेदोहरमुदाहृतम् ॥ ९७० ॥

चूना—वायु तथा कफ और मेदके हरनेवाला कहा है ॥ ९७० ॥

शंखचूर्णगुणाः ।

शंखचूर्णं कटुक्षारमुष्णं कृमिहरं परम् ॥ ९७१ ॥

शंखका चूना—चरपरा है, खारा है, उष्ण है, और कृमियोंको हरताहै॥९७१॥

खदिरगुणाः ।

खदिरः कुष्ठवीसर्पमेहपित्तकफापहः ॥ ९७२ ॥

कत्था—कुष्ठ, विसर्प, प्रमेह, और पित्त तथा कफ इन सबको नष्ट करता है९७२

एलागुणाः ।

एला मूत्रविबन्धघ्नी तृट्छर्दिकफवातजित् ॥९७३॥

इलायची—मूत्रके बंधको नष्ट करती है प्यास, छर्दि, कफ, वात, इन सबको जीतती है ॥ ९७३ ॥

लवंगगुणाः ।

आध्मानानाहशूलघ्नं लवंगं पाचनं लघु ॥ ९७४ ॥

लौंग–अफरा, आनाह, शूल इनको नाश करता है और पाचन है तथा हलका है ॥ ९७४ ॥

जातीफलगुणाः ।

जातीफलं तृषाच्छर्दिशूलघ्नं वातपित्तजित् ॥९७५॥

जायफल–प्यास, छर्दि, शूल, वात, पित्त इन सबको नष्ट करता है ॥९७५॥

जातीपत्रीगुणाः ।

जातीपत्री लघुस्तृष्णा तोददौर्गन्ध्यजिन्मता ९७६॥

जावत्री–हलकी है तथा प्यास, तोंद, दुर्गंधि इन सबको नष्ट करती है ॥९७६॥

कर्पूरगुणाः ।

कर्पूरं शीतलं पाके चक्षुष्यं कफनाशनम् ।
पक्वकर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्तरम् ॥ ९७७ ॥

कपूर–पाकमें शीतल है, नेत्रोंको हित है, कफको नष्ट करता है । और पका कपूर कचे कपूरसे, गुणमें, उत्तम है ॥ ९७७ ॥

पूगस्य बालमध्यादिभेदेन गुणमाह ।

आदौ पूगं विषं घोरं द्वितीये भेदि दुर्जरम् ।
तृतीयादिषु पातव्यं सुधातुल्यं रसायनम् ॥ ९७८ ॥

सुपारीका कच्चा फल विषकी समान अहितकारी है । मध्यम अवस्थाका फल भेदक और दुर्जर है, तीसरी अवस्थाका अर्थात् पका फल हितकारी और रसायन है ॥ ९७८ ॥

ताम्बूलभक्षणनिषिद्धता ।

ताम्बूलमहितं प्रोक्तं शरीरे रूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषे पित्तास्रमदमूर्छाक्षिरोगिषु ॥ ९७९ ॥

रूक्ष और दुर्बल शरीरवाले मनुष्यको पान न खाना चाहिये तथा ज्वर, मुखशोष, रक्तपित्त, मद, मूर्च्छा, नेत्ररोग, इन रोगोंवाले मनुष्यको कभी पान न खाना चाहिये ॥ ९७९ ॥

ताम्बूलस्यानुपयोगगुणाः ।

ताम्बूलानुपयोगात्स्यात् श्लेष्मपित्तानिलान्वितः ।
देहहृत्केशदन्ताग्निश्रोत्रवर्णबलक्षयः ॥ ९८० ॥

पानका उपयोग न करनेसे कफ, पित्त, वायु, इनका कोप होता है, तथा शरीर हृदय, केश, दांत, जठराग्नि, कान, बल, इनमें क्षीणता होती है ॥ ९८० ॥

वर्गो धान्यस्य शाकस्य फलस्य मत्स्यमांसयोः ।
द्वौ मद्यमधुनोर्वर्गौ क्षीरेक्षुविकृतिष्वपि ॥ ९८१ ॥
संस्कारकं च हिंग्वाद्यमन्नव्यञ्जनपिष्टकम् ।
संयोगकविरुद्धानि ये च भोजनयोगिकाः ॥९८२॥
तैर्मध्याह्नपरिच्छेदः समाप्तो राजवल्लभे ॥ ९८३ ॥

इस प्रकार इस राजवल्लभनिघण्टुमें धान्यवर्ग, शाकवर्ग, फलवर्ग, मत्स्यवर्ग, मांसवर्ग, मद्यवर्ग मधुवर्ग, क्षीरवर्ग, इक्षुवर्ग और क्षीर तथा इक्षुके विकार और इन सबका संस्कार (बनानेकी विधि) हिंग्वादिवर्ग, अन्नवर्ग, व्यञ्जनप्रकार, पिष्टवर्ग और संयोग विरुद्धवर्ग और भोजनोंके योगोंका वर्ग, इन सबके वर्णनमें यह माध्याह्निकपरिच्छेद समाप्त हुआ ॥ ९८१ ॥ ९८२ ॥ ९८३ ॥

भाषादीपकमें भयो, तृतियमहापरिच्छेद ॥
जे नर पढिहैं प्रेमसे, कबहुँ न पइहैं खेद ॥ ३ ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघण्टौ पटियालाराज्यान्तर्गतटकसालग्रामवास्तव्याऽऽयुर्वेदोद्धारकवैद्यपञ्चानन पण्डितरामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषादीपकनामभाषाटीकायां माध्याह्निको नाम तृतीयः परिच्छेदः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थपरिच्छेदः ४.

अपराह्णपरिच्छेदे प्रकीर्णमभिधीयते ॥ १ ॥

अब हम अपराह्णिक नामक परिच्छेदमें प्रकीर्ण बातोंका (अनेक बातोंका) वर्णन करेंगे ॥ १ ॥

अध्ययनादिगुणाः ।

सतताध्ययनं वादः परतन्त्रावलोकनम् ।
सद्विद्याचार्य्यसेवा च बुद्धिमेधाकरो गणः ॥ २ ॥

शास्त्रको सर्वदा पठना, बुद्धिमानोंसे शास्त्रसंबंधी बातचीत करना, अन्य शास्त्रोंके मतोंको देखना, उत्तम विद्याको हरएकसे ग्रहण करना, गुरुजनोंकी सेवा करना, इन सबके करनेसे बुद्धि और मेधाकी वृद्धी होती है ॥ २ ॥

बुद्धिगुणमाह ।

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।
ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥ ३ ॥

गुरुकी शुश्रूषा करना, उनके उपदेशको प्रेमसे सुनना और ग्रहण करना तथा धारण करना, और तर्कसे शंकाको दूर कर यथोचित ज्ञान प्राप्त करना, पदर्थमात्रके तत्त्वको जानलेना, यह बुद्धिके गुण हैं ॥ ३ ॥

सद्योमांसादिगुणाः ।

सद्योमांसं नवान्नं च बाला स्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकं चैव सद्यः प्राणकराणि षट् ॥ ४ ॥

तत्काल मारे हुए जीवका मांस, नवीन अन्नका खाना सोलह वर्षकी स्त्री, दूधपीना, तथा घृत खाना, गर्म जलसे स्नान करना यह छः पदार्थ शीघ्र प्राणदायक हैं ॥ ४ ॥

पूतिमांसादिगुणाः ।

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥ ५ ॥

दुर्गंधित मांस, बृद्धा स्त्री, कन्याराशीका सूर्य्य, तरुण अवस्थाको प्राप्त हुवा दही अर्थात् चार पांच दिनका खखाहुवा दही, प्रातः कालका मैथुन और प्रातः कालमें सोना यह छः शीघ्र प्राणोंको हरने वाले हैं ॥ ५ ॥

देशभेदमाह ।

देशस्तु जांगलोनूपः साधारण इति त्रिधा ॥ ६ ॥

देश–जांगल, अनूप, साधारण इन भेदोंसे तीन प्रकारका है ॥ ६ ॥

जांगलदेशगुणाः ।

जांगलः स्यान्मरुत्पित्तकदुष्णोरूक्ष एव च ॥ ७ ॥

जांगल देश–वातपित्तको बढाता है गर्म है, तथा रूखा है । जिस देशमें थोड़ा पानी हो (छोटे २ जलाशय) हों । और जांड, करीर आक बेल आदि वृक्ष हों, तथा वह देश ऊंचाहो, आकाशकी समान शुद्ध हो उसको जांगल देश कहते हैं ॥ ७ ॥

आनूपदेशगुणाः ।

आनूपः शीतलः स्निग्धो वातश्लेष्मकरो गुरुः ॥८॥

अनूपदेश–ठंढा होता है, चिकना, है, और वायु तथा कफके रोगोंको करता है, भारी है । जिस देशमें पहाड, और जल अधिक हों उसको अनूप देश कहते हैं ॥ ८ ॥

साधारणदेशगुणाः ।

साधारणः समगुणः सर्वदोषहरः स्मृतः ॥ ९ ॥

साधारणदेश–समान गुण वाला है और सब दोषोंको हरने वाला है । जिस देशमें अनूप और जांगल, इन दोनोंके लक्षण मिलते हों उसको साधारण कहते हैं ॥ ९ ॥

इति देशगुणाः ।

अथ षड्रसगुणमाह ।

तत्र मधुररसगुणाः ।

मधुरः प्रीणनो बल्यो बृंहणोऽनिलपित्तजित् ।
रसायनो गुरुः स्निग्धश्चक्षुष्यस्तर्पणः सरः ॥ १० ॥

मीठा रस—प्राणदायक, बलदायक, पुष्टिकारक, वायु, और पित्तको जीतने वाला, रसायन, भारी चिकना, नेत्रोंको हितकारी, तर्पण और दस्तावर है ॥१०॥

अम्लरसगुणाः ।

अम्लो रुचिकरो हृद्यः प्रीणनो वह्निवर्द्धनः ।
वातहा रसनोद्वेगी स्निग्धोष्णो रक्तमांसदः ॥११॥

खट्टा रस—रुचिकरनेवाला है, हृदयको प्रिय है, प्रीणन है, अग्निको चैतन्य करता है वायुको हरता है, जिह्वामें उद्वेग करनेवाला है, चिकना है, गर्म है, रक्त और मांसको देनेवाला है ॥ ११ ॥

लवणरसगुणाः ।

लवणः क्लेदनस्तीक्ष्णः पाचनो दीपनः सरः ।
स्निग्धो रुचिकरः स्यन्दी दृष्टिशुक्रहरो गुरुः ॥१२॥

लवण रस—क्लेदको करता है, तीक्ष्ण है, पाचन है, दीपन है, दस्तावर है, चिकना है, रुचिकारक है, स्यंदनकर्ता है, दृष्टी और वीर्यको हरनेवाला है तथा भारी है ॥ १२ ॥

कटुरसगुणाः ।

कटुर्जिह्वास्यनासाक्षिरोगकृद्रोचनोग्निदः ।
उष्णस्तीक्ष्णो लघुः कण्डूकृमिशुक्रकफापहः ॥ १३ ॥

चर्परारस—जीभ, मुख, नासिका, नेत्र, इनके रोगोंको करता है । रुचिकारक है, अग्निवर्द्धक है, गर्म है, तीक्ष्ण है, हलका है, और खाज, कृमी, वीर्य, कफ इनको नष्ट करता है ॥ १३ ॥

तिक्तरसगुणाः ।

तिक्तः कफोत्क्लेदविषकुष्ठपित्तज्वरापहः ।
दीपनः पाचनो रूक्षः कण्डूकृमिहरो लघुः ॥ १४ ॥

कडुवा (तिक्त) रस—कफ, उत्क्लेद (जी मचलाना) विष, कुष्ठ, ज्वर, इनको नष्ट करता है । तथा दीपन है, पाचन है, रूखा है, । और खाज तथा कृमियोंको नष्ट करता है तथा हलका है ॥ १४ ॥

कषायरसगुणाः ।

कषायः शोषणः स्तम्भी व्रणपाकार्तिनाशनः ।
कफशोणितपित्तघ्नो रूक्षः शीतो गुरुस्तथा ॥१५॥

कषैलारस—शोषणकर्ता है, स्तंभकर्ता है, जखमके पाक और पीडाको नष्ट करता है । कफ, रक्त, पित्त, इनको नाश करता है, रूखा है, शीतल है, तथा भारी है ॥ १५ ॥

स्वाद्वम्लरसादिना वातादीनां विनाशकत्वमाह ।

स्वाद्वम्ललवणा वातं कषायस्वादुतिक्तकाः ।
पित्तं कषायकटुकतिक्ता घ्नन्ति कफं तथा ॥ १६ ॥

मीठा, खट्टा, नमकीन, यह तीन रस वातको नष्ट करते हैं । कषैला, मीठा, तिक्त (कडुवा) यह तीन रस पित्तको नष्ट करते हैं । कषैला चर्परा, कडुवा यह तीन रस कफको नष्ट करते हैं ॥ १६ ॥

कट्वम्लरसादिना वातादीनां प्रकोपमाह ।

क म्ललवणाः पित्तं स्वाद्वम्ललवणाः कफम् ।
कटुतिक्तकषायाश्च कोपयन्ति समीरणम् ॥ १७ ॥

चर्परा, खट्टा, नमकीन, यह तीन रस पित्तको कुपित करते हैं । मीठा, खट्टा, नमकीन, यह तीन रस कफको कुपित करते हैं, । और चरपरा, कडुवा, कषैला, यह तीन रस वायुको कुपित करते हैं ॥ १७ ॥

रसादीनां विपाकमाह ।

कटुतिक्तकषायाणां विपाकः प्रायशः कटुः ।
अम्लोम्लं पच्यते स्वादु मधुरं लवणं तथा ॥१८॥

चर्परे, कड़ुवे, कषैले, रसवाले द्रव्य प्रायः पचनेमें कटु होतेहैं। खट्टे रसवाले पचनेमें भी खट्टे ही होते हैं। मीठे और नमकीन रसवाले द्रव्य पचनेमें प्रायः मीठे होते हैं॥ १८॥

रसानां भावमाह।

मधुरो लवणाम्लौ च स्निग्धभावास्त्रयो रसाः।
वातमूत्रपुरीषाणां प्रायो मोक्षे सुखा मताः॥ १९॥

मीठा, खट्टा, और नमकीन, यह तीन रस स्निग्धभाव (चिकनाई) युक्त होते हैं यह रस प्रायः वायु और मूत्र तथा मलको सुख पूर्वक निकालने वाले होते हैं॥ १९॥

कटुतिक्तकषायास्तु रूक्षभावास्त्रयो रसाः।
दुःखाविमोक्षे दृश्यन्ते वातविण्मूत्ररेतसाम्॥ २०॥

चर्परा, कड़ुवा, कषैला, यह तीन रस रूखे (खुश्क) होते हैं। यह वायु, मूत्र, मल, तथा वीर्यको कष्टसे निकलने देते हैं,॥ २०॥

मधुरं श्लेष्मलं प्रायो जीर्णाच्छालियवादृते।
मुद्गाद्गोधूमतः क्षौद्रात् सिताया जांगलामिषात् २१॥

जितने मीठे द्रव्य हैं प्रायः सब कफको पैदा करते हैं परन्तु शालीधान, यव, मूंग, गोधूम (गेहूँ), सहद, मिसरी, जांगलदेशके जीवोंका मांस यह सब प्रायः कफको पैदा नहीं करते हैं॥ २१॥

प्रायोऽम्लं पित्तजननं दाडिमामलकादृते॥ २२॥

प्रायः खट्टे रस सबही पित्तको कुपित करनेवाले होते हैं परन्तु अनार और आमलोंके विना अर्थात् आमले और अनारकी खटाई पित्तको कुपित नहीं करती॥ २२॥

अपथ्यं लवणं प्रायश्चक्षुष्यन्यत्र सैन्धवात्॥२३॥

सैन्धव लवणको छोडकर और लवण नेत्रोंको अहितकारी हैं॥ २३॥

तिक्तं कटु च भूयिष्ठावृष्यं वातप्रकोपनम् ।
न पटोलकणाशुण्ठीवेतोग्रलशुनामृतम् ॥ २४ ॥

तिक्त तथा कटु रसवाले द्रव्य—अवृष्य (वीर्यको न बढानेवाले) होते हैं, और वातको कुपित करते हैं परन्तु परवल, पीपल, सुंठी, वेतका अग्रभाग, लहसुन, और गिलोय, इनको छोडकर अर्थात् यह कडुवे चर्परे होने परभी वीर्यवर्द्धक होते हैं और वायुको शमन करते हैं ॥ २४ ॥

कषायः प्रायशः शीतः स्तम्भनश्चाभयांविना॥२५॥

हरडको छोडकर और सब कषायरसवाले द्रव्य शीतल और मलस्तंभकहैं ॥२५॥

द्रव्याणां वीर्य्यकथनम् ।

मृदुतीक्ष्णगुरुस्निग्धलघुरूक्षोष्णशीतलम् ।
वीर्य्यमष्टविधं प्राहुः शीतोष्णं द्विविधं परे ॥ २६ ॥

सब द्रव्योंमें—मीठा, चर्परा, भारी, चिकना, हलका, रूखा, गर्म, ठंढा, इन भेदोंसे वीर्य्य आठ प्रकारका होता है । किसीके मतमें शीतवीर्य और उष्णवीर्य इन भेदोंसे वीर्य्य दोंही प्रकारका है ॥ २६ ॥

रसानां वीर्य्यभेदमाह ।

रसाः कट्वम्ललवणा वीर्य्योष्णाश्च यथोत्तरम् ।
तिक्तकषायमधुराः शीतवीर्य्या यथोत्तरम् ॥ २७ ॥

कटु (चर्परे) रससे (अम्ल खट्टा) रस अधिक उष्णवीर्य हैं, खट्टे रससे लवण रस (नमकीन) अधिक उष्णवीर्य है । ऐसेही तिक्त (कडुवे) रससे कषैला रस अधिक शीतवीर्य्य है और कषैलेसे मीठा अधिक शीतवीर्य्य है ॥२७॥

उष्णशीतवीर्य्ययोर्गुणमाह ।

उष्णः पित्तकरो बल्यो वातश्लेष्महरो लघुः ।
शीतलः पित्तहा बल्यः कफवातकरो गुरुः ॥ २८ ॥

उष्णवीर्य द्रव्य–पित्तको बढाते हैं, बलकारक हैं, वायु और कफको नष्ट करते हैं पचनेमें हलके हैं । और शीतवीर्य द्रव्य पित्तको नष्ट करते हैं, बलको बढाते हैं, कफ और वायुको उत्पन्न करते हैं तथा भारी हैं ॥ २८ ॥

बुद्धिषट्कद्वयं देशः षड्रसानां विरेचनम् ।
अपराह्णे परिच्छेदे निर्मितं राजवल्लभे ॥ २९ ॥

इसप्रकार बुद्धिके गुण, और प्राणदायक तथा हारक दोनों षट्क, देशोंके गुण तथा छह रसोंका विवेचन इन सबका इस राजवल्लभ ग्रन्थके अपराह्णिक नामक चतुर्थ परिच्छेदमें वर्णन किया ॥ २९ ॥

दोहा–भाषादीपक तिलकमें, कियो तुर्य परिच्छेद ॥
बुद्धि आदि अरु देश गुण, रस वीरज गुणभेद ॥ ४ ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघण्टौ पटियालाराज्यांतर्गतटकसालग्रामवास्तव्याऽऽयुर्वेदोद्धारकवैद्यपंचाननपंडितरामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषादीपकनामभाषाटीकायामपराह्णिको नाम चतुर्थः परिच्छेदः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमपरिच्छेदः ।

निशाभवपरिच्छेदो ह्यथ वै वर्ण्यते मया ॥ १ ॥

अब हम निशाभवनामक परिच्छेदका वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

वयोभेदेन नारीणां बालादिकथनम् ।

बालेति गीयते नारी यावत् षोडशवत्सरम् ।
तस्मात्परन्तु तरुणी यावद्द्वात्रिंशतं भवेत् ॥ २ ॥
तत ऊर्ध्वं भवेत् प्रौढा यावत् पञ्चाशतं पुनः ।
वृद्धा ततः परं ज्ञेया सुरतोत्सववर्ज्जिता ॥ ३ ॥

१२ वर्षसे ऊपर १६ सोलह वर्ष तक स्त्रीकी बाला संज्ञा होती है । सोलहसे ऊपर बत्तीस ३२ वर्षतक तरुणी संज्ञा रहती है । ३२ वर्षसे ऊपर ५०

वर्षकी अवस्थातक प्रौढा कही जाती है। पचास वर्षसे ऊपर स्त्रीकी वृद्धा संज्ञा होजाती है, सो वृद्धा स्त्री रतिक्रियामें वर्जित कही है ॥ २ ॥ ३ ॥

बालादिसंसर्गगुणाः ।

बाला तु प्राणदा प्रोक्ता तरुणी प्राणधारिणी ।
प्रौढा करोति वृद्धत्वं वृद्धा मरणमादिशेत् ॥ ४ ॥

बाला स्त्रीसे मैथुन करनेसे प्राणोंकी वृद्धि होती है। तरुणी स्त्रीसे मैथुन करनेसे प्राण स्थिर रहते हैं। प्रौढा स्त्रीसे मैथुन करनेसे शीघ्र बुढापा आजाता है वृद्धा स्त्रीसे मैथुन करनेसे मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

बालादिभेदे मैथुनकालनिर्णयः ।

निदाघशरदोर्बाला प्रौढा वर्षावसन्तयोः ।
हेमंते शिशिरे योग्या न वृद्धा क्वापि शस्यते ॥ ५ ॥

ग्रीष्मऋतु और शरदृतुमें बाला स्त्रीसे मैथुन करना चाहिये। वर्षा तथा वसन्त ऋतुमें प्रौढासे मैथुन करना चाहिये। हेमन्त और शिशिर ऋतुमें तरुणी स्त्रीसे भोग करना उचित है। परन्तु वृद्धा स्त्रीसे कभी भी मैथुन न करना चाहिये ॥ ५ ॥

मैथुननिषिद्धता ।

नर्ते च शोडशाद्वर्षात् सप्तत्याः परतो न च ॥
आयुष्कामो नरः स्त्रीभिः संयोगं कर्तुमर्हति ॥ ६ ॥

सोलह वर्षसे कम आयुवाला और सत्तरसे अधिक आयुवाला मनुष्य अपनी आयुकी रक्षाकी इच्छा करता हुवा कभी मैथुन न करे ॥ ६ ॥

मैथुनकालनिर्णयः ।

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्च सेवेत प्रमदां नरः ।
सर्वेष्वृतुषु ग्रीष्मेषु पक्षान्मासाद्व्रजेद्बुधः ॥ ७ ॥

बुद्धिमान् मनुष्योंको उचित है कि सब ऋतुओंमें तीन तीन दिनके बाद मैथुन करें परन्तु ग्रीष्मऋतुमें पंद्रह दिन अथवा महीनेके बाद मैथुन करना चाहिये॥ ७ ॥

अतिमैथुनगुणाः ।

**ग्लानिकम्पोरुदौर्बल्यं धात्विन्द्रियबलक्षयः ।
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या जायन्तेऽतिव्यवायतः ॥ ८ ॥**

अतिमैथुन करनेसे–ग्लानि, कंप, घुटनोंका गिरेसा जाना, धातुओंका, इन्द्रियोंका तथा बलका क्षय होना । क्षयरोगकी तथा उपदंश आदि रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ८ ॥

सन्तानोत्पत्तिकथनम् ।

**पञ्चपञ्चाशतो नारी सप्तसप्ततितः पुमान् ।
द्वावेतौ न प्रसूयेते प्रसूयेते व्यतिक्रमात् ॥ ९ ॥**

पंचावन ५५ वर्षकी स्त्री और सत्तर ७० वर्षका पुरुष यह दोनों सन्तान पैदा नहीं करसक्ते क्योंकि इनका रज वीर्य संतान उत्पन्न करनेयोग्य नहीं रहता॥९॥

इति स्त्रीनिर्णयः ।

सुखशय्याशनगुणाः ।

**सुखशय्याशनं सेव्यं निद्रापुष्टिधृतिप्रदम् ।
श्रमानिलहरं वृष्यं विपरीतमतोन्यथा ॥ १० ॥**

उत्तम सुखदायक शय्या, तथा उत्तम सुस्वादु भोजन इनका सेवन करना निद्रा, पुष्टि, और धारणाको बढाता है तथा थकावट और वायुको नाश करता है, वीर्यको वढाता है । इससे विपरीत अर्थात् दुःखदाई शय्या और अप्रिय, रूखा भोजन, निद्रा, पुष्टि, आदिकोंको हरता है ॥ १० ॥

भूमिशय्यागुणाः ।

भूशय्याऽनिलपित्तघ्नी बृंहणी शुक्रवर्द्धिनी ॥ ११ ॥

पृथ्वीपर शयन करना वायु और पित्तको नाश करता है । पुष्टिकारक है और वीर्यवर्द्धक है ॥ ११ ॥

खट्वापटशय्ययोर्गुणाः ।

खट्वा तु वातला प्रोक्ता पटो रूक्षोऽतिवातलः ॥१२॥

खाट पर सोना वायुको बढाता है, पटशय्या (कपडेसे बनी शय्या) रुक्षता कारक, और अत्यंत वायुको बढाती है ॥ १२ ॥

अथ पुष्पम् ।

मालतीवृक्षपुष्पपत्राणां गुणाः ।

मालती कफपित्तास्यरुग्व्रणकृमिकुष्ठजित् ।
चक्षुष्यं कुसुमं तस्याः पत्रं तत्कफपित्तजित् ॥१३॥

मालती (चमेलीकी जाती)-कफ, पित्त, मुखके रोग, व्रण (जख्म) कृमी, कुष्ट इन सब रोगोंको नष्ट करती है । इसके फूल नेत्रोंको हित हैं, पत्र कफ और पित्तको नष्ट करते हैं ॥ १३ ॥

मल्लिकापुष्पगुणाः ।

मल्लिका कफजित्तिक्ता ज्वरास्तम्भनरोपिणी ॥१४॥

मल्लिकाके फूल—कफको जीतते हैं, कडुवे हैं, ज्वरको रोकते हैं, और व्रणोंको रोपण करते हैं, इसको मोतिया तथा रायवेल भी कहते हैं ॥ १४ ॥

बन्धूकादिपुष्पगुणाः ।

बन्धूकं श्लेष्मलं ग्राहि तद्वदेव च यूथिका ॥ १५ ॥

बंधूक (दुपहरिया) के फूल—कफको करते हैं, मलको बांधते हैं । इसीकी समान जूहीके ण जानने ॥ १५ ॥

धातकीपुष्पगुणाः ।

धातकीकुसुमं शीतं रक्तपित्तातिसारजित् ॥ १६ ॥

धावेके फूल—शीतल हैं और रक्त, पित्त, अतीसार इनको जीतते हैं ॥ १६ ॥

रांगनपुष्पगुणाः ।

रांगनं रक्तपित्तघ्नं मुचुकुन्दं शिरोर्तिजित् ॥ १७ ॥

रांगणके फूल—रक्तपित्तको नष्ट करते हैं । और मुचुकुदके फूल—शिरकी पीडाको जीतते हैं ॥ १७ ॥

केतकीशिरीषपुष्पयोर्गुणाः ।

केतकं तिक्तकटुकं शिरीषं गरहारि च ॥ १८ ॥

केवडेके फूल--कडुवे हैं और चर्परे हैं, शिरसके फूल--विषको नष्ट करते हैं॥१८॥

रक्तपद्मगुणाः ।

पद्मं कषायमधुरं शीतं पित्तकफास्रजित् ॥ १९ ॥

लालकमल--कषैला है, मीठा है, शीतल है, तथा पित्तको, कफको और रक्त-विकारको जीतता है ॥ १९ ॥

बकुलादिपुष्पगुणाः ।

तद्वद्बकुलपुन्नागकह्लारोत्पलपाटलम् ॥ २० ॥

मौलसिरी, पुन्नाग, कह्लार, नीलकमल, पाटल, इन सबके फूलोंके लालकम-लके समान गुण जानने ॥ २० ॥

चम्पकपुष्पगुणाः ।

चम्पकं तिक्तकटुकं शीतं पित्तकफापहम् ॥ २१ ॥

चंपा (चम्बा) के फूल--कडुवे हैं, चरपरे हैं, शीतल हैं, पित्त तथा कफको नष्ट करते हैं ॥ २१ ॥

॥ इति पुष्पवर्गः ॥

ज्योत्स्नागुणाः ।

ज्योत्स्ना कषायमधुरा दाहासृक्पित्तनाशिनी॥२२॥

चन्द्रमाकी चांदनी--कषैली, मीठी, तथा दाह और रक्तपित्तको नष्ट करती है ॥ २२ ॥

अन्धकारगुणाः ।

तमो भयावहं तिक्तं दृष्टितेजोऽवरोधनम् ॥ २३ ॥

अंधकार (अंधेरा)--भयकारक होता है, कडुवा है तथा नेत्रोंकी ज्योतीको रोक देता है ॥ २३ ॥

मैथुनगुणाः ।

व्यवायो धात्वपचयं कुरुते रत्यपत्यदः ॥ २४ ॥

मैथुन करना–धातुओंको नष्ट करता है तथा रतिके आनंद और संतानका देनेवाला है ॥ २४ ॥

अतिमैथुनगुणाः ।

अतिव्यवायाज्जायन्ते श्वासकासज्वरादयः ॥ २५ ॥

अत्यंत मैथुन करना–श्वास, खांसी और ज्वर आदिकोंको उत्पन्न करताहै॥२५॥

मैथुनाकरणगुणाः ।

असेवनान्मेहमेदोग्रन्थिरग्नेश्च मार्दवम् ॥ ६२ ॥

गृहस्थ युवा पुरुष यदि उचित मैथुन न करे तो प्रमेह, मेद, ग्रंथी, अग्निकी मंदता यह रोग उत्पन्न होते हैं ॥ २६ ॥

परिमितमैथुनगुणाः ।

स्मृतिमेधायुरारोग्यपुष्टीन्द्रिययशोबलैः ।
अधिकानन्दजरसो भवन्ति स्त्रीषु संयुताः ॥ २७ ॥

उचित रीतिसे परिमित मैथुन करनेसे स्मरणशक्ती, धारण, आयु, आरोग्यता, पुष्टी, इन्द्रियोंका बल, यश तथा शरीरका बल, बढता है और बुढापा भी शीघ्र नहीं आता ॥ २७ ॥

निद्रागुणाः ।

निद्रा तु सेविता काले धातुसाम्यमतन्द्रिताम् ।
पुष्टिवर्णबलोत्साहानग्निदीप्तिं करोति च ॥ २८ ॥

उचित समयमें निद्रा लेना–धातुओंको साम्य अवस्थामें करता है, तंद्राका नाश करता है पुष्टी, वर्ण, बल, और उत्साहको देता है । तथा जठराग्निको दीपन करता है ॥ २८ ॥

रात्रिजागरण-दिवास्वप्नयोर्गुणाः ।

रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा ।
कफमेदोविषार्त्तानां रात्रौ जागरणं हितम् ॥ २९ ॥
दिवा स्वप्नं च तृट्शूलहिक्काजीर्णातिसारिणाम् ३०

रात्रीमें जागना—रूखेपनको करता है । दिनमें सोना स्निग्धता बढाता है । इसलिये रात्रीमें जागना दिनमें सोना हित नहीं है । परन्तु कफ, मेद, और विषसे पीडित मनुष्योंको रात्रीमें जागना हित है । ऐसेही प्यास, शूल, हिका, अजीर्ण तथा अतिसारसे पीडित मनुष्योंको दिनमें सोना हित है ॥ २९॥ ३० ॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ निद्रा सात्मीकृता तु यैः ।
न तेषां स्वप्नतां दोषो जाग्रतां वा विधीयते ॥ ३१ ॥

जिनको दिनमें सोनेका और रात्रीमें जागनेका अभ्यास है उन मनुष्योंको दिनमें सोनेका तथा रात्रीमें जागनेका दोष नहीं है ॥ ३१ ॥

स्त्रीणां विनिर्णयः शय्या पुष्पं ज्योत्स्ना तमो रतम् ॥
निशाभवः परिच्छेदः समाप्तो राजवल्लभे ॥ ३२ ॥

इसप्रकार इस राजवल्लभ ग्रंथमें—स्त्रियोंका निर्णय, शय्या, पुष्प, चांदनी, अंधकार, रति (स्त्रीगमन) आदिसे युक्त यह निशाभव परिच्छेद समाप्त हुआ॥ ३२॥

दोहा—रजनी भव परिच्छेद यह, नृपवल्लभ आधार ।
भाषादीपक सों कियो, पूरण भले प्रकार ॥ ५ ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघण्टौ पटियालाराज्यान्तर्गतटकसालग्रामवास्तव्याऽऽयुर्वेदोद्धारकवैद्यपञ्चानन पं० रामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषादीपक नामभाषाटीकायां निशाभवो नाम पञ्चमः परिच्छेदः ॥ ५ ॥

षष्ठः परिच्छेदः ।

अथ नानौषधिवर्गः ।

नानौषधिपरिज्ञानमथषष्ठेऽभिधीयते ॥ १ ॥

अब हम अनेक औषधियोंके ज्ञानको इस छठे परिच्छेदमें वर्णन करते हैं॥१॥

बिल्वमूलगुणाः।

बिल्वमूलं मरुच्छ्लेष्मच्छर्दिघ्नं रक्तपित्तजित् ॥ २ ॥

बिल्वमूल (बेल, बिल, की जड)–वायुको तथा कफको और छर्दिको जीतती है तथा रक्तपित्तको नष्ट करती है । बेलका वृक्ष सब जगह प्रसिद्ध है इसके पत्रोंको बिल्वपत्र कहते हैं । फल खानेमें और दवाइयोंमें काम आते हैं॥२॥

पाटलाश्योनाकयोर्गुणाः ।

पाटला कफवातघ्नी श्येनाको ग्राहिदीपनः ॥ ३ ॥

पाटला–कफ और वातको नष्ट करती है । सोनापाठा–ग्राही, तथा दीपन है पाटलाको पाढल भी कहते हैं इसमें फूल लाल आते हैं पत्र बिल्वकी समान होते हैं । और सोनापाठाके मध्यम दर्जेके वृक्ष होते हैं उनमें तलवारके समान बडी लंबी फली लगती है इस वृक्षको टैंटू, स्योनाक, सोनापाठा, टाटमडंवा भी कहते हैं ॥ ३ ॥

गाम्भारीमूलगुणाः ।

गाम्भारीमूलमत्युष्णमहितं मानुषेषु तत् ॥ ४ ॥

खंभारीकी जड–अत्यन्त गर्म और मनुष्योंके लिये अहित है । इसके पीपलके समान वृक्ष होते हैं इसको कुम्हार वृक्ष भी कहते हैं टकसाल पहाडके नजदीक कौशिल्या नदीके किनारेके जंगलोंमें अधिक होते हैं ॥ ४ ॥

गणिकारीगुणाः ।

गणिकारी तु शोथघ्नी हिता वातविकारिणाम् ॥५॥

गणिकारी (अरणी, अग्निमन्थ)–सूजनको नष्ट करती है और वायुके विकारवालोंको हित करनेवाली है ॥ ५ ॥

एरण्डमूलगुणाः ।

एरण्डमूलं शूलघ्नं वृष्यं वातकफापहम् ॥ ६ ॥

एरंडकी जड-शूलको नष्ट करती है वीर्य्यवर्द्धक है वायु और कफको नष्ट करनेवाली है । एरंड, अरंड इरंड इन नामोंसे सब जगह प्रसिद्ध है इसके बीजोंका तेल कष्ट्रायल या एरंड तेल (अंडीका तेल) कहा जाता है प्रायः यह विरेचनके लिये दिया जाता है ॥ ६ ॥

गोक्षुरगुणाः ।

गोक्षुरो मूत्रकृच्छ्रघ्नो बल्यो वृष्योनिलापहः ॥७॥

गोखुरू-मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करते हैं बल तथा वीर्य्यको बढाते हैं और वायुको नष्ट करते हैं । गोखरू, भौंखडे, हस्तचिंघाड, इन नामोंसे सब जगह मिल सक्ते हैं ॥ ७ ॥

कण्टकारीगुणाः ।

उष्णवातकफश्वासकासघ्नी कण्टकारिका ॥ ८ ॥

कंटकारी-गरम है कफ, श्वास, खांसी, इनको दूर करती है । इसको कटेरी कटहली, छकमहोली भी कहते हैं प्रायः सब जगह होती है ॥ ८ ॥

बृहतीगुणाः ।

बृहती पाचनी सोष्णा ग्राहिणी वातनाशिनी ॥९॥

बडीकटेली-पाचक है, उष्ण है, ग्राही है, तथा वायुको नष्ट करती है, इसको बृहती, बडी छकमहोली भी कहते हैं । कटहलीके पेड जमीनपर बिछेहुए होते हैं बडी कटहलीके बैंगनकी समान खडे पेड होते हैं और इसके पत्र भी बैंगनके पत्रोंकी समान ही होते हैं फल गोल और पकनेपर पीले होजाते हैं ॥ ९ ॥

शालिपर्णीपृश्निपर्ण्योर्गुणाः ।

शालिपर्णी पृश्निपर्णी ग्राहिणी कफपित्तजित् ॥ १० ॥

शालिपर्णी-और पृष्टपर्णी-दोनों-ग्राही (मलको रोकनेवाली) और कफ तथा पित्तको नष्ट करती हैं । यह दोनों सरिवन पिथवन नामोंसे प्रसिद्ध हैं । इनके

छोटे २ पेड शिमलेके पहाडोंमें प्रायः अधिक होते हैं इनके ऊपर मञ्जरीसी भी निकलती है ॥ १० ॥

बलागुणाः ।

स्निग्धा रुच्या बला वृष्या ग्राहिणी वातपित्तजित् ११

बला–चिकनी है, रुचिकारक है, वीर्य्यवर्द्धक है, मलको बांधती है तथा वात और पित्तको जीतती है। इसके छोटे २ क्षुप खेतोंकी डौल (किनारे) में और बागोंमें बहुत होते हैं पत्ते गोल होते हैं बीज काले रंगके होते हैं इनको खरैटीके बीज या बीजबन्द भी कहते हैं ॥ ११ ॥

नागबलागुणाः ।

तद्वन्नागबलात्यर्थं कृच्छ्रे क्षीणे क्षते हिता ॥ १२ ॥

नागबला–मेंभी खरैटीके समानही गुण हैं तथा मूत्रकृच्छ्र, क्षत, क्षीण इन रोगोंमें हितको करनेवाली है इसके पेड बलासे बडे होते हैं । पत्रभी नोकदार और बडे होते हैं फल चक्राकार होते हैं फूल पीले होते हैं इसको गंगेरन गंगेरुकी गुलसकी कंघी भी कहते हैं । बलाचतुष्टयमें अतिबला और महाबला यह दो और भीजाती हैं चारों बला प्रायः एकसे गुणवाली होती हैं ॥ १२ ॥

अश्वगन्धागुणाः ।

अश्वगन्धा तु वातघ्नी बल्या वृष्या रसायनी॥१३॥

अश्वगन्धा–वातको नष्ट करती है बल तथा वीर्य्यको बढाती है और रसायन है। इसके पेड हमने प्रायः सबही देशोंमें देखें हैं इसमें डोडियोंके अंदर गोल छोटे २ मोतीके समान फल होते हैं वह कच्ची अवस्थामें हरे पकनेपर लाल लालरीके समान होजाते हैं इसके पत्रोंको सूजन और व्रणके ऊपर भी गरम करके लगाते हैं (आसगन्ध, असगन्ध) इन नामोंसे सब जगह मिलसक्ताहै ॥१३॥

शतावरीगुणाः ।

शतावरी वातपित्तमेहरक्तहरा सरा ॥ १४ ॥

शतावर–वात, पित्त, प्रमेह, रक्तविकार इनका हरनेवाला है, तथा सारक है, इसके पेड प्रायः ठंडे पहाडोंमें अधिक होते हैं । यह शतावर शतावरी इन नामोंसे सब जगह मिलसक्ती है ॥ १४ ॥

हस्तिकर्णगुणाः ।

हस्तिकर्णः परं वृष्यो मेधायुर्बलवर्द्धनः ॥ १५ ॥

हस्तिकरण—वीर्य्यको बढाता है, मेधाजनक है, आयु और बलकी वृद्धि करनेवाला है । हस्तीकरणके पेड जङ्गलोंमें अधिक होते हैं प्रायः हाथीके कानके समान बडे २ पत्र होते हैं कोमल अवस्थामें किञ्चित् लालिमा लिये होते हैं पकनेपर हरे होजाते हैं किसीने इसको पलाशका भेद कहा है परन्तु देखनेमें इसमें और पलाशमें अधिक भेद प्रतीत होता है ॥ १५ ॥

प्रसारणीगुणाः ।

वातपित्तहरा सोष्णा बल्या वृष्या प्रसारणी ॥१६॥

प्रसारणी—वायु और पित्तको हरती है और उष्ण है, बलकारक है, तथा वीर्य्यको बढाती है इसको राजबला, भद्रपर्णी, सारणी, गन्धाढया, सुप्रसरा, प्रतानिका, चारुपर्णी भी कहते हैं ॥ १६ ॥

माषपर्णीमुद्गपर्णिकयोर्गुणाः ।

माषपर्णी महावृष्या चक्षुष्या मुद्गपर्णिका ॥ १७ ॥

माषपर्णी अत्यन्त वीर्य्यको बढानेवाली है । मुद्गपर्णी—नेत्रोंकी ज्योतिको बढाती है इनके प्रसर बिलकुल माष और मूंगके समानही होते हैं वनमाषको माषपर्णी तथा वनमूंगको मुद्गपर्णी कहते हैं ॥ १७ ॥

इन्द्रायणगुणाः ।

विशाला कफवातघ्नी चक्षुष्या मूत्रकृच्छ्रजित्॥१८॥

विशाला—कफ और वायुको नष्ट करती है नेत्रोंको हितकारक है और मूत्रकृच्छ्रको जीतती है इसको इन्द्रायण, इन्द्रवारुणी, गवाक्षी भी कहते हैं इसकी वेल होती है फल गोल खरबूजेके समान लगते हैं उनको कडुवा तूम्बा तथा इन्द्रायण फल भी कहते हैं इन्द्रायणकी जड और फलका गूदा विरेचनके लिये भी दिया जाता है ॥ १८ ॥

शारिवागुणाः ।

शारिवा वातपित्तासृक्तृट्छर्दिज्वरनाशिनी ॥ १९ ॥

शारिवा–वात, पित्त तथा रुधिर विकार, छर्दि और ज्वर इनको नष्ट करता है (और मेधाजनक है) इसकी बेल होती है पत्र जामुनके पत्रोंके समान होते हैं तोडनेसे दूध निकलता है। दो जुडे हुवे छोटे छोटे सींगोंकी समान फल निकलते हैं सूखनेपर उनमेंसे सेमलकी रुईके समान रुईसी उड जाती है इसकी कृष्णसारिवा और श्वेतसारिवा इन भेदोंसे दो जातियें हैं शिमलेके पहाडमें इसको दुधलीकी बेल कहते हैं इसके पत्रोंकी नसवार (नास) बच्चोंको देते हैं ॥ १९ ॥

अनन्तागुणाः ।

अनन्ता ग्राहिणी रक्तपित्तप्रशमनी हिमा ॥ २० ॥

अनन्ता–मलरोधक है, रक्तपित्तको शमन करती है तथा शीतल है, काले सारिवाको अनंता कहते हैं । और इसको गौरीसर तथा कालीसर भी कहते हैं । अनंतमूल एक घास होती है यह वह नहीं । उसके गुणभी अलग हैं ॥ २० ॥

गुन्द्रागोंदनीगुणाः ।

गुन्द्रा पित्तास्रदाहघ्नी चक्षुष्या मूत्रकृच्छ्रजित् ॥ २१ ॥

गुंद्रा–रक्तपित्तको नष्ट करती है तथा दाहको हरती है, नेत्रोंको हित है तथा मूत्रकृच्छ्रको जीतती है । इसको गोंदनी, इंगुदी, श्यामा भी कहते हैं इसके फलोंको प्रियंगु कहते हैं फूलप्रियंगु इसके फूलोंको कहते हैं ॥ २१ ॥

लोध्रगुणाः ।

लोध्रोऽसृक्कफपित्तघ्नश्चक्षुष्यः शोथजित्सरः ॥ २२ ॥

लोध–रक्तविकारको, कफको तथा पित्तको नष्ट करता है, नेत्रोंको हित है, शोथको जीतता है और दस्तावर है ॥ २२ ॥

शबरलोध्रगुणाः ।

तद्वच्छबरलोध्रोपि चक्षुष्यो मृदुरेचनः ॥ २३ ॥

पठानी लोध–केभी लोधकेही समान गुण हैं तथा नेत्रोंको हितकारी है, और मृदु रेचक है । लोधके सामान्य दर्जेके वृक्ष होते हैं इसके छिलके लोध या पठानी लोध कहनेसे सब जगह मिलसक्ते हैं ॥ २३ ॥

मञ्जिष्ठागुणाः ।

मञ्जिष्ठा कुष्ठवैस्वर्य्यशोथघ्नी मूत्रकृच्छ्रजित्॥२४॥

मंजीठ–कुष्ठ, स्वरभङ्ग, शोथ इनको नष्ट करती है तथा मूत्रकृच्छ्रको जीतती है इसकी बेल होती है जडोंको औषधोंके उपयोगमें लाते हैं ॥ २४ ॥

लाक्षागुणाः ।

लाक्षा भग्नविसर्पघ्नी बल्या त्वग्दोषनाशिनी॥२५॥

लाख–भग्नको संधान करती है, विसर्परोगको नाश करती है, बलकारक है, त्वचाके दोषोंको नाश करती है, पीपल, बट, पाकर तथा बेर आदि वृक्षोंमें लाख उत्पन्न होती है ॥ २५ ॥

प्रपौण्डरीकगुणाः ।

प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं शिशिरं व्रणरोपणम् ॥ २६ ॥

प्रपौण्डरीक–नेत्रोंको हितकारी है, शीतल है, व्रणों (घावों) को रोपण करनेवाला है इसका वृक्ष होता है उसके ऊपर लाल रंगके फूल आते हैं इसके छिलकेके रसको नेत्रोंमेंभी डालते हैं ॥ २६ ॥

जीवन्तीगुणाः ।

जीवन्ती श्वासकासघ्नी स्वर्य्या च क्षयनाशिनी२७॥

जीवन्ती–श्वास तथा खांसीको नाश करती है, स्वरकारक है तथा क्षयको नाश करती है, इसकी लता होती है, इसको शाकश्रेष्ठा भी कहते है ॥ २७ ॥

अष्टवर्गगुणाः ।

अष्टवर्गोस्रपित्तघ्नो व्रणहा वातपित्तनुत् ॥ २८ ॥

अष्टवर्ग–रक्तपित्तनाशक है, व्रणोंको दूर करता है वात तथा पित्तको नाश करनेवाला है । जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीर-काकोली इन आठोंको अष्टवर्ग कहते हैं, अष्टवर्ग आजकल प्रायः दुर्लभ है । यद्यपि इनमेंसे कोई किसी २ पहाडपर मिलभी जाती है । परन्तु निश्चयात्मक रूपसे समझलेना कठिन है क्योंकि पहाडोंपर अनेक कन्द ऐसे हैं जिनमेंसे कोई तीक्ष्ण विषसेभी बढा हुवा है कोई अमृतके समान है इसलिये विना यथोचित

रूपसे जाने किसी कन्दका कुछ नाम रखदेना उचित नहीं । जाननेके लिये यत्न करना वैद्योंका कर्त्तव्य है । जीवक और ऋषभकके अभावमें विदारीकन्द लेना चाहिये । मेदा, महामेदाके अभावमें शतावर लेना चाहिये । ऋद्धि, वृद्धि के अभावमें वाराहीकन्द लेना चाहिये । काकोली, क्षीरकाकोलीके अभावमें असगंध लेना चाहिये ॥ २८ ॥

मधुकगुणाः ।

मधुकं रक्तपित्तघ्नं व्रणशोधनरोपणम् ।
गुरु स्वादु हिमं वृष्यं स्वरवर्णप्रसादनम् ॥ २९ ॥

मधुक (मुलेठी)–रक्तपित्तको नाश करती है, व्रणोंको शोधन तथा रोपण करती है, भारी है, स्वादिष्ठ है, शीतल है, वीर्य्यको बढानेवाली है, स्वर तथा वर्णको उत्तम करती है ॥ २९ ॥

अर्जुनवृक्षगुणाः ।

पार्थः पथ्यः क्षते भग्ने रक्तस्तम्भनकृच्छ्रयोः ॥३०॥

अर्जुन–भग्न, क्षत तथा रक्तके स्तम्भमें और मूत्रकृच्छ्रमें परम हित है । इसको कोहका वृक्ष भी कहते हैं ॥ ३० ॥

अस्थिसंहारगुणाः ।

अस्थिभग्नेऽस्थिसंहारो हितो बल्योनिलापहः ॥३१॥

हडसंहारी–हड्डीके टूटनेमें परम हितकारी है और बलदायक है तथा वायुको नष्ट करती है ॥ ३१ ॥

भृङ्गराजगुणाः ।

भृङ्गराजस्तु चक्षुष्यः केश्यः पाण्डुकफापहः ॥३२॥

भांगरा–नेत्रोंको हित है, केशोंको उत्तम बनाता है, पांडुरोग तथा कफको नष्ट करता है, भृङ्गराज, भांगरा, घमिरा इन नामोंसे प्रसिद्ध है तरावट जमीनमें सब ऋतुओंमें होता है बरसातमें प्रायः खेतोंमें भी होजाता है ॥ ३२ ॥

केशराजगुणाः ।

तद्गुणः केशराजोपि वह्निकृच्च रसायनः ॥ ३३ ॥

केशराज-भांगरेके समान गुण करता है और अग्निको चैतन्य करता है तथा रसायन है इसको कुकुरभांगरा भी कहते हैं ॥ ३३ ॥

दण्डोत्पलगुणाः ।

दण्डोत्पलद्वयं श्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ॥ ३४ ॥

दोनोंप्रकारके दंडोत्पल-श्वास तथा खांसीको जीतनेवाले हैं तथा अग्निको दीपन करते हैं । दंडोत्पलके क्षुप होते हैं, पत्र कुछ २ बनतुलसीकेसे होते हैं फूल पीले या लाल अथवा सफेद होते हैं इसको गोवन्दनी देवसहा सहदेवी भी कहते हैं इसके पत्र घोटकर पिलानेसे चातुर्थिक ज्वर नष्ट होजाता है ॥ ३४ ॥

रुदन्तीगुणाः ।

रुदन्ती वह्निकृद्वृष्या पित्तघ्नी च रसायनी ॥३५॥

रुदन्ती-अग्निको बढाती है वीर्य्यको उत्पन्न करती है, पित्तको नष्ट करती है, तथा रसायन है । इसको रुद्रवन्ती भी कहते हैं इसके छोटे दरजेके क्षुप होते हैं प्रायः पत्र चनेके पत्रोंके समान होते हैं पौधे प्रायः पृथ्वीपर फैलेहुएसे होते हैं इससे सोनेकी भस्म भी हो सक्ती है ॥ ३५ ॥

तालमूलीगुणाः ।

तालमूली हिता वाते ग्रहणी च रसायनी ॥ ३६ ॥

तालमूली-वातविकारमें हित है मलको बांधती है तथा रसायन है तालमूली मुशलीका नाम है ॥ ३६ ॥

द्रोणपुष्पीगुणाः ।

द्रोणपुष्पी कफार्शोघ्नी कामलाकृमिशोथजित् ३७॥

द्रोणपुष्पी-कफ, तथा बवासीरको नष्ट करती है और कामला, कृमि, सूजन, इनको जीतती है, इसको गूमा तथा दडघल भी कहते हैं ॥ ३७ ॥

गिरिकर्णिकागुणाः ।

शोथघ्नी कासहा कंठ्या विषघ्नी गिरिकर्णिका ३८॥

गिरिकर्णिका–शोथको खांसीको तथा विषको नष्ट करती है और कण्ठको उत्तम बनाती है इसको कोयल भी कहते हैं ॥ ३८ ॥

वृश्चिकालीगुणाः ।

वृश्चिकाली विषघ्नी तु कासमारुतनाशिनी ॥३९॥

वृश्चिकाली–विषविकारको नष्ट करती है तथा खांसी और वायुका नाश करती है ॥ ३९ ॥

अहिंस्रासुदर्शनयोर्गुणाः ।

अहिंस्रा विषशोथघ्नी तद्गुणेव सुदर्शना ॥ ४० ॥

अहिंस्रा–विष और शोथको नष्ट करती है इसको हींस भी कहते हैं इसके कांटेदार झाड होते हैं । और यही गुण सुदर्शनाके हैं इसको सुदर्शन भी कहते हैं ॥ ४० ॥

भांर्गीगुणाः ।

भांर्गी तु श्वासकासघ्नी गुञ्जा कुष्ठव्रणापहा ॥४१॥

भार्ङ्गी–श्वास तथा खांसीको दूर करती है इसको भाडंगी भारंगी भी कहते हैं । गुंजा–कुष्ठको तथा व्रणोंको नष्ट करती है इसको चोंटली घुंघची रत्ती भी कहते हैं ॥ ४१ ॥

सूर्य्यावर्त्तसैरिपयोर्गुणाः ।

सूर्य्यावर्त्तो विबन्धघ्नः सैरिपः कफवातजित् ॥४२॥

सूर्य्यावर्त्त–विबन्धको नष्ट करता है इसको हुलहुल भी कहते हैं । सैरिप कफ वातको नाश करता है इसको कटसरैया भी कहते हैं ॥ ४२ ॥

कोकिलाक्षहलिनकयोर्गुणाः ।

आमवातानिलापघ्नौ कोकिलाक्षहलीनकौ ॥ ४३ ॥

तालमखाना–आमवात और वायुको नष्ट करता है (तथा वीर्य्यवर्द्धक है) । हलीनक (शाकवृक्ष) में भी यही गुण है ॥ ४३ ॥

हलिनीकरवीरयोर्गुणाः ।

हलिनी करवीरश्च कुष्ठदुष्टव्रणापहौ ॥ ४४ ॥

हलिनी (कलिहारी, लांगली) कुष्ठ और दुष्ट व्रणोंको नष्ट करती हैं। कनेरके भी यही गुण हैं परन्तु यह दोनों विष हैं इस लिये विना जाने उपयोग करना उचित नहीं ॥ ४४ ॥

कोषातकीगुणाः ।

कोषातकी कफार्शोघ्नी पक्वामाशयशोधिनी॥४५॥

कोशातकी-कफ तथा अर्श (बवासीर) को नाश करती है पक्वाशय तथा आमाशयको शुद्ध करती है। इसको तोरी तोरई काली तोरी भी कहते हैं ॥४५॥

ज्योतिष्मतीगुणाः ।

मेध्याज्योतिष्मती तीक्ष्णा व्रणविस्फोटनाशिनी४६

ज्योतिष्मती (मालकांगनी) मेधाजनक है तीक्ष्ण है व्रण तथा विस्फोटकको नाश करती है ॥ ४६ ॥

ब्राह्मीगुणाः ।

वयसः स्थापनी ब्राह्मी मेधायुर्बलवर्द्धिनी ॥ ४७ ॥

ब्राह्मी-अवस्था स्थापन करती है मेधा आयु तथा बलको बढाती है ब्राह्मी सजल स्थानमें नहरोंके किनारे तथा शिमलेके पहाडमें अधिक होती है इसको मण्डूकपर्णी ब्राह्मी भी कहते हैं ॥ ४७ ॥

वचागुणाः ।

वचायुष्या कफवाततृष्णाघ्नी स्मृतिवर्द्धिनी ॥४८॥

वच-आयुवर्द्धक है कफ, वात तथा प्यासको नाश करती है तथा स्मृति (स्मरणशक्ति) को बढाती है वचकी गांठ बालकोंके गलेमें बांधनेसे बालरोग मातृकादि बालग्रह दोष नहीं सताते ॥ ४८ ॥

विजयागुणाः ।

शक्राशनं तु तीक्ष्णोष्णं मोहकृत् कुष्ठनाशनम् ।
बलमेधाग्निकृच्छ्लेष्मदोषहारि रसायनम् ॥ ४९ ॥

भङ्काशन (भङ्ग)–तीक्ष्ण तथा उष्ण है मोह (बेहोश) कारक है कुष्ठको नाश करती है । बल मेधा तथा अग्निको करनेवाली है कफविकारोंको हरण करती है तथा रसायन है । भांग बिजया भङ्गा इन नामोंसे प्रायः सब जगह मिलती है ॥ ४९ ॥

शंखपुष्पीगुणाः ।

शंखपुष्पी तु तीक्ष्णोष्णा मेध्या कृमिविषापहा ५० ॥

शंखपुष्पी–तीक्ष्ण है, गरम है, मेधाजनक है कृमिरोग तथा विषको नष्ट करती है इसके पेड सरदीके मोसिममें अधिक होते हैं जमीनके ऊपर बिछे हुए होते हैं इसको शंखपुष्पी शंखावली शंखाहूली भी कहते हैं ॥ ५० ॥

शिरीषवृक्षगुणाः ।

शिरीषो विषवीसर्पस्वेदत्वग्दोषशोथजित् ॥ ५१ ॥

शिरीष–विष, विशर्प, पसीना तथा त्वचाके विकार, और शोथ इन सबको जीतता है इसके वृक्ष सडकोंके किनारे अधिक होते हैं सिरस नामसे प्रसिद्ध है इसके वीज नेत्रोंको बहुत हितकारी हैं ॥ ५१ ॥

दूर्वागुणाः ।

दूर्व्वा तु रक्तपित्तघ्नी कण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥५२॥

दूर्वा–रक्तपित्त और खाज तथा त्वचाके दोषोंको दूर करती है दूब दूबडा नामसे प्रसिद्ध है ॥ ५२ ॥

हरिद्रागुणाः ।

हरिद्रा कफपित्तघ्नी कण्डूत्वग्दोषनाशिनी ।
पाण्डुशोथापची चैव मेहकुष्ठव्रणापहा ॥ ५३ ॥

हल्दी–कफ तथा पित्तको नष्ट करती है खाज और त्वचाके दोष, पांडुरोग, शोथ, अपची, प्रमेह, कोढ व्रण, इन सबको नष्ट करती है हरिद्रा हलदी सब जगह प्रसिद्ध है ॥ ५३ ॥

दारुहरिद्रागुणाः ।

तद्वद्दार्व्वी विशेषेण कफाभिष्यन्दनाशिनी ॥ ५४ ॥

दारुहलदी—हलदीके समान गुणों वाली है कफ तथा क्लेदताको नष्ट करती है इसके पेड शिमलेके पहाडमें अधिक होते हैं इसमें एक २ जगह तीन २ कांटे मिलेहुये होते हैं, फल छोटे छोटे पकनेपर काले रङ्गके होते हैं पहाडी लोग इसको कसमल कहते हैं इसीकी जडके काथको अफीमके समान पकानेसे रसांजन, रसोत, होजाती है ॥ ५४ ॥

अवल्गुजगुणाः ।

अवल्गुजो वातकफपित्तत्वग्दोषनाशनः ॥ ५५ ॥

बापची—वात, कफ, पित्त तथा त्वचाके दोषोंको नाश करती है इसके क्षुप होते हैं पत्र कुछ कुछ मेंहदीकेसे होते हैं फूल काले होते हैं फल गुच्छोंमें होते हैं उनमेंसे काले बीज निकलते हैं इसमेंसे गंध आती है वाकुची बावची इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ५५ ॥

एडगजगुणाः ।

तद्वदेडगजो गुल्मोदरार्शःकुष्ठजित्कटुः ॥ ५६ ॥

एडगज—गुल्मको उदररोगको बबासीरको कुष्ठको जीतती है । तथा चरपरी है । इसके पत्रोंकी भाजी भी बनती है । चक्रमर्द, पमार, पनवाड, चकवड, दद्रुघ्न इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ५६ ॥

करञ्जनिम्बफलयोर्गुणाः ।

करञ्जनिम्बजफलं क्रुमिकुष्ठप्रमेहजित् ॥ ५७ ॥

करंजके फल—क्रुमि, कुष्ठ, प्रमेह, इनको दूर करते हैं । नीमके बीजोंमें भी यही गुण हैं ॥ ५७ ॥

विडंगगुणाः ।

विडंगमीषत्तिक्तं तु क्रुमिघ्नं विषनाशनम् ॥ ५८ ॥

वायविडंग—किञ्चित् कडुवा है, और क्रुमियोंको तथा विषको नाश करता है विडंग वायविडंग इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ५८ ॥

रेणुकागुणाः ।

रेणुका कफवातघ्नी दीपनी पित्तकृल्लघुः ॥ ५९ ॥

रेणुका–कफ तथा वायुको नष्ट करती है दीपन है पित्तजनक है और हलकी है । लोग निर्गुण्डी (संभाळू) के बीजोंको रेणुका कहते हैं । कोई वैद्य रेणुका के नामसे मेंहर्दीके बीज डालते हैं हमारी रायमें संभाळूके बीजोंका और रेणुकाका गुण प्रायः आपसमें ठीक मिलता है ॥ ५९ ॥

भूर्ज्जशिंशपयोर्गुणाः ।

भूर्जो बल्यः कफास्रघ्नः शिंशपा वातनाशिनी॥६०॥

भोजपत्र–बलबर्द्धक है कफ तथा रक्तविकारको नष्ट करता है । शीशमवृक्ष–वातको नष्ट करता है ॥ ६० ॥

आस्फोतागुणाः ।

आस्फोता विषकुष्ठघ्नी तिनिशो दाहपित्तनुत्॥६१॥

आस्फोता–विष और कुष्ठको नष्ट करता है । और तिनिश (तिरिच्छ) दाह और पित्तको नष्ट करता है ॥ ६१ ॥

धातकीगुणाः ।

धातकीकुसुमं शीतं रक्तपित्तातिसारनुत् ॥ ६२ ॥

धावेके फूल–शीतल हैं रक्तपित्त और अतीसारको नष्ट करते हैं ॥ ६२ ॥

शालगुणाः ।

असनः कफपित्तघ्नः कदरो दन्तदार्ढ्यकृत् ॥ ६३ ॥

विजयसार–कफ और पित्तको नष्ट करता है, सफेद खैर–दांतोंको दृढ करता है ॥ ६३ ॥

निंबवृक्षगुणाः ।

निम्बः पित्तकफच्छर्दिव्रणहृत् वातकुष्ठनुत् ॥ ६४ ॥

नीम–पित्त, कफ, छर्दि, व्रग, इनको हरने वाला है । तथा वायु और कुष्ठको नष्ट करता है निम्ब नामसे प्रसिद्ध है ॥ ६४ ॥

महानिम्बगुणाः ।

महानिम्बः परं ग्राही कषायोम्लश्च शीतलः ॥६५॥

महानिम्ब-मलको बांधता है, कषैला है, खट्टा है और शीतल है डेक तथा बकायन इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ६५ ॥

भूनिम्बगुणाः ।

भूनिम्बो वातलो रूक्षः कफपित्तज्वरापहः ॥ ६६ ॥

चिरायता-वायुको करता है, रूखा है, कफ पित्त तथा ज्वर इनको नष्ट करता है, इसको भूनिम्ब, किरात भी कहते हैं ॥ ६६ ॥

पर्पटगुणाः ।

पर्पटो पित्तहृद्दाहज्वरजित्कफशोषणः ॥ ६७ ॥

पर्पट-पित्तको हरता है दाह तथा ज्वरको जीतता है और कफको सुखाता है । पापडा, पित्तपापडा स्याहतरा इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ६७ ॥

पाठागुणाः ।

पाठातिसारशमनी लघ्वी दोषत्रयापहा ॥ ६८ ॥

पाठा-अतीसारको नष्ट करती है हलकी है त्रिदोषको नष्ट करती है । इसकी लता होती है पाढ पहाडवेल बटौवा इन नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ६८ ॥

कुटजगुणाः ।

कुटजः कफपितास्रत्वग्दोषार्शोऽतिसारजित् ॥६९॥

कुटज-कफ, रक्तपित्त, त्वचाके दोष तथा बवासीर और अतीसारको नष्ट करती है । इसको कुडा तथा कोयड भी कहते हैं, इसकी फलियोंमेंसे इन्द्रजव निकलते हैं ॥ ६९ ॥

इन्द्रयवगुणाः ।

तद्बीजं ज्वरजित्तिक्तं रक्तपित्तातिसारजित् ॥ ७० ॥

इन्द्रजव-ज्वरको जीतते हैं कडुवे हैं रक्तपित्त तथा अतीसारको नष्ट करते हैं ॥ ७० ॥

ह्रीबेरगुणाः।

ह्रीबेरं छर्दिहृल्लासतृष्णातीसारनाशनम् ॥ ७१ ॥

ह्रीबेर–छर्दि, हृल्लास, प्यास, तथा अतीसारको नष्ट करता है इसीको सुगन्ध वाला भी कहते हैं॥ ७१ ॥

मुस्तकगुणाः।

मुस्तकं तिक्तकटुकं वातघ्नं ग्राहि दीपनम् ॥ ७२ ॥

नागरमोथा–कडुवा है, चरपरा है, वायुको नष्ट करता है, ग्राही है तथा दीपन है। डीलावास विशेषकी जडको नागरमोथा कहते हैं॥ ७२ ॥

अतिविषगुणाः।

पाचन्यतिविषा तिक्ता ग्राहिणी दोषनाशिनी॥७३॥

अतीस–पाचक है, तिक्त है ग्राही (काबिज) है, तीनोंदोषोंको नाश करती है अतिविष और अतीस नामसे प्रसिद्ध है॥ ७३ ॥

आर्द्रकगुणाः।

शृंगवेरोऽनिलश्वासकासहिक्काज्वरापहः ॥ ७४ ॥

अदरख–वायु श्वास, कास, हिक्का तथा ज्वरको नाश करती है॥ ७४ ॥

कट्फलगुणाः।

कट्फलं कफरोगघ्नं श्वासकासज्वरापहम् ॥ ७५ ॥

कायफल–कफरोगोंको नाश करता है श्वास, कास, तथा ज्वरको नाश करता है इसके वृक्ष बवाट राजधानीमें अधिक होते हैं जेठके महीनेमें इनमें फल भी लगते हैं फल खटमिठे सुस्वादु होते हैं इसके वृक्षके छिलकेकी नास सिरको विरेचन करती है॥ ७५ ॥

कुष्ठगुणाः।

कुष्ठं वातकफश्वासकासहिक्काज्वरापहम् ॥ ७६ ॥

कूठ–वात, कफ, श्वास, कास, हिचकी तथा ज्वरको नाश करता है मीठा और कडुवा इन दो भेदोंसे प्रसिद्ध है इसमें कडुवा विषके समान है। कूट और कुठ इन नामोंसे प्रसिद्ध है॥ ७६ ॥

शोभाञ्जनगुणाः ।

शोभाञ्जनः कटुस्तिक्तः कफविद्रधिगुल्मनुत् ॥७७॥

शोभाञ्जन–कडुवा है तीखा है, कफ, विद्रधि, तथा गुल्मको नाश करता है सहंजना सोहांजना शिग्रु आदि नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ७७ ॥

यासगुणाः ।

यासो सरो ज्वरच्छर्दिश्लेष्मपित्तविसर्पजित् ॥७८॥

जवासा–दस्तावर है, ज्वर, छर्दि, कफ, तथा विसर्पको जीतने वाला है ॥७८॥

कटुकागुणाः ।

कटुका तु सरा रूक्षा कफपित्तज्वरापहा ॥ ७९ ॥

कुटकी–दस्तावर है, रूखी है, कफ, पित्त तथा ज्वरको नाश करती है ॥७९॥

रास्नात्रायन्तीकयोर्गुणाः ।

रास्ना शोथामवातघ्नी त्रायन्ती कफवातनुत् ॥८०॥

रास्ना–शोथ तथा आमवातको नाश करती है त्रायमाण–कफ तथा वातको नाश करता है बहुत लोग त्रायमाणकी जगह बनफसा डालते हैं ॥ ८० ॥

वरुणवृक्षगुणाः ।

वरुणोऽनिलशूलघ्नो भेदी चोष्णाश्मरीहरः ॥८१॥

वरुण–वात, तथा शूलको नाश करता है दस्तावर है उष्ण है तथा पथरीको दूर करता है इसमें बिल्वके समान पत्ते होते हैं। फल भी गोल होते हैं इसके वृक्षको वरना तथा वरुणवृक्ष कहते हैं ॥ ८१ ॥

पारिभद्रगुणाः ।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेहकृमीन् जयेत् ॥८२॥

पारिभद्र–वात, कफ, शोथ, प्रमेह तथा कृमिनाशक है इसको फरहद भी कहते हैं इसमें ढाकके समान तीन २ पत्ते लगते हैं फूल लाल रंगके होते हैं और फलियां लगती हैं ॥ ८२ ॥

वासकगुणाः ।

वासकः कासवैस्वर्य्यरक्तपित्तकफापहः ॥ ८३ ॥

बांसा—कास, स्वरभङ्ग, रक्तपित्त तथा कफको नाश करता है बाँसा, अडूसा, विसौंटा वृष, वसूटी आदि नामोंसे सर्वत्र प्रसिद्ध है ॥ ८३ ॥

गुडूचीगुणाः ।

**गुडूची ग्राहिणी बल्या त्रिदोषघ्नी रसायनी ।
दीपनी ज्वरतृट्छर्दिकामलावातपित्तनुत् ॥ ८४ ॥**

गुडूची—ग्राही है, बलकारक है, त्रिदोष नाशक है रसायन है अग्निको दीपन करती है, ज्वर, प्यास, वमन, कामला, वात तथा पित्तको नाश करती है गिलोय तथा अमृता, गुरुच आदि नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ८४ ॥

पिप्पलीमूलगुणाः ।

भेदनं पिप्पलीमूलं दीपनं कफनाशनम् ॥ ८५ ॥

पीपरामूल—दस्तावर है, दीपन है, तथा कफको नाश करने वाला है ॥ ८५ ॥

चविकागजपिप्पलीगुणाः ।

चविकागजपिप्पल्यौ पिप्पलीमूलवत्स्मृते ॥ ८६ ॥

चव्य तथा गजपीपलके गुण—पीपलामूलके ही समान कहे हैं ॥ ८६ ॥

चित्रकगुणाः ।

चित्रकोऽग्निसमः पाके शोथार्शःकृमिकुष्ठहा ॥८७॥

चित्रक—पचनेमें अग्निके समान है और सूजन, अर्स कृमि, तथा कुष्ठ, इनको नष्ट करता है ॥ ८७ ॥

दन्तीगुणाः ।

दन्ती साष्ठीलिकाध्मानगुल्मोदरहरा सरा ॥ ८८ ॥

दंती—अष्ठीला, आध्मान, गुल्म, तथा उदररोगको नष्ट करती है और दस्तावर है । जमालगोटेकी जडको दंती कहते हैं ॥ ८८ ॥

स्नुहीक्षीरगुणाः ।

दूषीविषोदरप्लीहगुल्मकुष्ठप्रमेहनुत् ।
बहुदोषे प्रयोक्तव्यं वह्नितुल्यं सुधापयः ॥ ८९ ॥

थोहरका दूध-दूषीविष, उदररोग, प्लीहा, गुल्म, कुष्ठ, प्रमेह इन सबको नष्ट करता है बढेहुए दोषोंमें इसका प्रयोग कियाहुवा अग्निके समान, गुण करता है । यह जमालगोटेके समान तीक्ष्ण विरेचक है ॥ ८९ ॥

अर्कवृक्षगुणाः ।

अर्कः कृमिहरस्तीक्ष्णः सरोर्शःकफदोषजित् ॥९०॥

आक-कृमियोंको हरता है, तीक्ष्ण है, दस्तावर है, तथा बवासीर और कफके दोषको नष्ट करता है ॥ ९० ॥

अर्कक्षीरगुणाः ।

तत्पयः कृमिदोषघ्नं हितं कुष्ठोदरार्शजित् ॥ ९१ ॥

आकका दूध कृमियोंके रोगको नष्ट करता है और हित है तथा कुष्ठ उदर-रोग और बवासीरको जीतता है ॥ ९१ ॥

जयपालगुणाः ।

कानकं कफनुत्क्लेदि तीक्ष्णमुष्णं विरेचनम् ॥९२॥

जमालगोटा-कफको नष्ट करता है क्लेदकारक है, तीक्ष्ण विरेचन करता है यह जैपाल अजेपाल जयपाल इन नामोंसे प्रसिद्ध है । एक पहाडी जमालगोटा होता है वह इससे तीक्ष्णतामें न्यून है और बुलबुला नामसे प्रसिद्ध है ॥ ९२ ॥

धत्तूरगुणाः ।

धत्तूरो मदमूर्छाकृत् कफघ्नो वह्निपित्तकृत् ॥ ९३ ॥

धतूरा-मद तथा मूर्च्छाको करने वाला है और कफको नष्ट करता है, अग्नि तथा पित्तको बढाता है अनुचित रीतिसे उपयोग किया हुवा मृत्यु कारक है ॥९३॥

भल्लातकगुणाः ।

भल्लातकं फलं स्निग्धं कृमिदुर्नामनाशनम् ।
दन्तस्थैर्य्यकरं ग्राहि कषायं मधुरं च तत् ॥ ९४ ॥

भिलावा—चिकना है कृमियोंको नष्ट करता है, बवासीरको हरता है दांतोंको स्थिर करता है ग्राही है कषैला है मीठा है ॥ ९४ ॥

भल्लातवृन्तं मधुरं कषायं वातकोपनम् ।
विष्टम्भि दुर्ज्जरं शीतं रक्तपित्तप्रदूषणम् ॥ ९५ ॥

भिलावेकी डण्डी—मीठी है, कषैली है, वायुको कुपित करती है, शीतल है, और रक्तपित्तको दूषित करती है । भिलावेका उपयोग अनुचित रीतिसे किया हुवा विषकी समान अनेक विकारोंको करता है ॥ ९५ ॥

गुग्गुलुसाधारणगुणाः ।

गुग्गुलो दीपनस्तिक्तः सकषायो रसायनः ।
कटुमेदोनिलश्लेष्मकुष्ठघ्नः स्रंसनो लघुः ॥ ९६ ॥
सुस्वादुः पीडकाघ्नश्च सोष्णश्च स्पर्शशीतलः ।
वर्ण्यः स्वर्य्यः कटुः पाके रूक्षस्तीक्ष्णोग्निदीपनः ९७
क्लेदमेहोपचीग्रन्थिशोथक्रिमिविनाशनः ।
स्निग्धः काञ्चनसंकाशः पक्वजम्बूफलोपमः ॥९८॥

गुग्गुल—दीपन है, कडुई है, कषैली है, रसायन है, चरपरी है और मेदरोग वातरोग कफरोग तथा कुष्ठ इनको नष्ट करती है और दोषोंको निकालती है, तथा हलकी है स्वादु है, पिडिकाओंको नष्ट करती है उष्णवीर्य्य है स्पर्शमें शीतल है वर्णकारक है स्वरको उत्तम करती है, पाकमें चरपरी है, रूक्ष है, तीक्ष्ण है,

अग्निको दीपन करती है, और क्लेद, प्रमेह, अपची ग्रन्थी, शोथ, कृमि, इनको नष्ट करती है। और चिकनी है, सुवर्णके समान कांतिवाली है तथा पकीहुई जामुनके समान होती है ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

नूतनगुग्गुलुगुणाः ।

नूतनो गुग्गुलुः प्रोक्तः सुगन्धिश्चापि पिच्छिलः॥९९॥

नवीन गुग्गुल-सुगन्धित तथा पिच्छिल कही है ॥ ९९ ॥

पुराणगुग्गुलुगुणाः ।

पुराणः शुष्को दुर्गन्धो मलानां नापकर्षकः ॥१००॥

पुरानी गुग्गुल-सूखी दुर्गंधियुक्त तथा मलोंको साफ नहीं करती ॥ १०० ॥

रक्तत्रिवृतागुणाः ।

अरुणा त्रिवृता स्वादुः कषाया मृदुरेचनी ।
रूक्षा च कटुका चैव पाके तिक्ता कफापहा॥१०१॥

लालनिसोथ-स्वादु है कषैला है, मृदुरेचन करता है रूखा है पचनेमें चरपरा है और कफको नष्ट करता है ॥ १०१ ॥

श्वेतत्रिवृतागुणाः ।

तस्याश्चाल्पान्तरगुणा विज्ञेया त्रिवृता सिता ।
ज्वरहृद्रोगवातासृगुदावर्त्तादिरोगनुत् ॥ १०२ ॥

सफेद निशोथ-लाल निशोथसे गुणोंमें न्यून है तथा ज्वर हृदयरोग वातरक्त उदावर्त्त आदि रोगोंको नष्ट करता है निसोत प्रायः दखणी और पहाडी दो नामोंसे मिलता है। दखणी निसोत उत्तम होता है ॥ १०२ ॥

राजवृक्षगुणाः ।

राजवृक्षोऽधिकः पथ्यो मृदुर्मधुरशीतलः ॥ १०३ ॥

अमलतास-उत्तम है पथ्य है नरमहै मीठा है और शीतल है इसके वृक्ष कहीं २ बगीचोंमें होते हैं और कालकाके पहाड पर जगह २ स्वयं उत्पन्न हैं बल्कि

लोग इसकी लकडियांभी फूकते हैं इसमें पीले फूलोंका एक बडा गुच्छा लगता है इसमें लंबी २ लकडियेंसी फलियें लगती हैं । इसको गुल लकडी, अमलतास, राजवृक्ष, किरमाला, आरग्वध, सम्पाक भी कहते हैं ॥ १०३ ॥

राजवृक्षफलगुणाः ।

तत्फलं मधुरं वृष्यं वातपित्तहरं सरम् ॥ १०४ ॥

अमलतासकी फली—मीठी है, वीर्य्यवर्द्धक है, वात, पित्तको हरती है, तथा दस्तावर है ॥ १०४ ॥

रोहितवृक्षगुणाः ।

रोहीतको यकृत्प्लीहगुल्मोदरहरः सरः ॥ १०५ ॥

रोहितवृक्ष—यकृत् (जिगर) और प्लीहा (तिल्ली) के विकारोंको गुल्मरोगको तथा उदररोगको नष्ट करता है तथा दस्तावर है इस वृक्षमें लाल अथवा सफेद फूल होते हैं कोई निघंटुकार कूटशाल्मलीमेंही इसको शामिल करते हैं परन्तु भावमिश्रने इसको अलग माना है इसको रोहेडा कहते हैं ॥ १०५ ॥

वृद्धदारगुणाः ।

रसायनो वृद्धदारः शोथामवातरोगजित् ॥ १०६ ॥

वृद्धदारुक—रसायन है और शोथ तथा आमवात व्याधिको नष्ट करता है । इसको विधायरा, विधारा वृद्धदारु, भी कहते हैं इसकी बडी २ वेलें होती हैं । पत्र कुछ २ पीपलके पत्रोंके समान होते हैं अत्यन्त नम्र कुछ २ रूखे, और नीचेसे सफेद होते हैं पहाडी लोग इसको वुढलकी बेल कहते हैं ॥ १०६ ॥

अपामार्गगुणाः ।

अपामार्गोऽग्निवत्तीक्ष्णः क्लेदनः स्रंसनः परः १०७

अपामार्ग—अग्निके समान तीक्ष्ण है क्लेदजनक है स्रंसन (दस्तावर) है इसको चिरचिरा, लटजीरा पुठखण्डा, वागा, आधाझारा, भी कहते हैं प्रायः सब जगह होता है ॥ १०७ ॥

सिन्धुवारगुणाः ।

सिन्धुवारो विषश्लेष्मकुष्ठव्रणविषापहः ॥ १०८ ॥

संभालू-विष, कफ, कुष्ठ, व्रण जंतुविष, इन सबको दूर करता है इसको निर्गुण्डी, और सिन्दुवार भी कहते हैं ॥ १०८ ॥

तुलसीगुणाः ।

तुलसी पित्तकृद्वातकृमिदौर्गन्ध्यनाशिनी ।
पार्श्वशूलारतिश्वासकासहिक्काविकारजित् ॥ १०९॥

तुलसी-पित्तको करती है, कृमि, दुर्गन्धि और पार्श्वशूलको नष्ट करती है तथा अरति, श्वास, खांसी, और हिचकी इनको दूर करती है ॥ १०९ ॥

मूर्वागुणाः ।

मूर्वा तु बृंहणी बल्या कफवातामयाञ्जयेत्। ११०॥

मूर्वा-बाजीकर्त्ता है, बलवर्द्धक है, कफ तथा वायुके रोगोंको नष्ट करता है आजकल लोग मरोडफलीकोही मूर्वा कहते हैं । तथा इसको चुनहार भी कहते हैं ॥ ११० ॥

वंशलोचनगुणाः ।

कषाया मधुरा रूक्षा वातघ्नी वंशलोचना ॥ १११ ॥

वंसलोचन-कषैला है, मीठा है, रूखा है, तथा वातको नष्ट करता है (ज्वर, खांसी, हृद्रोगको हरता है तथा बलवर्द्धक है) इसको तुगाक्षीरी, तवाषीर भी कहते हैं यह बांसमेंसे निकलता है ॥ १११ ॥

स्वर्णक्षीरीगुणाः ।

स्वर्णक्षीरी क्षयश्वासकासघ्नी मधुरा हिमा ॥ ११२ ॥

स्वर्णक्षीरी-क्षय, श्वास, खांसी, (कुष्ठ, रक्तविकार) इनको नष्ट करती है तथा मधुर और शीतल है इसके ऊँचे दर्जेके क्षुप होते हैं पत्रोंमें और फलोंमें सब

जगह कांटे होते हैं फूल पीले होते हैं फल सूखनेपर कींगरेदार बहुत छोटा गिलासके आकारका होजाता है उसमेंसे सरसोंके समान काले रंगके दाने निकलते हैं छोटे २ लडके इसको बारूद या दारु कहकर खेला करते हैं इसको सत्यानासी और पीले दूधकी कटहली भी कहते हैं इसीकी जडको चोक कहते हैं ॥ ११२ ॥

हेमन्तशिशिरकृत्यम् ।

शीते शीतानिलस्पर्शसंरुद्धो बलिनां बली ।
पक्ता भवति हेमन्ते मात्राद्रव्यगुरुक्षमः ॥ ११३ ॥
स यदा नेन्धनं युक्तं लभते देहजं तथा ।
रसं निहन्त्यतो वायुः शीतः शीते प्रकुप्यति॥ ११४॥
तस्मात्तुषारसमये स्निग्धाम्ललवणान् रसान् ।
औदकानूपमांसानां मेध्यानामुपयोजयेत् ॥ ११५॥
बिलेशयानां मांसानि प्रहसानां भृतानि च ।
भक्षयेन्मदिरां सीधुं मधु चापि पिबेन्नरः ॥ ११६ ॥
गोरसानिक्षुविकृतीर्वसां तैलं नवौदनम् ।
हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णञ्चायुर्न हीयते ॥ ११७ ॥
अभ्यङ्गोत्सादनं मूर्ध्नि तैलं जेन्ताकमातपम् ।
भजेद्भूमिगृहं चोष्णमुष्णं गर्भगृहं तथा ॥ ११८ ॥
शीते सुसंवृतं सेव्यं यानं शयनमासनम् ।
प्रावाराजिनकौशेयप्रवेणीकुथकास्तृतम् ॥ ११९ ॥
गुरूष्णवासा दिग्धाङ्गो गुरुणाऽगुरुणा सदा ।

शयने प्रमदां पीनां विशालोत्थितसुस्तनीम् ॥ १२० ॥
आलिङ्ग्यागुरुदिग्धाङ्गीं सुप्यात् समदमन्मथः ।
प्रकामं च निषेवेत मैथुनं शिशिरागमे ॥ १२१ ॥

हेमंत ऋतुमें शीतल पवनके स्पर्शसे अग्नि—शरीरके अन्दर रुकी रहती है, इसीलिये बलवान मनुष्योंकी अग्नि बलवान् होकर हेमन्तकालमें अधिक गुरु बस्तुओंके पचानेकी सामर्थ्यवाली होजाती है । यदि उस समय पाचन करनेके लिये यथोचित पदार्थ न मिले तो वह अग्नि शरीरके रसरक्तादिकोंको दहन करती है इसीसे शीतताको प्राप्तहुई वायु शीतकालमें कुपित होती है ॥ ११३ ॥ ॥ ११४ ॥ इस कारण इस ऋतुमें—चिकनाई, अम्लरस, तथा नमकीन रस और मछलियें अनूप देशके मांस घृत आदिक मेध्य और उत्तम पदार्थोंका सेवन करे विलेशय तथा प्रसह जातिके जीवोंका मांस, मद्य, सीधु, मधु इनका सेवन करे ॥ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ गायका दूध दही मक्खन घी आदि तथा इक्षु आदि विकार अर्थात् राब गुड खांड मिश्री आदिसे बनेहुए उत्तम पक्वान्न मिठाई आदिके गर्म बशा, तेल, नये चावल आदिका अभ्यास करना चाहिए इस ऋतुमें उष्ण जलसे स्नान करने अथवा पान करनेसे आयु स्थिर रहती है ॥ ११७ ॥ देहमें तेलकी मालिश करना, उबटन लगाना, मस्तकमें तेल लगाना, स्वेदजनक पदार्थ तथा घामका सेवन, भूमिमें बनेहुए उष्ण मकानोंमें, तथा मकानोंके मध्यभागके गर्म कमरेमें निवास करना उत्तम है ॥ ११८ ॥ शीत कालमें अच्छीतरहसे गर्मवस्त्रोंसे आच्छादित किये रथ, बग्घी, पीनस, आदि तथा उत्तम शय्या सुन्दर आसन उत्तम मृगचर्म, कोशा अथवा रेसमके बने हुए वस्त्र, दुशाला, कथरी आदिका सेवन करना चाहिये ॥ ११९ ॥ भारी और गरम वस्त्रोंसे अंगोंको ढकरखना चाहिये अगर, चन्दन, केशर आदि सुगन्धित पदार्थोंका सघन लेप करे अगर, चंदन, केशर आदि सुगन्धित पदार्थोंसे अंगलेप कियेहुए पुष्ट, कठोर, विशाल, उठेहुए शोभायमान, स्तनोंवाली, सुंदर स्त्रीसे लिपटकर शय्यामें सोना चाहिये और शिशिर ऋतुमें कामी पुरुष इच्छापूर्वक स्त्रीसेवन करे ॥ १२० ॥ १२१ ॥

वर्जयेदन्नपानानि लघूनि शीतलानि च ।
प्रवातं प्रमिताहारमुदमन्थं हिमागमे ॥ १२२ ॥
हेमन्ते शिशिरे तुल्ये शिशिरेऽल्पं विशेषणम् ।
रौक्ष्यमादानजं शीतं मेघमारुतवर्षजम् ॥ १२३ ॥
तस्माद्धैमन्तिकः सर्वः शिशिरे विधिरिष्यते ।
निवातमुष्णन्त्वधिकं शिशिरे गृहमाश्रयेत् ॥ १२४ ॥
कटुतिक्तकषायाणि वातलानि लघूनि च ।
वर्जयेदन्नपानानि शिशिरे शीतलानि च ॥ १२५ ॥

शीतकालमें—हलके तथा शीतल अन्न और पान करना प्रबल वायुका सेवन, भूख रखकर भोजन करना भूख रखकर और पानीमें घोले हुवे सरबत सत्तू आदि पदार्थोंका सेवन करना वर्जित है ॥ १२२ ॥ हेमन्त और शिशिर ऋतु एकही समान होती हैं शिशिर ऋतुमें हेमन्तसे किञ्चित्‌ही विशेषता होती है इस ऋतुमें रूक्षता, तथा गर्म्मी आकर्षित होनेसे तथा मेघ वायु वर्षा इनके प्रभावसे बढाहुवा शीत होता है इस लिये हेमन्त ऋतुमें कहे हुए उष्ण स्निग्ध पदार्थोंका तथा उष्ण वस्त्रों आदिका सेवन शिशिरमेंभी करना चाहिये जिस स्थानमें अधिक वायु न आती हो अंगीठी आदिसे युक्त हो ऐसे गरम मकानमें रहना चाहिये ॥ १२३ ॥ ॥ १२४ ॥ शिशिर ऋतुमें चरपरे, कडुवे, कषैले, वायुके उत्पन्न करनेवाले, हलके, तथा शीतल अन्न पानादिक सेवन न करने चाहिये ॥ १२५ ॥

वसन्तकृत्यम् ।

हेमन्ते निचितः श्लेष्मा दिनकृद्भाभिरीरितः ।
कायाग्निं बाधते रोगांस्ततः प्रकुरुते बहून् ॥ १२६ ॥
तस्माद्वसन्ते कर्म्माणि वमनादीनि कारयेत् ।

गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवा स्वप्नं च वर्जयेत्॥१२७॥
व्यायामोद्वर्तनं धूमं कवलग्रहमञ्जनम् ।
सुखाम्बुना शौचविधिं शीलयेत्कुसुमागमे ॥१२८॥
चन्दनागुरुदिग्धांगो यवगोधूमभोजनम् ।
शारभं शाशमैणेयं मांसं लावकपिञ्जलम् ॥ १२९ ॥
भक्षयेन्निगदं सीधुं पिबन्माध्वीकमेव वा ।
वसन्तेऽनुभवेत्स्त्रीणां काननानां च यौवनम्॥१३०॥

हेमन्त ऋतुमें सञ्चित् हुवा कफ-वसंत ऋतुमें सूर्य्यकी किरणोंसे प्रेरित या तपायमान् होकर शरीर तथा अग्निको वाधा करता हुवा अनेक रोगोंको उत्पन्न करता है । इसलिए वसन्त ऋतुमें वमन विरेचनादि कर्म द्वारा दूषित दोष तथा संचित कफको निकाल देना चाहिये तथा भारी खट्टे चिकने, मीठे पदार्थोंका सेवन और दिनका सोना वर्ज देना चाहिये । व्यायाम उबटना, कटु द्रव्यके संयोगसे कुल्ले करना तथा अञ्जन डालना और किञ्चित् उष्ण जलसे स्नान करना चाहिये चन्दन अगर इनका लेपन करना चाहिये । यव और गेहूँका भोजन करना उचित है । शरभ, शशा, हिरण, लवा, कपिञ्जल इनका सेवन करे । और माध्वीक अथवा सीधु नामक मद्यका सेवन करे । वसन्त ऋतुमें उत्तम बन तथा स्त्रियोंके यौवनका अनुभव करे ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥

ग्रीष्मकृत्यम् ।

मयूखैर्जगतः सारं ग्रीष्मे पेपीयते रविः ।
स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धमन्नपानं तदा हितम्॥१३१॥
शीतं सशर्करं मन्थं जांगला मृगपक्षिणः ।
घृतं पयः सशाल्यन्नं भजन् ग्रीष्मे न सीदति ॥१३२॥

मद्यश्चाल्पं न वा पेयमथवा सुबहूदकम् ।
लवणाम्लकटूष्णानि व्यायामं चात्रवर्जयेत् ॥१३३॥
दिवा शीतगृहे निद्रा निशि चन्द्रांशुशीतले ।
भजेच्चन्दनदिग्धांगः प्रवाते हर्म्यमस्तके ॥ १३४ ॥
व्यजनैः पाणिसंस्पर्शैश्चन्दनोदकशीतलैः ।
सेव्यमानो भजेतास्तां मुक्तामणिविभूषितः ॥१३५॥
काननानि च शीतानि जलानि कुसुमानि च ।
ग्रीष्मकाले निषेवेत मैथुनाद्विरतो नरः ॥ १३६ ॥

ग्रीष्म ऋतुमें सूर्य्यभगवान् अपनी किरणोंसे पृथ्वीके सारको पी जाते हैं अर्थात् चिकनाईको आकर्षण करलेते हैं उस समय स्वादु, शीतल, पतले, चिकने अन्न, पान, आदिका सेवन करना उचित है मिश्री मिले शीतल मन्थ तथा जांगलोद्भव मृग, पक्षी, घी, दूध, शालिअन्न इनका सेवन करनेसे ग्रीष्म ऋतुमें मनुष्य प्रसन्न रहता है। इस ऋतुमें मद्यका पीना उचित नहीं यदि पिये भी तो थोडीसी मद्य बहुतसा जल मिलाकर पीवे। नमकीन, खट्टे, चरपरे, गरम, पदार्थोंका तथा व्यायामका सेवन न करे। दिनमें शीतल घरमें और रात्रिको चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल हुवे मकानके ऊपर चन्दन आदिका अङ्गोंमें लेपकर पवनयुक्त स्थानमें शयन करे चन्दन, खस, शीतल सुगन्धित जलसे भीगेहुवे पंखेकी पवन तथा दासदासियोंके हाथोंसे सुगन्धित शीतल जल आदिका सेवन करे और मणी, मुक्ता आदिकी मालासे विभूषित हुवा उत्तम बगीचे शीतल जल सुगन्धित पुष्प इनका सेवन करे परन्तु मैथुन न करे और करे भी तो पन्द्रह दिन अथवा महीनेके बाद करे अथवा मैथुनके अनंतर शीतल सुगन्धित पवन पुष्पादि कोंका सेवन करे ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥

वर्षाकृत्यम् ।

आदानदुर्बले देहे पक्ता भवति दुर्बलः ।
स वर्षास्वनिलादीनां दूषणैर्बाध्यते पुनः ॥ १३७ ॥
भूबाष्पान्मेघनिष्यन्दात्पाकादम्लाज्जलस्य च ।
वर्षास्वग्निबले क्षीणे कुप्यन्ति पवनादयः ॥ १३८ ॥
तस्मात्साधारणः सर्वो विधिर्वर्षासु चेष्यते ।
उदमन्थं दिवा स्वप्नमवश्यायं नदीजलम् ॥ १३९ ॥
व्यायाममातपं चैव व्यवायं चात्र वर्जयेत् ।
पानभोजनसंस्कारात् प्रायःक्षौद्रान्वितान् हितान् १४०
व्यक्ताम्ललवणस्नेहं वातवर्षाकुलेऽहति ।
विशेषशीते भोक्तव्यं वर्षास्वनिलशान्तये ॥ १४१ ॥
अग्नि संरक्षणवता यवगोधूमशालयः ।
पुराणजांगलैर्मांसैर्भोज्या यूषैश्च संस्कृतैः ॥ १४२ ॥
पिबेत् क्षौद्रान्वितं चाल्पं माध्वीकारिष्टमम्बु वा ।
माहेन्द्रतप्तशीतं वा कौपं सारसमेव वा ॥ १४३ ॥
प्रघर्षोद्वर्तनस्नानगन्धमाल्यपरो भवेत् ।
लघुशुद्धाम्बरं स्थानं भजेदक्लेदि वार्षिकम् ॥ १४४ ॥

ग्रीष्म कालमें सूर्यकी किरणों द्वारा पृथ्वीकी चिकनाई आकर्षित होनेसे मनुष्योंकी अग्नि दुर्बल होजाती है फिर वह वर्षाकालमें वायुआदिकोंके दूषणोंसे और भी दूषित होजाती है। पृथ्वीकी वाष्पसे, मेघके निष्यन्दसे, जलके अम्ल-पाकसे अग्निका बल क्षीण होकर वर्षा ऋतुमें दोष कुपित होते हैं इसलिये वर्षा

ऋतुमें दोष कुपित होते हैं इस लिये वर्षा ऋतुमें साधारणविधिका सेवन करना चाहिये । जलयुक्त मन्थ, दिनमें सोना, ओस, और नदीका जल, कसरत, धूप, स्त्रीसंग इन सबका बर्जन करना चाहिये भोजन और पीनेके पदार्थ प्रायः बहुत हलके और मधुयुक्त सेवन करना उचित है इस मौसममें पवनके चलनेसे वर्षाके वरसनेसे जब अधिक शीत होताहै उस समय प्रगटरसवाले खट्टे नमकीन चिकने पदार्थोंका वायुकी शान्तिके लिये सेवन करे । और जो गेहूं शालिचावल जाङ्गलोद्भव मांस तथा उत्तम यूष इनका सेवन करे और माध्वीक या अरिष्ट इनको मधुयुक्त कर थोडा पीवे आकाशके जलको तथा गरम करके शीतल किये हुएको कूप तथा सरके जलको पीवे । तैल आदिसे मालिस करना उबटन स्नान गंधमाला आदिको धारण करना हलके शुद्ध वस्त्र पहनना सूखे पवित्र स्थानमें रहना यह सब वर्षाऋतुमें हित हैं ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥

शरत्कृत्यम् ।

वर्षाशीतोचिताङ्गानां सहसैवार्करश्मिभिः ।
तप्तानामाचितं पित्तं प्रायः शरदि कुप्यति ॥ १४५ ॥
तत्रान्नपानं मधुरं लघु शीतं सतिक्तकम् ।
पित्तप्रशमनं सेव्यं मात्रया सुप्रकांक्षितैः ॥ १४६ ॥
लावान् कपिञ्जलानेणानुरभ्रान् शरभान् शशान् ।
शालीन् सयवगोधूमान् सेव्यानाहुर्घनात्यये १४७ ॥
तिक्तस्य सर्पिषः पानं विरेको रक्तमोक्षणम् ।
धाराधरात्यये कार्य्यमातपस्य च वर्ज्जनम् ॥ १४८ ॥
वसां तैलमवश्यायमौदकानूपमामिषम् ।
क्षारं दधि दिवा स्वप्नं प्राग्वातं चात्र वर्जयेत् १४९

दिवा सूर्य्यांशुसन्तप्तं निशि चन्द्रांशुशीतलम् ।
कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम् ॥१५०॥
हंसोदकमिति ख्यातं शारदं विमलं जलम् ।
स्नानपानावगाहेषु शस्यते तद्यथामृतम् ॥ १५१ ॥
शारदानि च माल्यानि वासांसि विमलानि च ।
शरत्काले प्रशस्यन्ते प्रदोषे चेन्दुरश्मयः ॥१५२॥

वर्षाऋतुमें संचित हुवा पित्त सूर्य्यकी किरणोंसे तृप्त होकर प्रायः शरद ऋतुमें कुपित होता है इसलिये अपने कल्याणकी इच्छावाले मनुष्योंको मीठे हलके शीतल कडुवे, तिक्त पित्तको शमन करनेवाले अन्न पानोंका उचित मात्रासे सेवन करना चाहिये ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ लवा, किञ्जल्क, हिरन, शरभ, खरगोश शालिचावल, यव गेहूं, इनका सेवन करना शरद ऋतुमें हित है, तिक्त पदार्थोंका और घीका पान करना विरेचन करना रक्तका मोक्ष करना शरद ऋतुमें हित है और धूपका सेवन वर्ज देना चाहिये । बसा, तेल, ओस, तुषार, जलके तथा अनूपसंचारी जीव इनको वर्ज देना चाहिये ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ जो जल दिनमें सूर्य्यकी किरणोंसे तपायमान होता हो रात्रिको चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल होता हो और अगस्त्यके उदयसे निर्विष हुवा तथा समयसे परिपक्व हुवा दोष रहित होजाता है वह शरदऋतुका निर्मल जल, हंसोदक कहा जाता है । स्नान पान अवगाहन आदिमें यह जल अमृतके समान प्रशंसनीय होता है ॥ १५० ॥ १५१ ॥ शरद ऋतुमें सुगन्धित पुष्पोंकी माला निर्मल वस्त्र सायंकालकी चन्द्रमाकी किरणें सेवन करना उचित है ॥ १५२ ॥

षड्रसाङ्काब्जवर्षे वै मार्गे पूर्णे कलानिधौ ॥
राजवल्लभटीकेयं भाषादीपकनामिका ॥ १ ॥
कृता रामप्रसादेन क्षेमराजाय चार्पिता ॥
तद्युक्तोयं शुभो ग्रन्थो भिषगानन्दकृद्भवेत् ॥२॥

सोरठा ।

मार्ग पूर्णिमा श्वेत, संवत रस ऋतु अंक शशि ॥
भाषादीप समेत, नृपवल्लभ पूरित कियो ॥ १ ॥
तिलकित रामप्रसाद, खेमराज मुद्रित कियो ॥
लखि भाषा अनुवाद, लघुमति जानहिं द्रव्यगुण ॥ २ ॥

इति श्रीराजवल्लभनिघंटौ पटियालाराज्यान्तर्गतटकसालग्रामवास्तव्याऽऽयुर्वेदोद्धारक-वैद्यपञ्चाननपण्डितरामप्रसादवैद्योपाध्यायविरचितभाषादीपिका नामभाषा-टीकायामोषधिगुणवर्णनो नाम षष्ठः परिच्छेदः ॥ ६ ॥

॥ समाप्तश्चायं ग्रंथः ॥